बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन हेतु ऐतिहासिक पहल ...

शेखावाटी मिशन 100

2026

(कक्षा 12)

हिंदी साहित्य

विभिन्न विषयों की नवीनतम बुकलेट डाउनलोड करने हेतु टेलीग्राम QR CODE स्कैन करें

पढ़ेगा राजस्थान

बढ़ेगा राजस्थान

कार्यालय: संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा, चूरू संभाग, चूरू (राज.)

संयोजक कार्यालय – संयुक्त निदेशक कार्यालय, चूरू संभाग, चूरू

शेखावाटी मिशन - 100 मार्गदर्शक

संगीता मानवी

संयुक्त निदेशक (स्कूल शिक्षा)
चूरू संभाग, चूरू

महेन्द्र सिंह बड़सरा

संभागीय कॉर्डिनेटर, शेखावाटी मिशन 100
संयुक्त निदेशक कार्यालय, चूरू संभाग, चूरू

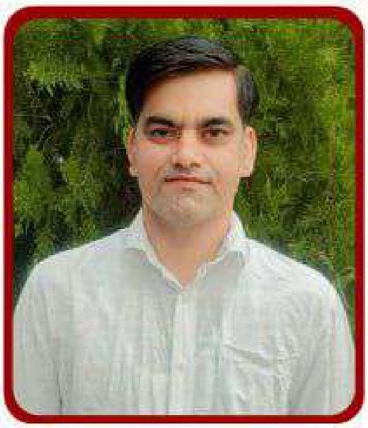

रामावतार भदाला

तकनीकी सहयोगी शेखावाटी मिशन 100

संकलनकर्ता टीम : हिन्दी साहित्य

नटवर लाल शर्मा
रा.उ.मा.वि. - रामजीपुरा, दांतारामगढ़ (सीकर)

इन्दिरा
शहीद शमशेर सिंह रा.उ.मा.वि. - रतनपुरा (चूरू)

सुनीता महला
परमवीर पीरू सिंह रा.उ.मा.वि.(झुंझुनू)

संपत कुमार
रा.उ.मा.वि. - किरोड़ी नोहरा, नवलगढ़,(झुंझुनू)

राजू वर्मा
रा.उ.मा.वि. - बांकोटी ब्लॉक खेतड़ी. (झुंझुनू)

सुरेंद्र सैनी
रा.उ.मा.वि. - जांटवाली नवलगढ़ (झुंझुनू)

कार्यालय: संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा, चूरू संभाग, चूरू (राज.)

प्रश्न–पत्र की योजना 2025–2026

कक्षा – 12th
विषय – हिन्दी साहित्य
अवधि – 3 घंटे 15 मिनिट   पूर्णांक– 80

1. उद्‌देश्य हेतु अंकभार–

क्र.स.	उद्‌देश्य	अंकभार	प्रतिशत
1.	ज्ञान	24	30
2.	अवबोध	24	30
3.	ज्ञानोपयोग	16	20
4.	कौशल	8	10
5.	विश्लेषण	8	10
	योग	80	100

2. प्रश्नों के प्रकार अनुसार अंकभार–

क्र.सं.	प्रश्नों का प्रकार	प्रश्नों की संख्या	अंक प्रतिप्रश्न	कुल अंक	प्रतिशत (अंको का)	प्रतिशत (प्रश्नों का)	संभावित समय
1.	बहुविकल्पात्मक	18	1	18	22.5	34.61	25
2.	रिक्तस्थान	06	1	06	7.5	11.54	10
3.	अतिलघुत्तरात्मक	12	1	12	15.0	23.08	40
4.	लघुत्तरात्मक	10	2	20	25	19.23	45
5.	दीर्घउत्तरीय	03	3	9	11.25	5.77	45
6.	निबंधात्मक	03	5	15	18.75	5.77	35
	योग	52		80	100	100	195 मिनट

विकल्प योजना : खण्ड 'स' एवं 'द' में हैं

3. विषय वस्तु का अंकभार–

क्र.सं.	विषय वस्तु	अंकभार	प्रतिशत
1	अपठित बोध	12	15
2	रचना	13	16.25
3	काव्याग परिचय	10	12.50
4	पाठ्यपुस्तक अन्तरा (भाग–2)	32	40.00
5	पाठ्यपुस्तक अन्तराल (भाग–2)	13	16.25
	योग	80	100

BSER

प्रश्न–पत्र ब्ल्यूप्रिन्ट 2025–2026

कक्षा: –12th | विषय :– हिन्दी साहित्य | समय:– 3 घंटे 15 मिनिट | पूर्णांक :– 80

क्र.सं.	उद्देश्य इकाई/उप इकाई	ज्ञान						अवबोध						ज्ञानोपयोग						कौशल						विश्लेषण						योग
		बहुविकल्पात्मक	रिक्तस्थान	अतिलघुत्तरात्मक	लघुत्तरात्मक	दीर्घउत्तरात्मक	निबन्धात्मक	बहुविकल्पात्मक	रिक्तस्थान	अतिलघुत्तरात्मक	लघुत्तरात्मक	दीर्घउत्तरात्मक	निबन्धात्मक	बहुविकल्पात्मक	रिक्तस्थान	अतिलघुत्तरात्मक	लघुत्तरात्मक	दीर्घउत्तरात्मक	निबन्धात्मक	बहुविकल्पात्मक	रिक्तस्थान	अतिलघुत्तरात्मक	लघुत्तरात्मक	दीर्घउत्तरात्मक	निबन्धात्मक	बहुविकल्पात्मक	रिक्तस्थान	अतिलघुत्तरात्मक	लघुत्तरात्मक	दीर्घउत्तरात्मक	निबन्धात्मक	
1	अपठित बोध							1(6)		1(6)																						12(12)
2	रचना	1(4)		1(4)																					4(1) *						1(-)*	13(9)
3	काव्यांग परिचय		1(6)	1(2)																									2(1)			10(9)
4	पाठ्यपुस्तक अन्तरा (भाग–2)	1(4)									2(3)							3(1) *	5(2) *				2(2)						2(1)	3(1)*		32(14)
5	पाठ्यपुस्तक अन्तराल (भाग–2)	1(4)									2(3)							3(1) *														13(8)
	योग	12(12)	6(6)	6(6)				6(6)		6(6)	12(6)							6(2)	10(2)				4(2)		4(1)				4(2)	3(1)	1(-)	80(52)
	सर्वयोग	24(24)						24(18)						16(4)						8(3)						8(3)						

विकल्पों की योजना :– खण्ड 'स' एवं 'द' में प्रत्येक में एक आंतरिक विकल्प है नोट:–कोष्ठक के बाहर की संख्या 'अंकों' की तथा अंदर की संख्या 'प्रश्नों' के द्योतक है।

विशेष :– उक्त ब्ल्यू प्रिन्ट मॉडल प्रश्न पत्र का है जो प्रश्नों के प्रकारों को समझने की सुविधा मात्र के लिए है। मूल प्रश्न पत्र का ब्ल्यू प्रिन्ट भिन्न हो सकता है।

BSER

बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन हेतु ऐतिहासिक पहल ...

शेखावाटी मिशन 100

2026

विभिन्न विषयों की नवीनतम बुकलेट PDF डाउनलोड करने हेतु टेलीग्राम QR CODE स्कैन करें

विभिन्न विषयों की नवीनतम बुकलेट
डाउनलोड करने हेतु टेलीग्राम
QR CODE स्कैन करें

पढ़ेगा राजस्थान
बढ़ेगा राजस्थान

कार्यालय: संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा, चूरू संभाग, चूरू (राज.)

SHEKHAWATI MISSION-100 : 2025-26

उच्च माध्यमिक परीक्षा, 2026

Senior Secondary Examination-2026

नमूना प्रश्न पत्र (Model Paper)

विषय – हिन्दी साहित्य (Sub: Hindi Literature) **कक्षा:12वीं (Class : 12th)**

समयः 03 घन्टे 15 मिनट **पूर्णांकः 80**

परीक्षार्थियों के लिये सामान्य निर्देशः–

1. सर्वप्रथम अपने प्रश्न पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें।
2. सभी प्रश्न हल करना अनिवार्य है।
3. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर पुस्तिका में लिखें।
4. जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड हैं। उनके उत्तर एक साथ लिखे ।
5. उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।

शेखावाटी मिशन–100

खण्ड–अ

प्र:1 निम्नलिखित बहुविकल्पात्मक प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तरपुस्तिका में लिखिए।

(i) हरगोबिन नामक संवदिया कौनसे गाँव का था ?

(अ) खगड़िया (ब) कटिहार (स) जलालगढ़ (द) कुसियार

(ii) "जहां कोई वापसी नहीं" पाठ लेखक के यात्रा वृतांत संग्रह से लिया गया है–

(अ) मालवा दर्शन (ब) धुंध से उठती धुन (स) हर बारिश में (द) चीड़ों पर चाँदनी

(iii) बनारस कविता के रचनाकार है–

(अ) केदारनाथ सिंह (ब) कुँवर नारायण (स) रघुवीर सहाय (द) अज्ञेय

(iv) आदिकाल और भक्तिकाल के संधिकवि कहे जाते हैं–

(अ) धनानन्द (ब) जायसी (स) विद्यापति (द) तुलसीदास

(v) "सूरदास की झोपड़ी" प्रेमचंद के किस उपन्यास का अंश है?

(अ) रंगभूमि (ब) सेवासदन (स) गोदान (द) गबन

(vi) "बिस्कोहर की माटी" नामक पाठ के आधार पर बताइए निम्न कारण से बिसनाथ पर अत्याचार हो गया–

(अ) उसे पढ़ने के लिए शहर जाना पड़ा (ब) उसका छोटा भाई आ गया

(स) उसे माता–पिता मारते थे (द) उपर्युक्त में से कोई नहीं

(vii) अपना मालवा खाऊ – उजाड़ू सभ्यता में खाऊ–उजाड़ू सभ्यता किसकी देन है

(अ) आस्ट्रेलिया (ब) भारत (स) चीन (द) यूरोप व अमेरिका

(viii) कविता कोने में घात लगाए बैठी है यह हमारे जीवन में किसी भी क्षण बसंत की तरह आ सकती है। कथन है–

(अ) प्रभाष जोशी (ब) जार्ज लुइस बोर्खेस (स) कृष्णा सोबती (द) निर्मल वर्मा

(ix) संवाददाताओं के बीच काम का विभाजन जब उनकी दिलचस्पी और ज्ञान को ध्यान में रखकर किया जाए तो, उसे मिडिया की भाषा में कहते है

(अ) बीट (ब) विशेष लेखन (स) डेस्क (द) उल्टा पिरामिड

(x) उल्टा पिरामिड शैली के मुख्य कितने भाग होते है

(अ) छः (ब) तीन (स) चार (द) दो

(xi) बिस्कोहर की माटी नामक पाठ कौनसी शैली में लिखा हुआ है।

(अ) विवराणात्मक शैली (ब) आत्मकथात्मक शैली

(स) व्याख्यात्मक शैली (द) विवेचनात्मक शैली

(xii) नाटक किस प्रकार का काव्य है –

(अ) श्रव्यकाव्य (ब) दृश्यकाव्य (स) श्रव्य व दृश्य काव्य (द) प्रबन्ध

प्र:2 रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(i) .... काव्य गुण में कठोर वर्णों एवं संयुक्ताक्षरों प्रयोग होता है।

(ii) द्रुतविलम्बित छंद में प्रत्येक चरण में वर्णों की संख्या .... होती है।

(iii) घृणासूचक, अमंगलसूचक शब्दों से युक्त रचना में .... दोष होता है।

(iv) सवैया छंद के प्रत्येक चरण में .... वर्ण होते हैं।

(v) जहां एक बात कहकर, फिर उससे कोई मिलती–जुलती दूसरी बात कहीं जाए, वहाँ ....अलंकार होता है।

(vi) कारण सहित उपमेय का उत्कर्ष जहां दिखाया जाए वहां .... अलंकार है।

प्र:3 निम्नलिखित अतिलघूरात्मक प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(i) समाचार लेखन की प्रमुख शैली है?

(ii) विशेष रिपोर्ट कितने प्रकार की होती है।

(iii) कहानी का केन्द्रीय बिन्दु क्या होता है?

(iv) नाटक में सामान्यतः कितने अंक होते है?

(v) प्रसाद गुण को परिभाषित कीजिए

(vi) छंद में गति से क्या तात्पर्य है?

प्र:4 दिये गए अपठित गद्यांश को पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

आधुनिक युग में विज्ञान केवल उपकरणों और आविष्कारों तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि उसने मानव की

शेखावाटी मिशन–100

सोच, जीवन शैली और मूल्यबोध को भी गहराई से प्रभावित किया है। विज्ञान की सहायता से मानव ने प्रकृति की अनेक बाधाओं को पार कर लिया है और अपने जीवन को अधिक सुविधाजनक बनाया है। परंतु सुविधा की यह निरंतर चाह धीरे – धीरे उपभोग की प्रवृति में बदलती जा रही है। प्राकृतिक संसाधनों का असीम दोहन, प्रदूषण की बढ़ती समस्या और तकनीकी शक्ति का अनुचित प्रयोग इस प्रवृत्ति के दुष्परिणाम है। यदि विकास की प्रक्रिया में नैतिक विवेक का अभाव बना रहा, तो प्रगति मानव कल्याण का साधन न रहकर विनाश का कारण भी बन सकती है। इसलिए आज की आवश्यकता यह नहीं है कि विज्ञान की गति को रोका जाए, बल्कि सुनिश्चित किया जाए कि उसकी दिशा मानवीय मूल्यों के अनुरूप हो ।

(i) गद्यांश के अनुसार विज्ञान का सबसे गहरा प्रभाव किस क्षेत्र पर पड़ा है ?

(अ) केवल भौतिक संसाधनों पर (ब) मानव की जीवन – शैली और मूल्यबोध पर.

(ग) प्राकृतिक सौन्दर्य पर (द) परम्परागत संस्कृति पर

(ii) "सुविधा की निरंतर चाह" किस प्रवृत्ति में परिवर्तित होती दिखाई देती है?

(अ) संरक्षण की प्रवृत्ति (ब) आत्मसंयम की प्रवृत्ति

(स) उपभोग की प्रवृत्ति (द) अनुसंधान की प्रवृत्ति

(iii) लेखक के दृष्टिकोण से वास्तविक समस्याः क्या नहीं है।

(अ) विज्ञान की तीव्र प्रगति (ब) विज्ञान का अनुचित प्रयोग

(स) नैतिक विवेक का का अभाव (द) प्राकृतिक संसाधनों का दोहन

(iv) लेखक के अनुसार प्रगति किन परिस्थितियों में विनाशकारी हो सकती है?

(v) विज्ञान और मानवता के संबंध में लेखक की मूल चिंता क्या है?

(vi) गद्यांश का उचित ''शीर्षक'' लिखिए

प्र:5 निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

समय की धारा बहता मानव सपनों का संसार,
सुविधा की खोज में उसने छोड़ दिये संयम के संसार ।
प्रकृति मौन खड़ी देखे कटते वन, सूखते नीर,
विकास के नाम पर टूटे जीवन के कोमल तंतु – तीर।
यदि चेतना जागे न अब भी, भविष्य होगा प्रश्नचिन्ह,
प्रगति तभी सार्थक मानी जब मानवता रहे अविच्छिन।

(i) पद्यांश में "संयम के संस्कार" छोड़ने का मुख्य कारण क्या संकेतित है?

(अ) परंपराओं से मोह (ब) सुविधा की खोज (स) अज्ञानता (द) प्रकृति प्रेम

(ii) कवि के अनुसार प्रकृति किस स्थिति में खड़ी है ?

(अ) क्रोधित होकर (ब) संघर्ष करते हुए (स) मौन साक्षी बनकर (द) प्रसन्न होकर

शेखावाटी मिशन–100

(iii) पद्यांश के अनुसार प्रगति कब सार्थक मानी जाएगी ?

(अ) जब तकनीक उन्नत हो (ब) जब संसाधन अधिक हो

(स) जब मानवता बनी रहे (द) जब विकास तीव्र हो ।

(iv) कवि ने विकास के नाम पर होने वाली किन दो क्षतियों की और संकेत किया ?

(v) भविष्य होगा प्रश्नचिह्न से कवि का क्या आशय है?

(vi) इस पद्यांश का केन्द्रीय भाव एक वाक्य में लिखिए।

खण्ड–ब

प्रश्न संख्या 6 से 15 तक प्रत्येक प्रश्न के लिए अधिकतम शब्द सीमा 40 शब्द है।

प्र:6 धनानन्द का साहित्यिक परिचय लिखिए।

प्र:7 फणीश्वर नाथ रेणु का साहित्यिक परिचय लिखिए।

प्र:8 'विभावना' अलंकार को उदाहरण, सहित समझाइए ।

प्र:9 देवसेना ने अपने जीवन का अन्तिम समय कहाँ व्यतीत किया व किस समाधि को परिष्कृत किया ?

प्र:10 'मैं जानउँ निज नाथ सुभाऊ' में राम के स्वभाव की किन विशेषताओं का उल्लेख किया गया है।

प्र:11 'संवदिया डटकर खाता है और अफर कर सोता है' से क्या आशय है?

प्र:12 कुटज को 'गाढ़े का साथी' क्यों कहा गया है?

प्र:13 सूरदास विजय गर्व की तरंग में राख के ढेर को दोनों हाथों से क्यों उड़ाने लगा ?

प्र:14 फूल केवल गंध ही नहीं देते दवा भी देते हैं, कैसे ?

प्र:15 लेखक को क्यों लगता है कि हम जिसे विकास की औद्योगिक सभ्यता कहते है वह उजाड़ की अपसभ्यता है।

खण्ड–स

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए।

प्र:16 'साझा' कहानी द्वारा पूँजीपतियों की किस मनोवृत्ति पर व्यंग्य किया गया है।

अथवा

'बालक बच गया' निबन्ध में समाज की किस मानसिकता पर चोट की गई है?

प्र:17 'बनारस' कविता में बनारस की पूर्णता और रिक्तता को कवि ने कैसे सजीव किया है ?

अथवा

वसंत आया कविता का मूल भाव लिखिए ?

प्र:18 बिस्कोहर की माटी पाठ की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए ?

अथवा

सूरदास की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए ?

खण्ड–द

प्र:19 **निम्नलिखित गधांश की सप्रंसग व्याख्या कीजिए ।**

शेखावाटी मिशन–100

इस भीड़ में एकसूत्रता थी। न यहाँ जाति का महत्त्व था न भाषा का, महत्त्व उद्देश्य का था और वह सबका समान था, जीवन के प्रति कल्याण की कामना । इस भीड़ में दौड़ नहीं थी, अतिक्रमण नहीं था और भी अनोखी बात यह थी कि कोई भी स्नानार्थी किसी सैलानी आनन्द में डुबकी नहीं लगा रहा था। बल्कि स्नान से ज्यादा समय ध्यान में ले रहा था। दूर जलधारा के बीच एक आदमी सूर्य की ओर उन्मुख हाथ जोड़े खड़ा था। उसके चेहरे पर इतना विभोर, विनीत भाव था मानो उसने अपना सारा अहम त्याग दिया है उसके अन्दर 'स्व' से जनित कोई कुंठा शेष नहीं है, वह शुद्ध रूप से चेतनस्वरूपं, आत्माराम और निर्मलानन्द है।

अथवा

उन्हीं दिनों सेवाग्राम में अनेक जाने–माने देशभक्त देखने को मिले। पृथ्वीसिंह आजाद आए हुए थे, जिनके मुँह से वह सारा किस्सा सुनने को मिला कि कैसे उन्होंने, हथकड़ियों समेत, भागती रेलगाडी में से छलांग लगाई और निकल भागने में सफल हुए और फिर गुमनाम रहकर बरसों तक एक जगह अध्यापन कार्य करते रहे। उन्हीं दिनों वहाँ पर मीरा बेन थी, खान अब्दुल गफ्फार खान आए हुए थे, कुछ दिन के लिए राजेन्द्र बाबू भी आए थे। उनके रहते यह नहीं लगता था कि सेवाग्राम दूर पार का कस्बा है।

प्र:20 निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

यह वह विश्वास नहीं जो अपनी लघुता में भी काँपा
वह पीड़ा, जिसकी गहराई को स्वयं उसी ने नापा;
कुत्सा, अपमान, अवज्ञा के धुंधुआते कडुवे तम में
यह सदा–द्रवित, चिर–जागरूक, अनुरक्त–नेत्र,

अथवा

अगहन देवस घटा निसि बाढ़ी। दूभर दुख सो जाइ किमि काढ़ी।।
अब धनि देवस बिरह भा राती। जरै बिरह ज्यों दीपक बातो ।।
काँपा हिया जनावा सीऊ । तौ पै जाइ होई सँग पीऊ।।
घर–घर चीर रचा सब काहू। मोर रूप रंग लै गा नाहू ।।
पलटि न बहुरा गा जो बिछोई। अबहूँ फिरै–फिरै रँग सोई ।।
सियरि आगिनि बिरहिनि हिय जारा । सुलगि सुलगि दगधै भै छारा

प्र:21 निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 300 शब्दों में निबन्ध लिखिए।

(i) मोबाइल फोन– वरदान या अभिशाप
(ii) योग का जीवन में महत्त्व
(iii) जल–संरक्षण
(iv) राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका

शेखावाटी मिशन–100

उच्च माध्यमिक परीक्षा, 2026

Senior Secondary Examination-2026

नमूना प्रश्न पत्र **(Model Paper)**

विषय – हिन्दी साहित्य (Sub: Hindi Literature) कक्षा:12वीं (Class : 12th)

समयः 03 घन्टे 15 मिनट **पूर्णांकः 80**

परीक्षाार्थियों के लिये सामान्य निर्देशः–

1. सर्वप्रथम अपने प्रश्न पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें।
2. सभी प्रश्न हल करना अनिवार्य है।
3. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर पुस्तिका में लिखें।
4. जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड हैं। उनके उत्तर एक साथ लिखे ।
5. उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।

खण्ड–अ

प्र:1 निम्नलिखित बहुविकल्पात्मक प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तरपुस्तिका में लिखिए। (1x12 =12)

(i) 'चूल्हा ठंडा किया होता तो दुश्मनों का कलेजा कैसे ठंडा होता' नायक राम का उक्त कथन किस संदर्भ मे प्रयुक्त हुआ है।

(अ) भैरो द्वारा, सूरदास को बुरा भला कहने।

(ब) भैरों द्वारा सुभागी की पिटाई करने पर

(स) भैरों द्वारा सूरदास, की झोपड़ी में आग लगाने पर

(द) भैरों द्वारा जगधर को पैसे की पोटली दिखाने पर

(ii) लेखक ने अपने से दस वर्ष बड़ी औरत की सुन्दरता की तुलना के लिए किसका चयन किया है? 'बिस्कोहर की माटी' पाठ के आधार पर बताइए

(अ) कुमुदनी और कोइयाँ का (ब) देवी और देवता का

(स) चाँद और कमल का (द) जूही और चाँदनी का

(iii) ''नयी दुनिया'' की लाइब्रेरी में कितने वर्षों के पानी का रिकॉर्ड, है –

(अ) 128 वर्ष (ब) 100 वर्ष (स) 110 वर्ष (द) 138 वर्ष

(iv) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का जन्म कब हुआ?

(अ) 1889 ई. (ब) 1884 ई. (स) 1902 ई. (द) 1941ई

(v) 'अज्ञेय' की सम्पूर्ण कविताओं का संकलन किस नाम से प्रकाशित हुआ है

(अ) चिंतामणी (ब) सदानीरा (स) वंसत (द) अनामिका

शेखावाटी मिशन–100

(vi) 'सीढियों पर धूप में', आत्महत्या के विरुद्ध और लोग भूल गए काव्य संग्रह किस साहित्यकार के है?

(अ) रघुवीर सहाय (ब) केदारनाथ सिंह (स) सूर्यकान्त त्रिपाठी (द) इनमें से कोई नहीं।

(vii) 'गाँधी, नेहरू और यास्सेर अराफात' नामक संकलित अंश भीष्म साहनी की आत्मकथा का अंश है, जिसका नाम है–

(अ) आज के अतीत (ब) धुंधा से उठती धुन

(स) मेला आँचल (द) स्मृति की रेखाए

(viii) विद्यापति की किस रचना पर दरबारी संस्कृति और अपभ्रंश काव्य परम्परा का प्रभाव है?

(अ) पदावली (ब) कीर्तिलता व कीर्तिपताका (स) लिखनावली (द) इनमें से कोई नहीं

(ix) 'कुटज' नामक पाठ के आधार पर बताइए कि लेखक ने पृथ्वी का मानदंड किसे माना है।

(अ) शिव को (ब) कुटज को (स) हिमालय को (द) कालीदास को

(x) सुमित्रानंदन पंत ने कविता में किसकी आवश्यकता पर बल दिया है।

(अ) चित्र–भाषा–या– भाषा की चित्रात्मकता पर (ब) छंद प्रयोग पर

(स) संगीत पर (द) वाक्य विन्यास या वाक्य संरचना पर

(xi) अखबार की आवाज माना जाता है?

(अ) फीचर को (ब) संपादकीय को (स) संपादक के नाम पत्र (द) लेख को

(xii) एक अच्छे साक्षात्कारकर्त्ता में कौनसे गुण होने चाहिए ?

(अ) कुटनीति (ब) धैर्य (स) संवेदनशीलता (छ) उपर्युक्त सभी

प्र:2 रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए– (1x6 =6)

(i) आचार्य वामन की मान्यता में संयुक्त अक्षरों व संशिलष्ट पदों का संयोग .... गुण में आवश्यक है।

(ii) "ताहि अहीर की छोरिया छछिया पर नाच नचावे" पंक्ति में .... काव्य दोष है।

(iii) ....छंद की जिस शब्द या वाक्यांश से शुरुआत होती है, समापन भी उसी शब्द या वाक्यांश से होता है।

(iv) जहाँ प्रसिद्ध उपमेय का उपमेय की तुलना में अपकर्ष प्रकट किया जाता है वहाँ ....अलंकर होता है।

(v) 'कुमुदिनी हूँ प्रफुल्लित भयी, सॉझ कलानिधि जोई' पंक्ति में .... अलंकार है।

(vi) जिस छंद में 22 से लेकर 26 वर्ण होते है. वहा .... छंद कहलाता है।

प्र:3 निम्नलिखित अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नों के उत्तर लिखिए– (1x6 =6)

(i) माधुर्य गुण कौन–कौन से रसो में पाया जाता है।

(ii) गण किसे कहते है?

(iii) उलटा पिरामिड शैली के कितने भाग होते है? नाम लिखिए।

(iv) समाचार और फीचर लेखन में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

शेखावाटी मिशन–100

(v) इन डेप्थ रिपोर्ट किसे कहते है ?

(vi) नाटक की दुनिया में बोले जाने वाले शब्दों को क्या कहा जाता है ?

प्रः 4 दिए गए अपठित गद्यांश को पढ़कर पूछे गय प्रश्नों के उत्तर लिखिए – (1x6 =6)

किसी देशभक्त कवि का उद्‌घोष है। "हृदय नहीं वह पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं" स्पष्ट है कि स्वदेश प्रेम ऐसा पवित्र भाव है जिसकी व्यंजना देश भक्तों के चरित्र में उत्कृष्ट रूप में होती है। देखा जाये तो स्वदेश–प्रेम मनुष्य का न केवल स्वाभाविक गुण है, अपितु ' वह एक प्राथमिक कर्तव्य भी है। इस कर्तव्य की पूर्ति देश के लिए अपना तन, मन, धन सभी समर्पित करने पर भी नहीं हो सकती। महान–से–महान त्याग करके भी व्यक्ति जननी और जन्मभूमि के ऋण से उऋण नहीं हो सकताः क्योंकि व्यक्ति को जो सर्वस्व प्राप्त होता है, जननी और जन्मभूमि द्वारा ही वह प्रदत्त है। उसका प्रतिदान करके मनुष्य देश के प्रति समर्पित रहने की भावना व्यक्त करता है। देश–भक्ति के लिए वस्तुतः यह समर्पण – भाव महत्वपूर्ण है।

(i) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक है–

(अ) स्वदेश प्रेम (ब) जननी और जन्मभूमि

(स) मनुष्य का कर्त्तव्य (द) इनमें से कोई नहीं

(ii) महान से महान त्याग करके भी व्यक्ति किसके ऋण से उऋण नहीं हो सकता है?

(अ) अपने समाज का (ब) जननी और जन्मभूमि

(स) अपने परिवार जनों का (द) गुरू का

(iii) मनुष्य का प्राथमिक कर्तव्य क्या बताया गया है?

(अ) माता–पिता की सेवा (ब) स्वदेश प्रेम (स) चरित्र उत्थान (द) इनमें से कोई नहीं

(iv) 'हृदय नहीं वह पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं' पंक्ति का आशय है?

(v) देशभक्ति के लिए कौनसा भाव महत्वपूर्ण बताया गया है?

(vi) गद्यांश में लेखक मनुष्य से क्या अपेक्षा रखना चाहता है ?

प्र:5 निम्नलिखित अपठित पद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए– (1x6 =6)

उठे राष्ट्र तेरे, कंधों पर
बढ़े प्रगति के प्रांगण में,
पृथ्वी को रख दिया उठाकर
तूने नभ के आँगन में
तेरे प्राणों के ज्वारों पर,
लहराते है देश सभी
चाहे जिसे इधर कर दे तू
चाहे जिसे उधर क्षण में।

उसमे तेरा नाम लिखा है,
जीने में बलि होने में।
गहरे रन घनघोर बढ़ी
सेनाएँ तेरा बल पाकर,
स्वर्ण–मुकुट आ गए चरण–तल
तेरे शस्त्र संजोने में।
तेरे बाहुदंड में वह बल,
जो केहरि – कटि तोड़ सके

शेखावाटी मिशन–100

विजय वैजयंती फहरी जो
जग के कोने–कोने में

तेरे दृढ़ कंधों में वह बल
जो गिरि से ले होड़ सके।

(i) 'उठे राष्ट्र तेरे कंधों पर' – इसमें 'तेरे' किसके लिए कहा गया है।

(अ) देश के बच्चों के लिए (ब) देशा के युवाओं के लिए

(स) देश के बुजुर्गो के लिए (द) इनमें से कोई नहीं

(ii) पद्यांश में आये शब्द 'केहरि' का पर्याय है ?

(अ) मृगेन्द्र (ब) बंदर (स) हाथी (द) गीदड़

(iii) 'पद विजय – वैजयंती' में कौनसा अलंकार है

(अ) अनुप्रास (ब) उपमा (स) श्लेष (द) रूपक

(iv) केहरि कटि तोड़ने से कवि का क्या आशय है?

(v) प्रस्तुत काव्यांश में कवि की युवाओं से क्या अपेक्षाएँ है?

(vi) प्रस्तुत काव्यांश का संक्षेप में प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

खण्ड–ब

प्रश्न संख्या 6 से 15 तक प्रश्नों के उत्तर निर्धारित शब्द सीमा में दीजिए (शब्द सीमा 40 शब्द)(2x10 =20)

प्रः6 ''आशा से ज्यादा दीर्घजीवी कोई वस्तु नहीं होती।'' ऐसा क्यों कहा गया है? सूरदास की झोपड़ी। पाठ के आधार स्पष्ट कीजिए

प्रः7 'अपना मालवा खाऊ उजाडू सभ्यता' पाठ में लेखक की पर्यावरण संबंधी चिंता का यथार्थ चित्रण हुआ है। पाठ के आधार पर लिखिए ?

प्रः8 लेखक ने माँ और बतख में क्या समानता बताई ?

प्रः9 आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का झुकाव हिंदी साहित्य के प्रति किए प्रकार बढ़ा ?

प्रः 10 'यह दीप अकेला है, पर इसको भी एक पंक्ति को दे दो।' पंक्ति के आधार पर व्यष्टि का समष्टि में विलय क्यों जरूरी है ?

प्रः 11 दूसरा देवदास कहानी का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

प्रः 12 घनानन्द मूलतः प्रेम की पीर के कवि है। स्पष्ट कीजिए।

प्रः 13 व्यतिरेक अलंकार की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।

प्रः 14 तुलसीदास का साहित्यिक परिचय लिखिए।

प्रः 15 निर्मल वर्मा का साहित्यिक परिचय लिखिए।

खण्ड – स

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए। (3x3 =9)

प्रः16 'बालक बच गया' निबंध की मूल संवेदना पर प्रकाश डालते हुए, लेखक के शिक्षा संबंधी विचारों को स्पष्ट कीजिए।

शेखावाटी मिशन–100

अथवा

कुटज क्या केवल जी रहा है, लेखक ने यह प्रश्न उठाकर किन कमजोरियों पर टिप्पणी की है।

प्र.17 'कार्नेलिया का गीत' के आधार पर भारत की प्राकृतिक और सांस्कृतिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

अथवा

मोर मन हरि हर लए गेल रे अपनों मन गेल।

गोकुल तेजि मधुपुर बस रे कन अपजस लेल। पंक्तियों के काव्य सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए।

प्र:18 'तो हम सौ लाख बार बनाएंगे' इस कथन के आलोक में उन जीवन मूल्यों का उल्लेख कीजिए जो हम सूरदास से सीख सकते है ?

अथवा

''नदियों का सदानीरा, रहना जीवन के स्रोत का सदैव जीवित रहना है'' कथन पर अपने विचार लिखिए ।

खण्ड – द

निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। (3x5 =15)

प्रः 19 ये लोग आधुनिक भारत के नए शरणार्थी है, जिन्हें औद्योगीकरण के झंझावात ने अपनी घर जमीन से उखाड़कर हमेशा के लिए निर्वासित कर दिया है। प्रकृति और इतिहास के बीच यह गहरा अंतर है। बाढ़ या भूकंप के कारण लोग अपना घरबार छोड़कर कुछ अरसे के लिए जरूर बाहर चले जाते है, किंतु आफत टलते ही वे दोबारा अपने जाने–पहचाने परिवेश में लौट भी आते है। किन्तु विकास और प्रगति के नाम पर जब इतिहास लोगों को उन्मूलित करता है, तो वे फिर कभी अपने घर वापस नहीं लौट सकते।

अथवा

धर्म के रहस्य जानने की इच्छा प्रत्येक मनुष्य न करें, जो कहा जाए वही कान ढलकाकर सुन ले, इस–सत्ययुगी मत के समर्थन में घड़ी का दृष्टांत बहुत तालियाँ पिटवाकर दिया जाता है। घड़ी समय बतलाती है। किसी घड़ी देखना जाननेवाले से समय पूछ लो और काम चला, लो। यदि अधिक करो तो घड़ी देखना स्वयं सीख लो किंतु तुम चाहते हो कि घड़ी का पीछा खोलकर देखें, पुर्जे गिन लें उन्हें खोलकर फिर जमा दें, साफ करके फिर लगा लें – यह तुमसे नहीं होगा। तुम उसके अधिकारी नहीं।

प्र:20 निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए ।

अरुण यह मधुमय देश हमारा।
जहाँ पहुंच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा।
सरस तामरस गर्भ विभा पर–नाच रही तरुशिखा मनोहर
छिटका जीवन हरियाली पर– मंगल कुंकुम सारा !
लघु सुरधनु से पंख पसारे – शीतल मलय समीर सहारे ।
उड़ते खग जिस ओर मुँह किए – समझ नीड़ निज प्यारा ।

शेखावाटी मिशन–100

अथवा

सखि है, कि पुछसि अनुभव मोए।
सेह पिरिति अनुराग बखानिअ तिल–तिल नूतन होए।
जनम अबधि हम रूप निहारल नयन न तिरपित भेल।।
सेहो मधुर बोल स्रवनहि सूनल स्रुति पथ परस न गेल।
कत मधु – जामिनि रभस गमाओलि न बूझल कइसल केलि ।।

प्र:21 निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 300 शब्दों में निबन्ध लिखिए।

(i) साइबर अपराध अथवा सूचना प्रौद्योगिकी में बढ़ते अपराध

(ii) जीवन में नैतिक मूल्यों का महत्त्व

(iii) मूल्यवृद्धि : एक ज्वलन्त समस्या

(iv) समाज – निर्माण में पत्र पत्रिकाओं की भूमिका

अंतरा भाग–2 पद्य खण्ड

1. जयशंकर प्रसाद

(देवसेना का गीत/कॉर्नेलिया का गीत)

वस्तुनिष्ठ प्रश्नः–

(i) देवसेना का गीत मूलतः किस विधा से उद्‌धृत है

(अ) कहानी (ब) उपन्यास (स) संस्मरण (द) नाटक (द)

(ii) जयशंकर प्रसाद मूलतः थे

(अ) नाटककार (ब) कवि (स) निबंधकार (द) कहानीकार (ब)

(iii) देवसेना का गीत प्रसाद के कौनसे नाटक से लिया गया है?

(अ) चन्द्रगुप्त (ब) अजातशत्रु (स) राजश्री (द) स्कन्दगुप्त (द)

(iv) देवसेना कौन थी?

(अ) मालवा के शासक बंधुवर्मा की बहन (ब) कार्नेलिया की बहन

(स) धनकुबेर की कन्या (द) पर्णदत्त की बहन (अ)

(v) देवसेना की वेदना का मूल कारण क्या है?

(अ) अत्यधिक गरीब होना (ब) पर्णदत के साथ भीख माँगना

(स) स्कंदगुप्त का प्रेम नही मिलना (द) बीमार होना (स)

(vi) देवसेना स्कन्द्रगुप्त से प्रेम करती थी पर स्कन्दगुप्त किसका स्वप्न देखते थे?

शेखावाटी मिशन–100

(अ) जयमाला (ब) कमला (स) विजया (द) मालिनी (स)

(vii) किसके आक्रमण से आर्यावर्त संकट में हैं?

(अ) शक (ब) कुषाण (स) सिकंदर (द) हुण (द)

(viii) "हृदय की कोमल कल्पना सो जा!" किसने कहा?

(अ) कार्नेलिया (ब) देवसेना (स) विजया (द) महादेवी (ब)

(ix) कार्नेलिया का गीत कहाँ से लिया गया है?

(अ) राजश्री नाटक (ब) चन्द्रगुप्त नाटक

(स) स्कन्दगुप्त नाटक (द) अजातशत्रु नाटक (ब)

(x) सिकन्दर के सेनापति सिल्यूकस की बेटी का नाम था –

(अ) कार्नेलिया (ब) देवसेना (स) विजया (द) जयमाला (अ)

(xi) 'अरुण यह मधुमय देश हमारा' पंक्ति में किस देश की महिमा का वर्णन किया गया है?

(अ) भारत (ब) श्रीलंका (स) बाग्लादेश (द) चीन (अ)

(xii) भारतभूमि की महिमा, गौरव और प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन प्रसाद के किस गीत में किया गया है?

(अ) देवसेना का गीत (ब) कार्नेलिया का गीत

(स) इन दोनों में (द) इनमें से कोई नहीं (ब)

प्रः1 देवसेना ने अपने जीवन का अंतिम समय कहाँ व्यतीत किया किस समाधि को परिष्कृत किया–

उत्तर– अंतिम समय में देवसेना वृद्ध पर्णदत के साथ आश्रम में रही गाना गाकर भीख मांगी और महादेवी की समाधि को परिष्कृत किया।

प्रः2 हेम कुंभ ले उषा सवेरे– भरती ढुलकाती सुख मेरे मंदिर ऊँघते रहते जब–जगकर रजनी भर तारा.... पंक्तियों का काव्य– सौन्दर्य लिखिए

उत्तर– **भावपक्षः–** इन पंक्तियों में कवि कह रहे हैं कि उषारूपी नायिका सूर्य रूपी सुनहरे घड़े को लेकर आती है और सुखों को बिखेर देती है। दूसरी ओर, रात भर जागने के बाद थके हुए तारे अब मस्ती में ऊँध रहे हैं, अर्थात् छिपने की तैयारी कर रहे हैं। यहाँ रात के बीतने और भोर के आगमन का सजीव वर्णन है।

कला पक्षः– भाषा – तत्सम शब्द प्रधान खड़ी बोली हिन्दी है।

उषा का मानवीकरण किया गया है तथा हेम कुंभ.. रजनी भर तारा में रूपक अलंकार है। दृश्य बिम्ब व प्रसाद गुण है।

प्रः3 मेरी आशा आह। बावली, तूने खो दी सकल कमाई। इन पंक्तियों में देवसेना की किस मनोव्यथा का चित्रण किया गया है।

उत्तर– देवसेना स्कन्दगुप्त से सच्चा प्रेम करती थी किन्तु उसे जीवनभर विरह की आग में जलना पड़ा क्योंकि वह स्कन्दगुप्त को पाना चाहती थी लेकिन स्कन्दगुप्त का विजया के प्रति प्रेम देखकर उसने अविवाहित रहने का व्रत ले लिया। जब स्कन्दगुप्त ने उसके सामने प्रेम प्रस्ताव रखा तो उसने दृढ़ता के साथ अस्वीकार कर

शेखावाटी मिशन–100

दिया। उसे पाने, की आशा उसका पागलपन था। उसको अपने अधूरे प्रेम का दुःख तथा पछतावा था । इसलिए उसने ऐसा कहा था

प्र:4 कवि ने आशा को बावली क्यों कहा है?

उत्तर – आशा व्यक्ति को भ्रमित कर देती है। उसे बावला बना देती है। प्रेम में प्रेमी विवेकहीन हो जाते हैं। प्रेम अन्धा होता है। देवसेना स्कन्दगुप्त के प्रेम में बावली हो गई थी। उसने बिना सोचे समझे स्कन्दगुप्त से प्रेम किया और यह आशा मन में पाली कि स्कन्दगुप्त उसे अपना लेगा। उसकी आशा उसके मन का पागलपन ही था। वह स्कन्दगुप्त का प्रेम नहीं पा सकी।

प्र:5 'देवसेना का गीत' कविता में देवसेना की 'हार या निराशा' के क्या कारण हैं?

उत्तर– देवसेना की हार या निराशा के कई कारण थे जिनमें दो कारण प्रमुख थे। सर्वप्रथम हूणों के आक्रमण से देवसेना के भाई बन्धुवर्मा सहित पूरा परिवार वीरगति को प्राप्त हुआ। दूसरा कारण यह है कि वह स्कन्दगुप्त को पाना चाहती थी परन्तु पा न सकी क्यों कि स्कन्दगुप्त विजया से प्रेम करता था । जब स्कन्दगुप्त ने उससे प्रेम याचना की तब वह तैयार नहीं हुई क्यों कि वह आजीवन अविवाहित रहने का व्रत ले चुकी थी। इस प्रकार वह जीवन से हार कर निराश हो गई थी।

प्र:6 भारत की किन–किन विशेषताओं को 'कार्नेलिया का गीत' कविता में चित्रित किया गया है?

उत्तर– प्रस्तुत गीत में प्रसाद जी ने भारत के प्राकृतिक सौंदर्य एवं सांस्कृतिक महत्व का वर्णन किया है। प्रातःकालीन सूर्य की किरणें जब भारत की धरती पर पड़ती है तब प्रकृति की शोभा देखते ही बनती है। उस समय प्रकृति मधुमय होती है। यहाँ दूर देशों से आने वाले व्यक्तियों को आश्रय मिलता है। यहाँ के लोग दयालु, करुणाशील, संवेदनशील है जो सभी के प्रति सहानुभूति रखते हैं। भारत में विविध सभ्यता– संस्कृति, रंग रूप, आचार–विचार एवं धर्म वाले प्राणियों के साथ समानता का व्यवहार किया जाता है। इस प्रकार कवि ने इस कविता में भारत की अनेक विशेषताओं को चित्रित किया है।

प्र:7 निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

छलछल थे संध्या के श्रमकण
आँसू–से गिरते थे प्रतिक्षण
मेरी यात्रा पर लेती थी–
नीरवता अनंत अंगड़ाई।

श्रमित स्वप्न की मधुमाया में,
गहन – विपिन की तरू छाया में,
पथिक उनींदी श्रुति में किसने–
यह विहाग की तान उठाई।

<u>प्रसंग–</u>

यह पद्यांश जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित 'स्कन्दगुप्त' नाटक से लिया गया है। कवि ने इस काव्यांश में देवसेना के असफल प्रेम से सम्बन्धित मनोभावों व देवसेना के हृदय की पीड़ा का वर्णन किया है।

शेखावाटी मिशन–100

व्याख्या–

देवसेना जीवन के अंतिम समय में वेदना का अनुभव करते हुए सोचती है कि जीवन की संध्या बेला अर्थात् जीवन के अंतिम पड़ाव में श्रम करने से उत्पन्न हुई पसीने की बूँदे आँसू की तरह हर क्षण गिरती रहती है। मेरी यात्रा पर अंतहीन खामोशी अँगड़ाई लेती है अर्थात देवसेना का समस्त जीवन दुखों से भरा रहा। वह जीवन भर जिस सुख की कामना करती रही, यह उसे प्राप्त नहीं हो सका। उसे आँसुओं के अतिरिक्त कुछ न मिला।

प्रसाद जी वर्णन करते हैं। के जिस प्रकार कोई पथिक थककर पेड़ की छाया में विश्राम कर रहा हो और उसे उनींदी दशा में कोई मधुर राग सुनाई पड़ जाए। देवसेना को स्कंदगुप्त का प्रणय निवेदन भी ऐसे ही विहाग–राग के समान प्रतीत हुआ। भाव यह है कि जीवन भर संघर्ष करती रही देवसेना सुख की आकांक्षा के मीठे सपने देखती रही, पर वे पूरे न हो सके। अब वह थककर निराश होकर इन सबसे विदाई लेती है। अब उसे कोई गीत सुख नहीं पहुंचा सकता।

विशेष –

(1) इन पंक्तियों में देवसेना की वेदना और अन्तर्द्वन्द्व साकार हो उठा है।

(2) 'छलछल' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार, 'आँसू–से गिरते' में उपमा अलंकार 'नीरवता' में मानवीकरण व 'श्रमित–स्वप्न' में अनुप्रास अलंकार का प्रयोग द्रष्टव्य है।

(3) भाषा में चित्रात्मकता व संगीतात्मकता का गुण है।

(4) करुण रस, प्रसाद गुण व कविता मुक्त छंद में है।

प्र:8 निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

लघु सुरधनु से पंख पसारे – शीतल मलयसमीर सहारे।
उड़ते खग जिस ओर मुँह किए – समझ नीड़ निज प्यारा।
बरसाती आँखों के बादल – बनते जहाँ भरे करुणा जल।
लहरें टकराती अनंत की पाकर जहाँ किनारा।
हेमकुंभ ले ऊषा सवेरे–भरती ढुलकाती सुख मेरे।
मदिर उँघते रहते जब – जगकर रजनी भर तारा।

प्रसंग – यह काव्यांश जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित 'चन्द्रगुप्त' नाटक के 'कार्नेलिया का गीत' से लिया गया है। इन पंक्तियों में कार्नेलिया द्वारा भारतदेश की महिमा का मनोहारी वर्णन किया गया है।

व्याख्या –

प्रसाद जी वर्णन करते है कि कार्नेलिया गा रही है कि यहाँ मलय पर्वत से प्रातःकाल शीतल, सुगंधित मन्द हवा चलती है। यहाँ पक्षी भी छोटे इन्द्रधनुषों के समान अपने पंखों को फैलाकर भारत की ओर अपने प्यारे घोंसलों की कल्पना करके उड़ते हैं। वर्षा ऋतु में जब बादल बरसते हैं तो ऐसे लगता है जैसे यहाँ के लोगों की आँखों से करुणा जल बरस रहा है। विशाल

शेखावाटी मिशन–100

सागर की लहरों को भारत देश के किनारों से टकराने के बाद ही विश्राम मिलता है। प्रातःकालीन उषा का जब आगमन होता है तो ऐसे लगती है मानों सूर्य रूपी स्वर्ण कलश लेकर सुख बिखेर रही हो। रातभर जागने के बाद तारागण मंदिर की भाँति ऊँघते हुए से प्रतीत होते हैं।

विशेष –

(1) भारत की सांस्कृतिक महिमा, देशभक्ति, मानवीय करुणा व अतिथि–परायणता आदि विशेषताओं को उजागर किया गया है।

(2) कविता में संगीतात्मकता एवं दृश्य बिम्ब का प्रयोग किया गया है।

(3) शांत रस व कविता मुक्त छंद में है।

(4) तत्सम प्रधान खड़ी बोली एवं शैली छायावादी है।

(5) 'लघु सुरधनु से' में उपमा अलंकार, 'बनते जहाँ करुणा जल; व 'हेमकुंभ' में रूपक अलंकार है।

(6) अनेक जगह उनुप्रास अलंकार एवं अंतिम पंक्तियों में मानवीकरण अलंकार है।

2. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'–(सरोज स्मृति)

<u>वस्तुनिष्ठ प्रश्नः–</u>

(i) निराला ने 1916 ई. में कौनसी प्रसिद्ध कविता लिखी–

(अ) जूही की कली (ब) झरना (स) पल्लव (द) भिक्षुक (अ)

(ii) निराला की प्रमुख प्रबंधात्मक कविता कौनसी है ?

(अ) राम की शक्ति पूजा (ब) तुलसीदास

(स) अ व ब दोनों (द) उपर्युक्त में से कोई नहीं (स)

(iii) कविता में निराला ने स्वयं को क्या कहा है ?

(अ) भाग्यहीन पिता (ब) धनी व्यक्ति (स) सफल कवि (द) अनाथ (अ)

(iv) 'सरोज–स्मृति' में किस रस की प्रधानता है?

(अ) वीर रस (ब) शैद्र रस (स) श्रृंगार रस (द) करुण रस (द)

(v) निराला ने सरोज के रूप में किसे प्रतिस्थापित किया है?

(अ) अपनी पत्नी के रूप को (ब) किसी आसरा को

(स) प्रकृति को (द) सरस्वती को (अ)

(vi) आकाश बदलकर बना 'मही' पंक्ति में 'मही' का शाब्दिक अर्थ है–

(अ) अन्तरिक्ष (ब) चन्द्रमा (स) पृथ्वी (द) नदी (स)

(vii) निराला अपनी पुत्री की तुलना किससे करते हैं?

(अ) राधा से (ब) सीता से (स) रुक्मणी से (द) शकुन्तला से (द)

(viii) मुक्तछंद के प्रवर्तक कवि माने जाते हैं–

शेखावाटी मिशन–100

(अ) निराला (ब) जयशंकर प्रसाद (स) अज्ञेय (द) रघुवीर सहाय (अ)

(ix) 'हों भ्रष्ट शीत के–से शतदल' पंक्ति में प्रयुक्त अलंकार का नाम है–

(अ) श्लेष (ब) यमक (स) रूपक (द) उपमा (द)

(x) कवि निराला अपनी पुत्री का तर्पण करते हैं–

(अ) जल अर्पित करके (ब) गत कर्मों को अर्पित करके

(स) तिल मिश्रित सामग्री (द) उपर्युक्त सभी (ब)

(xi) 'सरोज स्मृति कैसा गीत है?

(अ) शोकगीत (ब) विवाह गीत (स) उपर्युक्त दोनों (इ) इनमें से कोई नहीं (अ)

लघुत्तरात्मक व दीर्घउत्तरात्मक प्रश्न–

प्र:1 निराला की कविता 'सरोज–स्मृति' की मूल संवेदना स्पष्ट करो।

उत्तर– सरोज – स्मृति हिन्दी का श्रेष्ठ शोक–गीत है, जिसकी मूल संवेदना करुणा, वात्सल्य और गहरा अपराधबोध है। इसमें निराला ने अपनी पुत्री के असमय निधन पर पिता का विलाप व्यक्त किया है। कवि ने मातृहीन पुत्री को विदा के समय स्वयं ही शिक्षा दी। निराला ने स्वयं को भाग्यहीन मानते हुए अपने जीवन के सत्कर्मों के फल द्वारा पुत्री का तर्पण किया।

प्र:2 आकाश बदल कर बना मही में 'आकाश' और मही शब्द किनकी ओर संकेत कर रहे हैं ?

उत्तर– 'आकाश' निराला की दिवंगत पत्नी की ओर संकेत करता है तथा मही (पृथ्वी) निराला की पुत्री सरोज की ओर संकेत करता है। अपनी पुत्री को देखकर उन्हें ऐसा लगता है कि मानो माता का वह अलौकिक सौंदर्य और गुण पुत्री सरोज के रूप में धरती पर पुनः अवतरित हो गया है।

प्र:3 "दुःख ही जीवन की कथा रही,
क्या कहूँ आज जो नहीं कही।
उपर्युक्त पंक्तियों के आधार पर कवि के हृदय की पीड़ा का वर्णन कीजिए।

उत्तर– कवि निराला के स्वजनों का एक–एक करके निधन हो गया था अन्त में पुत्री सरोज के निधन ने उनको अन्दर तक झकझोर दिया था। इस प्रकार निराला ने दुःख एवं मृत्यु का प्रत्यक्ष साक्षात्कार किया था इसलिए उस दुःख गाथा को इस कहानी में गाया है जिसको आज तक किसी से नहीं कहा। इन पंक्तियों में कवि की गहरी वेदना छिपी है जिसे शब्दों द्वारा व्यक्त नहीं किया जा सकता।

प्र:4 सरोज का विवाह अन्य विवाहों से किस प्रकार भिन्न था?

उत्तर– सरोज का विवाह एक सामान्य विवाह था। उसमें किसी प्रकार का आन्तरिक व बाह्य प्रदर्शन नहीं था। विवाह में निराला ने किसी को निमंत्रण नहीं भेजा था केवल कुछ स्वजन ही विवाह में उपस्थित थे। विवाह के समय गाये जाने वाले गीत भी नहीं गाये गये। शांत एवं प्यारा सा, मौन वातावरण था। नव–वधू को माँ द्वारा दी जाने वाली कुल शिक्षा पिता ने ही

शेखावाटी मिशन–100

दी और पुष्प सेज भी स्वयं निराला ने ही सजाई। इस प्रकार सरोज का विवाह अन्य विवाहों से भिन्न था।

प्र:5 'वह लता वहीं की, जहाँ कली तू खिली' पंक्ति के माध्यम से किस प्रसंग को उद्घाटित किया गया है।

उत्तर– कवि ने सरोज की माता को लता और सरोज को कली बताया है। सरोज की माता को अपने मायके में सुख मिला था और सरोज को भी अपनी नानी के घर स्नेह मिला।

पंक्ति से एक भाव यह भी प्रकट होता है कि सरोज का ननिहाल लता है और सरोज कली है, क्योंकि सरोज बचपन से वहीं रही और वहीं बड़ी हुई।

निबन्धात्मक प्रश्नः–

प्र:1 निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

देखा विवाह आमूल नवल,
तुझ पर शुभ घड़ा कलश का जल।
देखती मुझे तू हँसी मंद,
होठों में बिजली फँसी स्पंद
उर में भर झूली छवि सुंदर
प्रिय की अशब्द श्रृंगार–मुखर
तू खुली एक–उच्छ्वास – संग
विश्वास – स्तब्ध बँध अंग–अंग
नत नयनों से आलोक उत्तर
काँपा अधरों पर थर–थर–थर ।
देखा मैंने वह मूर्ति–धीति
मेरे वसंत की प्रथम गीति –

संदर्भ–यह पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक अन्तरा भाग–2 में सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' द्वारा रचित कविता 'सरोज–स्मृति' से लिया गया है।

प्रसंग– यह कविता पुत्री सरोज की मृत्यु के पश्चात उसकी स्मृति में लिखी गई है। इसमें कवि अपनी बेटी सरोज के विवाह के समय को स्मरण कर रहा है।

व्याख्या–कवि अपनी मृत पुत्री सरोज के विवाह को याद करते हुए कहते हैं कि हे पुत्री। तुम्हारा विवाह अन्य विवाहों से एकदम नया था क्यों कि माँ के अभाव में पिता ही तूझे स्नेह प्रदान कर रहा था। जब मंगल कलश के पवित्र जल से तेरा स्नान हो रहा था तब तुम उस समय मुझे देखती हुई मंद–मंद हँस रही थी। जब तुम कुछ कहना चाहती थी तब ऐसा लग रहा था जैसे तेरे होंठो पर बिजली का कंपन हो। तेरे ह्रदय में प्रियतम की सुंदर छवी झूल रही थी जिसे शब्दों से व्यक्त करना तेरे लिए संभव नहीं था। वह छवि तेरे श्रृंगार से ही मुखरित हो रही थी। तेरी दीर्घ साँसों ने तेरी आह को प्रकट किया और तेरे प्रत्येक अंग में दृढ विश्वास झलक रहा था। झुके हुए नेत्रों से तेरे सौंदर्य का प्रकाश उतरकर तेरे

होठों पर काँपता हुआ सा प्रतीत हो रहा था। मैंने तेरी उस प्यास से भरी मूर्ति को देखा तो मुझे लगा जीवन के सुखद क्षणों का प्रथम गीत तो तू ही थी और तेरा विवाह ही मेरे जीवन का प्रथम वसंत था।

विशेष – (1) भाषा संस्कृतनिष्ठ होने पर भी सरल है।

(2) 'अंग–अंग' 'थर–थर–थर' में पुनकक्तिप्रकाश व 'नत–नयनों' में अनुप्रास अलंकार हैं।

(3) पुत्री की मृत्यु पर यह कविता 'शोक–गीत' है।

(4) मुक्त छन्द व विवाह से सम्बन्धित सुन्दर बिम्बों का प्रयोग हुआ है।

प्रः2 सूर्यकांत त्रिपाठी निराला का साहित्यिक परिचय लिखिए।

उत्तर– निराला का जन्म 1898 ई में हुआ। वे आधुनिक छायावादी एवं स्वच्छंदतावादी कवि थे। छायावाद के चार आधार स्तम्भों में से एक निराला मुक्तछंद के प्रवर्तक कवि माने जाते हैं। इसके साथ–साथ वे प्रगतिवादी कवि भी है इसलिए उनके काव्य में शोषण और शोषकों के प्रति विरोध की अभिव्यक्ति हुई है। उन्होंने भारतीय प्रकृति और संस्कृति, भारतीय किसान और जीवन के यथार्थ के विभिन्न पक्षों का चित्रण किया है। निराला का जीवन संघर्षों से भरा हुआ है।

निराला की काव्य कृतियाँ निम्न है– परिमल, गीतिका अनामिका, बेला, भिक्षुक, तुलसीदास, कुकुरमुता, अणिमा, नए पते, अर्चना, आराधना, गीतगुंज आदि। बिल्लेसुर बकरिहा (उपन्यास)

उनका संपूर्ण साहित्य 'निराला रचनावली' के आठ खण्डों में प्रकाशित हो चुका है।

शेखावाटी मिशन–100

3. अज्ञेय–(यह दीप अकेला/मैंने देखा एक बूँद)

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

(i) 'यह दीप अकेला स्नेह भरा' पंक्ति में 'दीप' शब्द किसका प्रतीक है–

(अ) समष्टि का (ब) व्यष्टि का (स) पंक्ति का (द) उपर्युक्त सभी का (ब)

(ii) 'इसको भी पंक्ति को दे दो' पंक्ति में 'पंक्ति' शब्द किसका प्रतीक है?

(अ) व्यक्ति का (ब) समाज का (स) दीप का (द) उपर्युक्त सभी का (ब)

(iii) 'पनडुब्बा' शब्द से तात्पर्य है–

(अ) पनडुब्बी (ब) गोताखोर (स) समुद्र (द) मछली (ब)

(iv) अकेले दीप के लिए क्या कामना की गई है।

(अ) दीप को प्रज्जवलित करने की (ब) दीप को अकेले रखने की

(स) दीप को पंक्तिबद्ध करने की (द) उपर्युक्त सभी (स)

(v) 'यह मधु है स्वयं काल की मौना का युग संचय' पंक्ति में 'मधु' शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?

(अ) समाज (ब) समष्टि (स) शहद (द) व्यक्ति (द)

(vi) समुद्र से अलग हुई बूँद किसका प्रतीक है?

(अ) अमरता (ब) शाश्वतता (स) क्षणभंगुरता (द) विहलता (स)

(vii) 'यह दीप अकेला' कविता का मूल प्रतिपाद्य क्या है?

उत्तर – 'यह दीप अकेला' कविता में कवि अज्ञेय ने दीपक को मनुष्य के प्रतीक स्वरुप लिया है। जिस प्रकार एक अकेला दीपक समर्थ होते हुए भी अपना प्रकाश दूर–दूर तक नहीं फैला सकता, उसी प्रकार अकेला व्यक्ति शक्तिहीन होता है। वहीं दीपक अनेक दीपकों की कतारों में रख देने से अधिक जगमगाने लगता है तथा उसकी सौन्दर्यता बढ़ जाती है उसी प्रकार एक व्यक्ति समर्थ है, स्वतंत्र है, अपने आप में स्नेह एवं करुणा लिए हुए है। फिर भी उसकी सार्थकता समाज के साथ जुड़ने में है। अतः अज्ञेयजी कविता के माध्यम से व्यक्तिगत सत्ता को सामाजिक सत्ता से जोड़ने पर बल देते हैं।

(viii) 'क्षण के महत्व' को उजागर करते हुए 'मैंने देखा एक बूँद' कविता का मूल भाव लिखिए।

उत्तर – कवि ने अपने काव्य में क्षण को महत्व दिया है। जीवन में एक क्षण का बड़ा महत्व है। संध्याकाल में सागर की एक बूँद सागर के पानी से अलग होती है किन्तु क्षणभर में ही वह सागर में विलीन हो जाती है। उस एक क्षण की पृथकता का बड़ा महत्व है। बूँद स्वर्णिम किरणो से प्रकाशित होकर स्वर्णिम दीखने लगती है। इससे यह आत्मबोध होता है कि विराट् सत्ता निराकार है किन्तु क्षणभर के लिए उसके जीवन में आकर अपने मधुर मिलन से उसके जीवन को प्रदीप्त कर देती है। इस प्रकार छोटी–सी कविता में एक क्षण के महत्व को प्रतिपादित किया है।

(ix) 'अज्ञेय' का साहित्यिक परिचय लिखिए।

उत्तर– अज्ञेय का मूल नाम 'सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन' है। उनका जन्म 1911 ई. में हुआ। वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने कविता, कहानी, उपन्यास, यात्रावृत, निबन्ध, आलोचना आदि विद्याओं में लेखन कार्य किया। प्रकृति प्रेम और मानव मन के अन्तर्द्वन्द्व उनके प्रिय विषय हैं। उनकी कविता में व्यक्ति स्वातंत्र्य का आग्रह है। प्रयोगवाद के प्रवर्तक कवि अज्ञेय ने हिन्दी काव्य भाषा को नवीन स्वरूप प्रदान किया। उनकी भाषा तत्सम शब्दों से युक्त है तथा उसमें प्रचलित विदेशी और देशज शब्दों को भी स्थान प्राप्त है। उपन्यास तथा कहानियों की भाषा, विषय तथा पात्रानुकूल है। अज्ञेय ने अपने काव्य में मुक्त छन्द का प्रयोग किया है।

महत्वपूर्ण कृतियांः–

उपन्यासः– – शेखर एक जीवनी, नदी के द्वीप, अपने–अपने अजनबी।

यातावृतः– अरे यायावर रहेगा याद, एक बूँद सहसा उछली।

निबंधः– त्रिशंकु, आत्मनेपद।

कहानी संग्रह विपथगा, परंपरा, कोठरी की बात, शरणार्थी, जयदोल, ये तेरे प्रतिरूप।

काव्य संग्रहः– भग्नदूत, चिन्ता, हरी घास पर क्षण भर, इन्द्रधनुष रौंदे हुए ये, आँगन के पार द्वार, कितनी नावों में कितनी बार आदि।

'आँगन के पार द्वार' घर साहित्य अकादमी व 'कितनी नावों में कितनी बार' पर भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार।

(x) निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

शेखावाटी मिशन–100

मैंने देखा
एक बूँद सहसा
उछली सागर के झाग से,
रंग गई क्षण भर
ढलते सूरज की आग से।
मुझ को दीख गयाः
सूने विराट के सम्मुख
हर आलोक–धुआ अपनापन
है उन्मोचन
नश्वरता के दाग से।

प्रसंग – यह काव्यांश सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' द्वारा रचित 'मैंने देखा, एक बूँद' कविता से लिया गया है। इस कविता में कवि ने समुद्र से अलग हुई बूँद की क्षणभँगुरता का वर्णन किया है।

व्याख्याः–

कवि कहते हैं कि शाम के समय में मैंने देखा कि समुद्र के झागों से एक बूँद सहसा ऊपर उठी। वह बूँद अस्त होते हुए सूर्य की बाल किरणों के प्रकाश में रंगकर लाल रंग की हो गई। कवि उस बूँद के क्षण भर के अस्तित्व को ही उसके जीवन की चरम सार्थकता मानता हुआ कहता है कि अरुणाभ किरणों में अरुण हो उठने वाली उस बूँद को देखकर मेरे हृदय में भाव उठे कि मानव जीवन में आने वाले स्वर्णिम, विशेष क्षण ही हुआ करते हैं जो उन्हें विशेष तृप्ति प्रदान किया करते हैं। ऐसे क्षण मानव को नश्वरता के दाग (लाछंन या कलंक) से मुक्ति दिलाकर उसके अस्तित्व की सार्थकता सिद्ध कर सकते हैं।

विशेष – (1) जीवन में क्षण के महत्व को प्रतिष्ठापित किया गया है।

(2) 'आग' 'दाग' जैसे शब्दों के प्रयोग से कवि की प्रयोगधर्मिता स्पष्ट दिखाई देती है।

(3) उस विराट सत्ता के सामने व्यक्ति एक केंद्र के समान होते हुए भी अपना एक अलग अस्तित्व रखता है।

(4) कविता की भाषा सरल, सहज एवं प्रसाद गुण से युक्त है।

शेखावाटी मिशन–100

4. केदार नाथ सिंह– (बनारस/दिशा)

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(i) बनारस कविता में किस ऋतु का उल्लेख हुआ है?

(अ) शीत ऋतु (ब) वर्षा ऋतु (स) बसन्त ऋतु (द) हेमन्त ऋतु (स)

(ii) बनारस में सैकड़ों वर्षों से किसकी खड़ाऊ रखी है?

(अ) राम (ब) शिव (स) बनारस के लोगों की (द) तुलसीदास (द)

(iii) 'बनारस' कविता के अनुसार बनारस शहर को कौन दृढ़ता से एकता के सूत्र में बाँधे हुए है?

(अ) धीरे–धीरे होने की सामुहिक लय (ब) तुलसीदास

(स) कवि (द) मंदिर (अ)

(iv) 'पुराने शहर की जीभ किरकिराने' से तात्पर्य है–

(अ) मिट्टी उड़ने लगती है (ब) सांस्कृतिक कार्यक्रमों की धूम मचने लगती है

(स) अन्तर्मन में किरकिराहट (द) इनमें से कोई नहीं (ब)

(v) 'लहरतारा' और 'मडुवाडीह' क्या हैं?

(अ) एक गीत का नाम (ब) गंगा के घाट (स)

(स) बनारस के मोहल्ले (द) बनारस का प्राचीन नाम

(vi) 'दिशा' कविता किस भाव पर केन्द्रित है–

(अ) दर्शन मनोविज्ञान (ब) बालमनोविज्ञान (स) शिक्षा मनोविज्ञान (द) मस्तिष्क, मनोविज्ञान (ब)

लघुत्तरात्मक व दीर्घउत्तरात्मक प्रश्नः–

(vii) 'खाली कटोरों में वसंत का उतरना' से से क्या आशय है?

उत्तर– कवि का आशय यह है वसंत ऋतु में सर्दी कम हो जाती है और गंगा स्नान के लिए लोगों की भीड़ बढ़ जाती है। उनसे भिखारियों को खूब भीख मिलती है। उनके कटोरो में सिक्कों की खनक बढ़ जाती है। जिस प्रकार प्रकृति में वसंत ऋतु के आने पर मधुरता व खुशियाँ छा जाती हैं उसी प्रकार भिखारियों के चेहरों पर चमक भी बढ़ जाती है। कटोरों में पड़ते सिक्को की चमक में कवि को वसंत उतरता दिखाई देता है।

(viii) धीरे–धीरे होने की सामूहिक लय में क्या–क्या बँधा है?

उत्तर– धीरे–धीरे होने की सामूहिक लय में सारा बनारस शहर बँधा है। जो पहले जहाँ था वह सब वहीं स्थित है। सारा शहर एक सामूहिक लय में बँधा है। गंगा के घाटों पर नावें जहाँ बँधती थी वहीं बँधी हैं। सारी परम्पराएँ उसी रूप में विद्यमान है। तुलसीदास की खड़ाऊँ भी दीर्घकाल से वहीं रखी है। यहाँ के सांस्कृतिक, धार्मिक और ऐतिहासिक वातावरण में कोई परिवर्तन नहीं आया है। गंगा के प्रति लोगों की आस्था और मोक्ष की कामना अब भी यथावत है।

(ix) बनारस कविता में बनारस की पूर्णता और रिक्तता को कवि ने कैसे सजीव किया है?

शेखावाटी मिशन–100

उत्तर – बसन्त के आगमन पर लोगों के मन में उल्लास भर जाता है जो उसकी पूर्णता का प्रतीक है। किसी न किसी पर्व पर दूर से आने वाले श्रध्दालु यहाँ एकातीत होते हैं। गंगा में स्नान करके पूजा–अर्चना करते हैं और विश्वनाथ के दर्शन करते हैं। इस प्रकार बनारस में पूर्णता व्याप्त रहती है। बनारस अपने अस्तित्व के साथ अपनी पूर्णता बनाए रखता है। लोग शवों को अँधेरी गलियों से निकालकर गंगा–घाट की ओर ले जाते है और दाह संस्कार करते हैं। यह कार्य बनारस की रिक्तता को प्रकट करता है।

(x) 'सई साँझ' में घुसने पर बनारस की किन–किन विशेषताओं का पता चलता हैं?

उत्तर– संध्या के समय बनारस में प्रवेश करने पर गंगा जी की आरती के दर्शन होते हैं। मन्दिरों और घाटों पर दीप जलते दीखते हैं, उस समय बनारस की शोभा अद्भुत दिखाई देती है। गंगा के जल में गंगा के घाटों की, दीपों की और बनारस की छाया पड़ रही थी उसे देखकर ऐसा लगता था कि आधा शहर जल में है और आधा शहर जल के बाहर है। कहीं शव जलाए जा रहे हैं तो कहीं उनका जल प्रवाह किया जा रहा है। संध्या के समय बनारस में श्रध्दा आस्था विरक्ति, विश्वास और भक्ति के भाव देखने को मिलते हैं।

(xi) 'दिशा' कविता का मूल कथ्य क्या है?

उत्तर– यह कविता बाल मनोविज्ञान पर आधारित है। सबका यथार्थ अलग–अलग होता है। बच्चे अपने ढंग से यथार्थ को देखते हैं। बच्चे की पतंग जिस और उड़ रही है उसे हिमालय उधर ही दीखता है। कविता यह प्रेरणा देती है कि बच्चों से भी कुछ सीखा जा सकता है।

(xii) निम्नलिखित पद्यांश की सप्रंसग व्याख्या कीजिए

हिमालय किधर है?
मैंने उस बच्चे से पूछा जो स्कूल के बाहर
पतंग उड़ा रहा था
उधर–उधर – उसने कहा
जिधर उसकी पतंग भागी जा रही थी
मैं स्वीकार करूँ
मैंने पहली बार जाना
हिमालय किधर है।

सन्दर्भ– प्रस्तुत पंक्तियाँ केदारनाथ सिंह की कविता 'दिशा' से ली गई हैं जो हमारी पाठय पुस्तक 'अन्तरा भाग–2' में संकलित है।

प्रसंग – यह कविता बाल मनोविज्ञान पर आधारित है। यथार्थ के सम्बन्ध में सभी अपने ढंग से सोचते हैं। बच्चे भी अपने ढंग से सोचते हैं

व्याख्या–कवि कहता है कि मैंने स्कूल से बाहर आते हुए एक बच्चे से प्रश्न किया, हिमालय किधर है? बच्चे

शेखावाटी मिशन–100

ने हिमालय उधर ही बता दिया जिधर उसकी पतंग उड़ती हुई भागी जा रही थी। बच्चे का उत्तर सुनकर कवि ने समझा कि प्रत्येक व्यक्ति का अपना–अपना यथार्थ होता है बच्चे दुनिया की हर चीज को अपने ढंग से देखते हैं। उनकी दुनिया छोटी होती है। वे उसी सीमा में सोचते हैं। इस प्रकार बच्चे का उत्तर सुनकर कवि ने पहली बार जाना कि हिमालय किधर है।

विशेष – – इन पंक्तियों में बाल मनोविज्ञान का सुन्दर चित्रण है

– भाषा अत्यन्त सहज और सरल है।

– सबके सोचने का अलग–2 ढंग होता है यह दिखाया गया है।

– प्रसाद गुण है।

(xiii) निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

जो है वह सुगबुगाता है
जो नहीं है वह फेंकने लगता है पचखियाँ
आदमी दशाश्वमेध पर जाता है
और पाता है घाट का आखिरी पत्थर
कुछ और मुलायम हो गया है
सीढियों पर बैठे बंदरों की आँखों में
एक अजीब सी नमी है
और एक अजीब सी चमक से भर उठा है
भिखारियों के कटोरों का निचाट खालीपन।

प्रसंग–यह काव्यांश केदारनाथ सिंह द्वारा रचित 'बनारस' कविता से लिया गया है। बनारस शहर में वसंत के आगमन के साथ–साथ बनारस शहर की विशिष्टताओं का वर्णन किया गया है।

व्याख्याः–

कवि वर्णन करते हैं कि बनारस में वसंत के आगमन पर जो स्थापित कलाकार है वो अपनी कला तथा ज्ञान से शहर के लोगों को जागृत करने लगते है एवं जो स्थापित कलाकार नहीं हैं वे अपनी कला की शुरुआत का यही उचित समय समझते हैं। दशाश्वमेध घाट पर जाने वाले हर व्यक्ति को घाट का आखिरी पत्थर कुछ मुलायम प्रतीत होता है अर्थात् उस समय कठोर हृदय वाले व्यक्ति के आचरण में भी आस्था के कारण सहजता आ जाती है। कवि को घाट की सीढियों पर बैठे बन्दरों की आँखों में एक अजीब सी नमी दिखाई देती है। द्वार पर बैठे हुए भिखारियों के कटोरों में भी एक अजीब सी चमक आ जाती है। भाव यह है कि आस्थावान व दानदाताओं द्वारा भिखारियों को खूब भिक्षा मिलती है जिससे उनके चेहरे प्रसन्नता से चमक उठते हैं।

विशेष– (1) बनारस के लोगों की आस्था का अनूठे ढंग से वर्णन किया है।

(2) 'जो है वह सुगबुगाता है, जो नहीं है वह फेंकने लगता है पचाखियाँ पंक्तियों में विरोधाभास अलंकार है।

शेखावाटी मिशन

(3) 'बैठे बंदरो' व 'अचानक आता' में अनुप्रास अलंकार है।

(4) कविता मुक्तछंद में है व लक्षणा शब्द शक्ति का प्रयोग किया गया है।

(5) भाषा सहज, सरल एवं आम बोलचाल के शब्दों से युक्त है।

(6) 'जीभ किरकिराना' मुहावरे का प्रयोग किया गया है।

(xiv) केदारनाथ सिंह का साहित्यिक परिचय लिखिए।

उत्तर– केदारनाथ सिंह का जन्म सन् 1934 में बलिया जिले के चकिया गाँव में हुआ। वे मूलतः मानवीय संवेदनाओं के कवि हैं। अपनी कविताओं में उन्होंने बिम्ब–विधान पर अधिक बल दिया है। केदारनाथ सिंह की कविताओं में शोर–शराबा न होकर, विद्रोह का शांत और संयत स्वर सशक्त रूप में उभरता है। अब तक केदारनाथ सिंह के सात काव्य संग्रह प्रकाशित हुए हैं– अभी बिल्कुल अभी जमीन पक रही है, यहाँ से देखो अकाल में सारस उत्तर कबीर तथा अन्य कविताएँ – बाघ, टालस्टाय और साइकिल।

कल्पना और छायावाद और आधुनिक हिंदी कविता में बिंब विधान का विकास (आलोचना), मेरे समय के शब्द तथा कब्रिस्तान में पंचायत (निबंध संग्रह), ताना–बाना (भारतीय भाषाओं का हिंदी में अनूदित काव्य संग्रह) 'अकाल में सारस' कविता संग्रह पर 1983 में साहित्य अकादमी पुरस्कार दिया गया।

5. रघुवीर सहाय – (वसंत आया / तोड़ो)

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(i) 'वसंत आया' कविता की मुख्य समस्या क्या है?

(अ) मनुष्य का प्रकृति से नाता टूटना (ब) बढ़ती हुई बेरोजगारी

(स) वसंत का न आना (द) प्रदूषण की समस्या (अ)

(ii) 'वसन्त आया' कविता में मनुष्य की किस जीवन शैली पर व्यंग्य है–

(अ) आधुनिक जीवन शैली (ब) पुरानी जीवन शैली (स) दोनों (4) इनमें से कोई नहीं (अ)

(iii) "वे नन्दन वन होवेंगे यशस्वी" पंक्ति में नन्दन वन से तात्पर्य है–

(अ) नन्द बाबा का वन (ब) सुन्दरवन (स) आनन्ददायी वन (द) जंगल (स)

(iv) 'अमुक दिन, अमुक बार मदनमहीने की होवेगी पंचमी' पंक्ति में 'मदनमहीना' से तात्पर्य है–

(अ) श्रावण (ब) मार्गशीर्ष

(स) कामदेव का महीना (वसंत) (द) इन्द्रदेव का महीना (स)

(v) मिट्टी में कौनसा रस विद्यमान होता है?

(अ) बंजरता (ब) उर्वरता (स) ऊसरता (द) बांझता (ब)

(vi) 'तोड़ो' किस प्रकार की कविता है–

(अ) निराशाजनक (ब) विनोदपूर्ण (स) हास्ययुक्त (द) उद्बोधनपरक (द)

शेखावाटी मिशन–100

(vi) ऊसर बंजर, चरती परती को तोड़कर कवि ने क्या आह्वान किया है?

(अ) नवीन सृजन का (ब) किसान बनने का (स) उद्दण्ड बनने का (द) विनाश करने का (अ)

लघुत्तरात्मक प्रश्न व दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

प्रः1 रघुवीर सहाय का साहित्यिक परिचय लिखिए–

उत्तर– जन्म – 1929 ई. में लखनऊ उत्तरप्रदेश में हुआ, शिक्षा लखनऊ में, एम.ए. अंग्रेजी साहित्य में, पेशा –पत्रकार

– प्रमुख पत्रिकाएँ – प्रतीक, कल्पना, दिनमान

– नयी कविता के प्रमुख कवि

– दूसरे सप्तक के प्रमुख कवि

– प्रमुख रचनाएँ – सीढ़ियों पर धूप में, आत्महत्या के विरुद्ध, हँसो हँसो जल्दी हँसो और लोग भूल गए है।

– साहित्य अकादमी पुरस्कार– लोग भूल गए हैं काव्य–संग्रह पर

– रघुवीर सहाय रचनावली छह खंडो में प्रकाशित हुई

– भयाक्रांत अनुभव की आवेगरहित अभिव्यक्ति उनकी कविता की प्रमुख विशेषता है।

– मृत्यु 1990 ई. में ।

प्रः2 'वसन्त आया' कविता का मूल भाव लिखिए?

उत्तर– 'वसन्त आया' कविता में कवि की प्रमुख चिन्ता यह है कि आज के मनुष्य का प्रकृति से रिश्ता टूट गया है। वसन्त ऋतु का आना अब प्रकृति निरीक्षण से नहीं कैलेण्डर से जाना जाता है। पते झड़ते हैं, फूल खिलते हैं, आम के वृक्ष बौर से लद जाते हैं, कोयल की कूक सुनाई पड़ती है। पर हमें वसन्तागमन का बोध इनसे नहीं अपितु कैलेण्डर से और वसन्त–पंचमी की छुट्टी से होता है। कवि ने आधुनिक. मानव की जीवन शैली पर करारा व्यंग्य किया है। कविताएँ पढ़ने से हमें पता चलता है कि वसन्त में ढाक के जंगल लाल फूलों से भर जाते हैं और ऐसा लगता है कि जंगल में आग लग गई है। प्रकृति से दूर होते जाना मानव के लिए अच्छा नहीं है– कवि यही बात इस कविता के माध्यम से कहना चाहता है।

प्रः3 'तोड़ो' कविता मूल प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– 'तोड़ो' एक उद्बोधनपरक कविता है। इस कविता का मूल प्रतिपाद्य यह है कि ऊसर–बंजर एवं ऊबड़–खाबड़ जमीन को उपजाऊ खेत में व्याप्त ऊब, खीज और बाधक तत्वों को तोड़कर उसे नवीन सृजन के योग्य बनाना जरूरी है। नव सृजन हेतु प्रकृति के साथ मन को भी सृजनशील बनाने का प्रयास करना चाहिए।

निबन्धात्मक, प्रश्नः–

प्रः4 निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

जैसे बहन 'दा' कहती है
ऐसे किसी बंगले के किसी तरु (अशोक?) पर कोई चिड़िया कुऊकी
चलती सड़क के किनारे लाल बजरी पर चुरमुराए पाँव तले

शेखावाटी मिशन–100

ऊँचे तकवर से गिरे

बड़े–बड़े पियराए पत्ते

कोई छह बजे सुबह जैसे गरम पानी से नहाई हो–

खिली हुई हवा आई फिरकी–सी आई चली गई।

ऐसे, फुटपाथ पर चलते–चलते–चलते।

कल मैंने जाना कि वसंत आया।

संदर्भः– यह पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक अन्तरा भाग–2 में रघुवीर सहाय द्वारा रचित 'बसन्त आया' कविता से लिया गया है।

प्रसंगः– इस कविता के माध्यम से कवि ने आज के मनुष्य की आधुनिक जीवन शैली पर व्यंग्य किया है।

व्याख्याः–कवि कहते हैं कि जैसे बहन मुझे 'दा' (दादा) कहकर पुकारती है, ठीक इसी प्रकार किसी बंगले के पास अशोक वृक्ष पर कोई चिड़िया कुकने लगी। आवागमन के कारण चहल–पहल भरी सड़क के किनारे बिछी हुई लाल बजरी पर ऊँचे–ऊँचे पेड़ों से गिरे पीले पत्ते पैरों के नीचे आने से चरमराने लगे।

सूखे पत्तों की आवाज यह घोषित कर रही थी कि वसन्त आ गया है। प्रातःकाल छः बजे हवा ऐसे लगने लगी, जैसे वह गरम पानी से नहाकर आई हो। आनन्द से खिली हुई हवा हिलोर लेती हुई आयी और फिरकी के समान घूमकर चली गई। इस प्रकार के वातावरण में फूटपाथ पर चलते हुए मैंने जाना कि वसंत ऋतु आ गई है।

भाव यह प्रकृति है कि आधुनिक जीवन शैली के कारण में प्रकृति होने वाले परिवर्तनों को हम पहचान नहीं पाते हैं सिर्फ राह चलते या आते जाते उसका आगमन जान लेते हैं।

विशेषः–(1) भाषा सरल एवं देशज (आँचलिक) शब्दों से युक्त है।

(2) मुक्त छन्द एवं बिम्ब विधान आकर्षक है।

(3) 'हवा' का मानवीकरण किया गया है।

(4) 'जैसे बहन 'दा' कहती है।' 'फिरकी–सी' आदि में उपमा अलंकार है।

(5) आधुनिक जीवन शैली पर व्यंग्य है।

शेखावाटी मिशन–100

6. तुलसीदास (भरत राम का प्रेम/पद)

वस्तुनिष्ट प्रश्न

(i) तुलसीदास द्वारा रचित 'भरत–राम का प्रेम' किस काव्य से लिया गया है?

(अ) रामचरितमानस के अयोध्या काण्ड से (ब) रामचरितमानस के बाल काण्ड से

(स) रामचरितमानस के अरण्य काण्ड से (द) रामचरितमानस के लंका काण्ड से (अ)

(ii) राम को वापस लाने के लिए भरत कहाँ गए थे–

(अ) लंका (ब) किष्किन्धा (स) चित्रकूट (द) जनकपुर (स)

(iii) 'कहब मोर मुनिनाथ निबाहा' पंक्ति में 'मुनिनाथ' शब्द प्रयुक्त हुआ है –

(अ) मुनि वशिष्ठ के लिए (ब) विश्वामित्र के लिए

(स) परशुराम के लिए (द) राम के लिए (अ)

(iv) 'मैं जानऊ निज नाथ सुभाऊ' पंक्ति में 'निज नाथ' शब्द प्रयुक्त हुआ है–

(अ) मुनि वशिष्ठ (ब) लक्ष्मण (स) राम (द)सीता (स)

(v) 'भरत–राम का प्रेम' काव्यांश में प्रयुक्त छन्द है–

(अ) गीतिका (ब) सवैया (स) कविता (द) दोहा–चौपाई (द)

(vi) 'भरत– राम का प्रेम' काव्यांश में किसकी मनोदशा का वर्णन किया गया है?

(अ) राम (ब) लक्ष्मण (स) वशिष्ठ (द) भरत (द)

(vii) 'पद' तुलसी की कौनसी रचना से लिए गए हैं–

(अ) कवितावली (ब) दोहावली (स) गीतावली (द) रामचरितमानस (स)

(viii) राम वियोग में माता कौशल्या किसे अपने हृदय से लगाती है–

(अ) धनुहियाँ (ब) पनहियाँ (स) बाजि (द) बाज (ब)

(ix) 'जननी निरखति बान धनुहियाँ' पंक्ति में 'जननी' शब्द प्रयुक्त हुआ है

(अ) माता कौशल्या के लिए (ब) माता सुमित्रा के लिए

(स) माता केकैयी के लिए (द) उपर्युक्त तीनों के लिए (अ)

(x) कवि ने माता कौशल्या के दुःख की तुलना किससे की है?

(अ) भरत से (ब) राजा दशरथ से (स) वियोगी मोरनी से (द) पथिक से (स)

(xi) माता कौशल्या किसके बहाने राम को बुलाना चाह रही है?

(अ) भरत के बहाने (ब) दर्शन के बहाने (स) घोड़ों के बहाने (द) पथिक के बहाने (स)

(xii) 'ए बर बाजि बिलोकि आपने बहुरो बनहि सिधावौ' पंक्ति में 'बाजि' शब्द प्रयुक्त हुआ है–

(अ) रथ (ब) पथिक (स) कमल (द) घोड़े (द)

(xiii) 'रहि चकि चित्र लिखी–सी' पंक्ति में प्रयुक्त अलंकार है–

(अ) रूपक (ब) उत्प्रेक्षा (स) अनुप्रास (द) उपमा (द)

शेखावाटी मिशन–100

लघुत्तरात्मक प दीर्घउत्तरात्मक प्रश्नः–

(xiv) 'भरत–राम का प्रेम' कविता में तुलसी ने राम की किन विशेषताओं की ओर संकेत किया है।

उत्तर– भरत कहने लगे कि मैं अपने प्रभु श्रीराम के स्वभाव के बारे में अच्छी तरह जानता हूँ। वे अपराधी पर भी क्रोध नहीं करते हैं, वे दयालु एवं सबसे स्नेह रखते हैं। मुझ पर उनकी विशेष कृपा है। खेल में भी वे कभी अप्रसन्न नहीं होते। उन्होने कभी बचपन में भी मेरा अहित नहीं किया। वे अपने परिवारजनों के प्रति अपार स्नेह रखते हैं

(xv) 'महीं सकल अनरथ कर मूला,' पंक्ति के आधार पर भरत की मनोदशा का वर्णन कीजिए।

उत्तर – भरत समस्त अनर्थों की जड़ अपने को मानते हैं। वे कहते हैं कि पुत्र–मोह के कारण माता कैकेयी द्वारा राम को वनवास देना, राजा दशरथ का असामयिक निधन ये सब अनर्थ उनके कारण से ही हुए। आत्मग्लानि के साथ भरत कहते हैं कि श्रीराम तो अपराधियों पर भी क्रोध नहीं करते। अर्थात वे मुझे क्षमा कर देंगे और मेरा मन रखने के लिए वापस लौट आयेंगे।

(xvi) भरत का आत्म – परिताप उनके चरित्र के किस उज्ज्वल पक्ष की ओर संकेत करता है?

उत्तर– भरत का आत्म–परिताप इस बात का घोतक है कि वे साधु स्वभाव के हैं और राम के प्रति अगाध स्नेह रखते हैं। उनकी माता कैकेयी ने जो कुछ किया उसमें उनकी कोई सहभागिता नहीं है और राम को वनगमन में जो भी कष्ट उठाने पड़ रहे हैं उसके लिए वे स्वयं को दोषी मान रहे हैं।

(xvii) राम के वनगमन पश्चात माँ कौशल्या की मनःस्थिति का वर्णन तुलसी के पदों के आधार पर कीजिए।

उत्तर – राम के वनगमन के बाद माता कौशल्या उनके द्वारा प्रयुक्त धनुष–बाण, उनकी जूतियाँ देखकर वात्सल्य वियोग का अनुभव करती है और राम का स्मरण करती हुई उनकी यादों में खो जाती है। उनका वनगमन भूल जाती है और सुबह उनके कक्ष में जाकर उन्हे जगाती है। अचानक राम का वनगमन याद आता है तो वे जड़वत हो जाती है।

(xviii) गीतावली से संकलित पद 'राघौ एक बार फिरि आवौ' में निहित करुणा और संदेश को अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– 'राधौ एक बार फिरि आवौ' पद से यह व्यक्त होता है कि माता कौशल्या राम के वियोग में अत्यन्त व्याकुल है। वह यह कहती है कि तुम्हारे प्रिय घोड़े तुम्हारे चले जाने से दुखी है, एक बार उन्हे अपने दर्शन दे दो, पर वास्तविकता यह है कि घोडों के बहाने वह स्वयं राम को देखने के लिए व्याकुल है। इस पद में राम का पशु प्रेम, उनके ह्रदय की करुणा के साथ–साथ माता कौशल्या का वात्सल्य भाव भी व्यक्त हुआ है।

(xix) निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

भरत सौगुनी सार करत हैं अति प्रिय जानि तिहारे।
तदपि दिनहिं दिन होत झाँवरे मनहुँ कमल हिममारे।

उत्तर– (1) **भावपक्ष–**

माता कौशल्या पथिक के माध्यम से राम को वन में सन्देश भेजती हुई कहती हैं कि तुमने प्रेम से जिन घोड़ों को पाला–पोसा है वे तुम्हे देखने के लिए व्याकुल हैं। यद्यपि भरत उनकी पूरी देखभाल करते हैं परन्तु वे दिन–दिन उसी प्रकार दुर्बल होते जा रहे हैं जिस प्रकार पाला पड़ने से कमल मुरझाता जाता है।

शेखावाटी मिशन–100

(2) कलापक्षः–

ब्रजभाषा का सुन्दर प्रयोग हुआ है। तुकान्त छन्द के साथ–साथ इस पंक्ति में बिम्ब विधान की क्षमता भी है। 'सौगुनी सार' 'दिनहि दिन' में अनुप्रास व 'मनहुँ कमल हिममारे' में उत्प्रेक्षा अलंकार है।

(xx) तुलसीदास का साहित्यिक परिचय लिखिए।

उत्तर– तुलसीदास का जन्म सन् 1532 में हुआ। तुलसी लोकमंगल की साधना के कवि है। उन्हें समन्वय का कवि भी कहा जाता है। उनके काव्य में विश्व बोध और आत्मबोध का अद्वितीय समन्वय हुआ है। उनके साहित्य में मानव–प्रकृति और जीव–जगत सम्बंधी गहरी अन्तरदृष्टि और व्यापक जीवनानुभव परिलक्षित होता है। अवधी और ब्रजभाषा में उन्होने लेखन किया है। तुलसी की रचनाओं में भाव, विचार, काव्यरूप, छंद–विवेचन और भाषा की विविधता मिलती है। तुलसी सही अर्थों में लोककवि हैं।

प्रमुख काव्य कृतियाँः–

रामचरित मानस विनय पत्रिका, गीतावली, कवितावली, दोहावली, श्रीकृष्ण गीतावली, रामलला नहछू, बरवै रामायण, जानकी मंगल पार्वती मंगल, वैराग्य संदीपनी, रामाज्ञा प्रश्नावली।

7. मलिक मुहम्मद जायसी – (बारहमासा)

वस्तुनिष्ठ प्रश्नः–

(i) जायसी ने 'बारहमासा' की शुरुआत किस माह से की है

(अ) आषाढ़ (ब) फाल्गुन (स) कार्तिक (द) अगहन (अ)

(ii) कविता बारहमासा में किन महीनों का वर्णन है।

(अ) अगहन (ब) पूस, माघ (स) फागुन (द) उपर्युक्त सभी (द)

(iii) प्रेमाख्यान परंपरा का सर्वश्रेष्ठ काव्य है–

(अ) अखरावट (ब) पद्मावत (स) आखिरी कलाम (द) उपर्युक्त तीनों (ब)

(iv) जायसी भक्तिकाल की किस शाखा के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं–

(अ) ज्ञानमार्गी शाखा (ब) प्रेममार्गी शाखा (स) कृष्ण मार्गी शाखा (द) राममार्गी शाखा (ब)

(v) 'बारहमासा' काव्यांग की काव्यशैली हैः–

(अ) चित्रात्मक शैली (ब) बिम्बात्मक शैली (स) दौहा–चौपाई शैली (द) प्रतीकात्मक शैली (स)

(vi) जायसी ने 'बारहमासा' काव्यखण्ड में किस भाषा को अपनाया है?

(अ) ब्रजभाषा (ब) मैथिली भाषा (स) अवधी भाषा (4) भोजपुरी (स)

(vii) 'अगहन देवस घटा निसि बाढी' पंक्ति में 'अगहन' से क्या तात्पर्य है?

(अ) कार्तिक मास (ब) पोष मास (स) फाल्गुन मास (द) मार्गशीर्ष मास (द)

शेखावाटी मिशन–100

(viii) 'जानहु सेज हिवंचल बूढ़ी' पंक्ति में प्रयुक्त अलंकार है–

(अ) अन्योक्ति (ब) विरोधाभास (स) उत्प्रेक्षा (द) उपमा (स)

(ix) 'केहिक सिंगार को, पहिर पटोरा' पंक्ति में 'पटोरा' का शाब्दिक अर्थ है–

(अ) रेशमी वस्त्र (ब) सूती वस्त्र (स) ऊनी वस्त्र (द) उपर्युक्त सभी (अ)

(x) 'बारहमासा' काव्यखण्ड का प्रमुख रस है–

(अ) वीर रस (ब) संयोग श्रृंगार रस

(स) रोद्र रस (द) विप्रलम्भ श्रृंगार रस (द)

(xi) 'बारहमासा' काव्यांश में किसकी विरह–व्यथा का वर्णन है–

(अ) पद्मावती (ब) रत्नसेन (स) नागमती (द) कर्णवती (स)

(xii) फागुन के महीने में जोड़ी बनाकर सखियाँ कौनसा खेल खेल रही थी?

(अ) घूमर (ब) चकरी (स) चरी (द) चाँचरि (द)

(xiii) सिंहल देश की राजकुमारी पद्मावती और चितौड़ के राजा रत्नसेन की प्रेम कथा आधारित ग्रन्थ है–

(अ) अखरावट (ब) पद्मावत (स) आखिरी कलाम (स) इनमें से कोई नहीं (ब)

(xiv) अगहन मास में विरहिणी नायिका की व्यथा–कथा का चित्रण अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर– अगहन के महीने में ठण्ड बढ़ गई है, नागमती दुर्बल हो गई है और विरह वेदना रात की तरह बड़ी हो गई है। प्रिय के वियोग में राते कटती नहीं है। नागमती का रुप–सौंदर्य तो प्रिय अपने साथ ले गया । यदि वह अब भी लौट आवे तो उसका रूप रंग भी वापस आ जायेगा। अपने प्रिय के पास सन्देश भिजवाती हुई वह कौए और भौंर से कहती है कि तुम जाकर उनसे कह देना कि तुम्हारी पत्नी तुम्हारे विरह की आग में जलकर मर गई और उसके शरीर से जो धुआँ निकला उसी से हम काले हो गए।

(xv) माघ महीने में नायिका के विरह का चित्रण अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर– माघ महीने में पाला पड़ने लग गया है जिससे विरहिणी नायिका के लिए विरह का समय और कठिन हो गया है। जाड़े की ऋतु में जैसे वर्षा (मावट) होती है वैसे ही नायिका की आँखों से गिरने वाले आँसु उसके शरीर से लगते हैं तो उसे तीर की सी चुभन का अहसास होता है। प्रियतम पास नहीं है, तो वह न श्रृंगार करना चाहती और न ही रेशमी वस्त्र धारण करना चाहती। विरह के कारण से वह धागे की भाँति पतली हो गई है जिससे उसके गले में हार भी नहीं टिकता। नायिका कहती है कि हे प्रियतम यह विरह की पीड़ा उसे जलाकर मार डालना चाहती है।

(xvi) फाल्गुन मास में नागमती की हे विरह वेदना का वर्णन कीजिए।

उत्तर – फागुन के महीने में पवन झकोरों के साथ बहने लगा है जिससे सर्दी अत्यधिक बढ गई है। नायिका का शरीर पीले पत्तों की भाँति पीला पड़ गया है। समस्त वनस्पति प्रसन्न है पर नायिका प्रियतम के विरह में होली के समान जल रही है। सभी लोग फाग खेल रहे है पर नायिका को विरह के कारण कुछ भी अच्छा नहीं लगता । विरह की अधिकता इतनी है कि नायिका अपने शरीर की राख बन जाने के बाद भी प्रियतम का सानिध्य पाना चाहती है।

शेखावाटी मिशन–100

(xvii) काव्य सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए।

पिय सौं कहेहु सँदेसड़ा, ऐ भँवरा ऐ काग।
सो धनि बिरहें जरि मुई, तेहिक धुआँ हम लाग।।

उत्तर– **(1) भाव सौन्दर्य –**

विरहिणी नायिका नागमती भौर और कौए के माध्यम से अपने प्रियतम को सन्देश देती है कि तुम्हारी पत्नी विरह की आग में जलकर मर गई है। उसके जलने के धुएँ से ही भौरे और कौए का शरीर काला हो गया है।

(2) शिल्प सौंदर्य –

दोहा छन्द, अतिशयोक्ति और अनुप्रास अलंकार है। भौरे द्वारा सन्देश भेजने की दूत–परम्परा विप्रलम्भ शृंगार रस और अवधी भाषा का सुन्दर प्रयोग किया गया है।

(xviii) निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसँग व्याख्या कीजिए।

पूस जाड़ थरथर तन काँपा। सुरुज जड़ाई लंक दिसि तापा ।।
बिरह बाढि या दारुन सीऊ। कँपि कँपि मरौं लेहि हरि जीऊ।।।
कंत कहाँ हौं लागौं हियरे। पंथ अपार सूझ नहिं नियरे।।
सौर सुपेती आवै जूड़ी। जानहुँ सेज हिवंचल बूढी।।
चकई निसि बिछुड़े दिन मिला। हौं निसि बासर बिरह कोकिला।।
रैनि अकेलि साथ नहिं सखी। कैसें जिऔं बिछोही पँखी।।
बिरह सचान भँवै तन चाँड़ा। जीयत खाइ मुएँ नहिं छाँड़ा ।।
रकत ढरा माँसू गरा, हाड़ भए सब संख।
धनि सारस होई ररि मुई, आइ समेटहु पंख।।

उत्तर– **संदर्भ –** प्रस्तुत काव्यांग हमारी पाठ्यपुस्तक अन्तरा भाग –2 में मलिक मुहम्मद जायसी द्वारा रचित 'पद्मावत' के 'बारहमासा' खण्ड से लिया गया है।

प्रसंग– जायसी ने इस पद्यांश में पोष महीने की बढ़ती हुई सर्दी से प्रभावित नागमती की विरह वेदना का वर्णन किया है।

व्याख्या– विरहिणी नागमति कहती है कि पूस के महीने में शीत की अधिकता के कारण शरीर थर–थर काँप रहा है। सर्दी की अधिकता से डरकर सूर्य भी लंका की दिशा में जाकर तपने लगा है। विरह की बाढ आ गई है और शीत अत्यधिक कठिन हो गया है। सर्दी से काँप–काँप कर मैं मरी जा रही हूँ। नागमती कहती है कि हे प्रियतम! तुम कहाँ हो, आकर मेरे सीने से लग जाओं। प्रिय तक पहुंचने का रास्ता बहुत लंबा है और वे कहीं आस–पास दिखाई ही नहीं देते। रजाई ओढने पर भी जाड़ा लगता है और ऐसे लगता है जैसे सेज बर्फ से ढकी हुई हो। मेरी स्थिति तो उस चकई से भी बदतर हो गई है जो रात में अपने प्रियतम से बिछुड़ने के बाद दिन में मिल लेती है किन्तु मैं तो रात–दिन कोयल की भाँति विरह में पिय–पिय कूकती रहती हूँ। रात में भी सखियों के अभाव में अकेली रहती हुँ। विछुड़े हुए पंछी की भाँति मैं कैसे जीवित रह सकती हूँ। विरह तो बाज पक्षी, बना हुआ है जो जीते जी मुझे खाए जा रहा है और मरने के बाद

शेखावाटी मिशन–100

भी नहीं छोड़ेगा।

अन्त में नागमती कहती है कि विरह के कारण मेरे शरीर का रक्त बह गया है, माँस गल गया है और हड्डियाँ सूखकर शंख के समान हो गई है। यह विरहिणी सारस की भाँति चीख पुकार करके मर गई है। अब तो प्रियतम आकर इसके पंखों अर्थात् अवशेषों को ही समेटेगा।

विशेष–

(1) भाषा अवधी, दौहा– चौपाई छन्द तथा विप्रलम्भ शृंगार रस का प्रयोग हुआ है।

(2) 'सर्दी से बचने के लिए सूर्य दक्षिण दिशा में चला गया' कहकर सर्दी की अधिकता बताई है।

(3) नागमति के विरह का मार्मिक चिन्त्रण है।

(4) 'विरह सचान', 'विरह कोकिला' में रूपक अलंकार और 'धनि सारस होई ररि मुई' में उपमा अलंकार है।

(5) 'सुरुज जड़ाई लंक दिसि तापा' में उत्प्रेक्षा, अन्तिम पंक्तियों में अतिशयोक्ति व अनेक जगह अनुप्रास अलंकार द्रष्टव्य है।

(xix) मलिक मुहम्मद जायसी का साहित्यिक परिचय लिखिए।

उत्तर– जायसी का जन्म सन् 1492 में अमेठी (उ.प्र.) के निकट जायस नामक जगह पर हुआ। जायसी सूफी प्रेगमार्गी शाखा के सर्वश्रेठ कवि माने जाते हैं और उनका 'पद्मावत' प्रेमाख्यान परम्परा का सर्वश्रेष्ठ प्रबंधकाव्य है। फारसी की मसनवी शैली में रचित इस काव्य रचना के लिए दोहा–चौपाई शैली अपनाई है। भाषा उनकी ठेठ अवधी और काव्य–शैली अत्यंत प्रौढ और गंभीर है। 'पद्मावत' ही जायसी की ख्याति का प्रमुख आधार है उनके अन्य ग्रन्थ है– अखरावट और आखिरी कलाम।

8. विद्यापति – (पद)

वस्तुनिष्ठ प्रश्नः–

(i) विद्यापति के पद किस भाषा में रचित है–

(अ) ब्रज (ब) मैथिली (स) अवधी (द) खड़ी बोली (ब)

(ii) 'गोकुल तजि मधुपुर बस रे' पंक्ति में श्रीकृष्ण गोकुल छोड़कर कहाँ बस गये है?

(अ) मथुरा (ब) आगरा (स) द्वारका (द) वृदावन (अ)

(iii) कवि ने नायिका के प्रियतम की किस महीने में आने की संभावना व्यक्त की है?

(अ) मार्गशीर्ष (ब) सावन (स) भाद्रपद (द) कार्तिक (द)

(iv) "कुसुमित कानन हेरि कमलमुखि मुदि रहए दु नयान" पंक्ति के आधार पर नायिका अपने नेत्र बन्द कर लेती है–

(अ) नायक को देखकर (ब) भौरो को देखकर (स)

(स) वन प्रदेश के फूलों को देखकर (द) कोयल को देखकर

(v) कोयल और भौरों की आवाज सुनकर नायिका की प्रतिक्रिया हुई–

(अ) हाथों से कान बन्द कर लिये (ब) आँखे बन्द कर ली

(स) प्रियतम से मिलने चली गई (द) वह अत्यन्त दुःखी हुई (अ)

शेखावाटी मिशन–100

(vi) विरह में राधा का शरीर किसके समान क्षीण होता जा रहा है?

(अ) द्वादशी के चन्द्रमा के समान (ब) त्रयोदशी के चन्द्रमा के समान

(स) चतुर्दशी के चन्द्रमा के सम्मान (द) इनमें से कोई नहीं (स)

(vii) रानी लाखिमा देवी पर मुग्ध होकर रमण कर रहें हैं–

(अ) राजा रत्नसिंह (ब) राजा मानसिंह (स) राजा जयसिंह (द) राजा शिवसिंह (द)

(viii) विद्यापति किस राजा के अभिन्न मित्र, राजकवि और सलाहकार थे?

(अ) मिथिला नरेश राजा जनक (ब) मिथिला नरेशराजा शिवसिंह

(स) बूँदी नरेश छत्रसाल (द) बूँदी नरेश बुधसिंह (ब)

(ix) "धरनी धरि धनि कत बेरी बइसइ, पुनि तहि उठइ न पारा" पंक्ति में प्रयुक्त अलंकार है–

(अ) अनुप्रास (ब) अतिश्योक्ति (स) उपर्युक्त दोनों (द) इनमें से कोई नहीं (स)

(x) "तोहर बिरह दिन छन–छन तनु छिन–चौदसि–चाँद समान उपर्युक्त पंक्ति में अलंकार है–

(अ) पुनरूक्तिप्रकाश (ब) उपमा (स) अनुप्रास (द) उपर्युक्त सभी (द)

(xi) आदिकाल और भक्तिकाल के संधिकवि माने जाते है–

(अ) तुलसीदास (ब) विद्यापति (स) जायसी (द) घनानन्द (ब)

लघुतरात्मक व दीर्घउत्तरात्मक प्रश्नः–

(xii) प्रियतमा के दुःख के क्या कारण है?

उत्तर – प्रियतमा इसलिए दुखी है क्योंकि उसके प्रियतम पास नहीं है। सावन के महीने को नायक के बिना काट पाना उसके लिए कठिन हो रहा है। प्रियतम के बिना एकाकी भवन उसे काटने को दौड़ता है। नायक विरहिणी नायिका का मन अपने साथ हरण करके ले गए। वह सखी से कहती है कि मेरे दुख की मेरी पीड़ा को भला दूसरा कैसे जान सकता, इसे तो वही जान सकता है जिसने विरह का दुःख झेला हो। इस प्रकार प्रियतमा के दुःख का मूल कारण है प्रियतम का परदेश गमन जिससे उसे विरह का दुःख झेलना पड़ा।

(xiii) 'जनम अवधि हम रूप निहारल नयन न तिरपित भेल' उक्त पंक्ति के आधार पर विद्यापति की नायिका की मनोदशा का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर– नायक को सदैव देखते रहने के बाद भी विरहिणी नायिका के नेत्र तृप्त नहीं होते। वह हमेशा उसे ही देखते रहना चाहती है। सखी ने जब नायिका से प्रेम के अनुभव के बारे में पूछा तो नायिका ने कहा कि प्रेम में सदा अतृप्ति रहती है। यह अतृप्ति ही प्रेम की पहचान है। नायिका के मन में नायक के रूप दर्शन की लालसा है। कवि इस पंक्ति के माध्यम से यही व्यक्त करना चाहता है।

(xiv) 'सेह पिरिति अनुराग बखानिअ तिल तिल नूतन होए।' पंक्ति से लेखक का क्या आशय है?

उत्तर– नायिका अपने प्रियतम के प्रेम का जब–जब वर्णन करती है तब–तब उसमें नवीनता और ताजगी दिखाई देती है। कवि के अनुसार वही प्रेम और अनुराग वर्णन करने योग्य है जिसमें क्षण–क्षण नवीनता का अनुभव हो। प्रेम की एक विशेषता

शेखावाटी मिशन–100

है, नित नवीनता। इसी प्रकार जिस प्रीति में कभी पुरानापन न आये, जो सदैव नयी–नयी सी लगे, वही प्रीति बखानने योग्य है।

निबन्धात्मक प्रश्नः–

(xv) निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

कुसुमित कानन हेरि कमलमुखि,
मूदि रहए दु नयान।
कोकिल–कलरव, मधुकर–धुनि सुनि,
कर देई झाँपइ कान।।
माधव, सुन–सुन बचन हमारा।
तुअ गुन सुंदरि अति भेल दूबरि–
गुनि–गुनि प्रेम तोहारा।।
धरनी धरि धनि कत बेरि बइसइ,
पुनि तहि उठइ न पारा।
कातर दिठि करि, चौदिस हेरि–हरि
नयन गरए जल–धारा ।।
तोहर बिरह दिन छन–छन तनु छिन–
चौदसि – चाँद समान।
भनई विद्यापति सिबसिंह नर–पति
लाखिमादेइ–रमान।।

शेखावाटी

उत्तर– **संदर्भ–** प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठयपुस्तक अन्तरा भाग–2 में विद्यापति द्वारा रचित 'पद' से लिया गया है।

प्रसंग– विरहिणी नायिका की विरह दशा के बारे में बताती हुई कोई सखी श्रीकृष्ण से कहती है कि वह अत्यन्त दुर्बल हो गई है और धरती पर बैठ जाये तो पुनः उठ भी नहीं पाती है।

व्याख्या– दूती ने जाकर श्रीकृष्ण से कहा – हे कृष्ण ! तुम्हारे विरह में राधा अत्यन्त व्याकुल हो रही है। वह कमल मुखी जब वन प्रदेश के फूलों को देखती है तो दोनो नेत्र बन्द कर लेती है और जब कोयल की मधुर कूक और भौरों का गुंजार सुनती है तो दोनों हाथों से अपने कान बन्द कर लेती है। तुम्हारे गुणों और प्रेम के बारे में सोच–सोचकर वह सुन्दरी अत्यन्त दुर्बल हो गई है। वह नायिका धरती को पकड़–पकड़कर कितनी ही बार बैठ जाती है और पुनः उठ भी नहीं पाती। वह कातर दृष्टि से चारों दिशाओं में देखती रहती है और आँखों से आँसुओं की धारा बहती रहती है। तुम्हारे विरह में उसका शरीर उसी प्रकार क्षीण होता जा रहा है जिस प्रकार चतुर्दशी का चाँद क्षीण होता है। कवि विद्यापति कहते हैं कि राजा शिवसिंह अपनी पत्नी लखिमादेवी के साथ रमण करते हैं।

विशेष – (1) इस पद में कोमलकान्त पदावली युक्त मैथिली भाषा का प्रयोग हुआ है।

(2) विरह की तीव्रता का मार्मिक वर्णन है।

(3) 'कमलमुखि, चौदसि चाँद समान' में उपमा अलंकार, 'धरनी धरि .... उठइ न पारा' में अतिशयोक्ति अलंकार है।

(4) अनेक जगह पुनरुक्ति प्रकाश व अनुप्रास अलंकारों का प्रयोग दृष्टव्य है।

(5) गेय छन्द, वियोग श्रृंगार रस व माधुर्य गुण का प्रयोग हुआ है।

(xvi) विद्यापति का साहित्यिक परिचय दीजिए।

उत्तर– विद्यापति का जन्म सन् 1380 ई. में हुआ। वे भक्ति और श्रृंगार के कवि हैं। उनके काव्य में प्रेम और सौंदर्य की जैसी अनुभूति हुई है वैसी अन्यन्त दुर्लभ है। विद्यापति का संस्कृत, अवहट्ट (अपभ्रंश) तथा मैथिली पर पूरा अधिकार था। उन्हें मैथिल कोकिल और अभिनय जयदेव कहा जाता है। लौकिक प्रेम के विभिन्न रूपों का चित्रण स्तुति–पदों में विभिन्न देवी देवताओं का चित्रण, प्रकृति की मनोहर छवि, और नख–शिख वर्णन उनके काव्य के मुख्य विषय है। मिथिला क्षेत्र के लोक व्यवहार में उनके पद इतने रच–बस गये हैं कि पदों की पंक्तियाँ बन गई है। वे आदिकाल और भक्तिकाल के संधि कवि कहे जाते हैं।

उनकी मुख्य काव्य कृतियाँ हैं– कीर्तिलता, कीर्तिपताका (अवहट्ट में रचित), पदावली (मैथिली में रचित), पुरुष परीक्षा, परिक्रमा, लिखनावली।

9. घनानन्द (कवित)

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

(i) घनानंद मूलतः–

(अ) प्रेम की पीड़ा के कवि हैं (ब) सम्प्रदाय सापेक्ष कृष्ण–भक्त है

(स) विशुद्ध श्रृंगारी कवि हैं (द) राष्ट्र प्रेम के ओजस्वी भाव के कवि है (अ)

(ii) रीतिकाल की रीतिमुक्त काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि माने जाते हैं–

(अ) घनानन्द (ब) विद्यापति (स) तुलसीदास (द) जायसी (अ)

(iii) घनानन्द दिल्ली के किस बादशाह के मीर मुंशी थे ?

(अ) औरंगजेब (ब) जहाँगीर (स) मुहम्मद शाह (द) शाहजहाँ (स)

(iv) घनानन्द की प्रेमिका थी –

(अ) मरवण (ब) मृगावती (स) सुजान (द) मधुमालती (स)

(v) वृंदावन जाने के बाद घनानन्द किस सम्प्रदाय में दीक्षित हुए–

(अ) श्री सम्प्रदाय (ब) वल्लभ सम्प्रदाय (स) ब्रह्म सम्प्रदाय (द) निंबार्क सम्प्रदाय (द)

(vi) कवि घनानन्द के प्राण किसमें अटके हुए हैं?

(अ) बादशाह के दर्शन के लिए (ब) सुजान के दर्शन के लिए

(स) ईश्वर के दर्शन के लिए (द) इनमें से कोई नहीं (ब)

(vii) "अब ना घिरत <u>घन आनन्द</u> निदान को" रेखांकित पद में अलंकार है–

शेखावाटी मिशन–100

(अ) यमक (ब) श्लेष (स) अन्योक्ति (द) सन्देह (ब)

(viii) 'आनाकानी आरसी निहारिबो करौगे कौलौं।' रेखांकित पद का प्रतीकार्थ है–

(अ) सीसा (ब) दर्पण

(स) आलसी (द) अंगूठे में पहना जाने वाला शीशा जड़ा आभूषण (द)

(ix) "कुकभरी मूकता बुलाय आप बोलिहै।" पंक्ति में अलंकार है–

(अ) मानवीकरण (ब) सन्देह (स) विरोधाभास (द) भ्रांतिमान (स)

(x) 'प्रेम की पीर' के कवि माने जाते हैं–

(अ) घनानन्द (ब) जायसी (स) विद्यापति (द) निराला (अ)

लघुत्तरात्मक व दीर्घउत्तरात्मक प्रशन

(xi) कवि मौन होकर प्रेमिका के कौनसे प्रण पालन को देखना चाहते हैं?

उत्तर– कवि मौन होकर प्रेमिका के उपेक्षा के प्रण को देखना चाहते हैं। प्रेमिका शीशा या अँगूठी के नगीने को देखकर प्रियतम की तरफ देखना ही नहीं चाहती। वह कानों में रूई डालकर नायक की उपेक्षा कर रही है। कवि यह देखना चाहते हैं कि इस तरह का बहाना बनाकर कब तक उसकी उपेक्षा करती है।

(xii) 'घनानन्द वियोग के कवि हैं।' पठित पदों के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– कवि घनानन्द सूजान से प्रेम करते थे परन्तु सुजान ने उनसे बेवफाई की जिस कारण से उनका हृदय वियोग वेदना से ओत–प्रोत हो गया। इसलिए उसकी यादों में सुजान चरित काव्य की रचना की इनकी रचनाओं का आधार सुजान है। अतः उन्हे वियोग वेदना का कवि माना जाता है। इनकी कविता में प्रिय की निष्ठुरता का, अपनी व्याकुलता का, प्रिय के दर्शन की लालसा का व प्रिय के सौन्दर्य का मार्मिक चित्रण किया गया है।

निबन्धात्मक प्रश्न

(xiii) निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

बहुत दिनान को अवधि आसपास परे,
खरे अरबरनि भरे हैं उठि जान को।
कहि कहि आवन छबीले मनभावन को
गहि गहि राखति ही दै दै सनमान को।
झूठी बतियानि की पत्यानि तें उदास ह्वै कै,
अब ना घिरत घन आनंद निदान को।
अधर लगे हैं आनि करि के पयान प्रान,
चाहत चलन ये सँदेसो लै सुजान को।।

उत्तर –**संदर्भ** – यह पद्यांश हमारी पाठय पुस्तक अन्तरा भाग–2 में घनानंद द्वारा रचित 'कवित' शीर्षक से लिया गया है।

प्रसंग – इसमें कवि ने अपनी प्रेमिका सुजान के दर्शन की लालसा प्रकट करते हुए कहा है कि सुजान के दर्शन के

शेखावाटी मिशन–100

लिए ही ये प्राण अब तक अटके हुए है।

व्याख्या– कवि घनानन्द सुजान को लक्ष्य कर कहते हैं कि अब तो बहुत दिन हो गए हैं मेरे प्राण आपके दर्शन की लालसा में ही अटके हुए हैं। अन्यथा कब के शरीर छोड़कर निकल गये होते। आपके आने की अवधि बीत गई पर ये निरन्तर आपका इन्तजार करते रहते हैं। जैसे ही आपके आने की अवधि पास आती है मेरे ये प्राण आपके दर्शन की लालसा से छटपटाने लगते हैं और इनकी व्याकुलता बढ़ जाती है। छैल छबीली प्रिया सुजान से कई बार आने को कहा पर वह नहीं आयी। कवि कहते हैं कि हे मनभावन सुजान अब आकर तो मेरे सम्मान को बचा लो। मैं तुम्हारी झूठी और विश्वास न करने योग्य बातों पर विश्वास करके उदास हूँ। अब तो घना आनन्द देने वाले बादल भी नहीं घिरते जिससे मुझे तृप्ति मिल सके। अब स्थिति यह हो गई है कि मेरे प्राण प्रयाण करने के लिए अधरों तक आने लगे हैं। मेरे प्राण सुजान का सन्देश लेकर जाना चाहते है, इसी आशा में से अटके हुए हैं नहीं तो कभी के निकल गए होते ।

विशेषः–(1) सरस और भावपूर्ण ब्रजभाषा का प्रयोग हुआ है।

(2) प्रियतम के दर्शन की लालसा व निश्छल प्रेम की अभिव्यक्ति हुई है।

(3) 'घन आनंद' में श्लेष अलंकार, 'कहि कहि', 'गहि गहि', 'दै दै' आदि में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।

(4) 'अवधि आसपास', 'पयान प्रान' 'चाहत चलन' आदि में अनुप्रास अलंकार द्रष्टव्य है।

(5) कवित छन्द, वियोग शृंगार रस है।

(xiv) कवि घनानन्द का साहित्यिक परिचय लिखिए।

उत्तर– घनानंद का जन्म 1673 ई. में हुआ। वे रीतिकाल की रीतिमुक्त काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि थे। घनानंद मूलतः प्रेम की पीड़ा के कवि हैं। वियोग वर्णन में उनका मन आधिक रमा है। उनकी रचनाओं में प्रेम का अत्यन्त गंभीर, निर्मल, आवेगमय, और व्याकुल कर देने वाला उदात्त रूप व्यक्त हुआ है इसलिए उन्हें साक्षात रसमूर्ति कहा गया है। उनकी कविता में लाक्षणिकता, वक्रोक्ति, वाग्विद्ग्धता के साथ अलंकारों का कुशल प्रयोग मिलता है। घनानन्द की भाषा परिष्कृत और साहित्यिक ब्रजभाषा है। वस्तुतः वे ब्रजभाषा प्रवीण ही नहीं सर्जनात्मक काव्यभाषा के प्रणेता भी थे

प्रमुख काव्य रचनाएँ– सुजान सागर, विरह लीला, कृपाकंड निबंध, रसकेलि वल्ली आदि प्रमुख हैं।

अन्तरा भाग–2 (गद्य खण्ड)

रामचंद्र शुक्ल (प्रेमधन की छाया स्मृति)

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

प्र:1 रामचन्द्र शुक्ल की कीर्ति का अक्षय स्रोत किस ग्रंथ को माना जाता है?

(अ) गोस्वामी तुलसीदास (ब) हिन्दी साहित्य का इतिहास

(स) चिन्तामणि (द) रस मीमांसा (ब)

प्र:2 प्रेमधन का पूरा नाम क्या है?

(अ) बदरी नारायण चौधरी (ब) वैद्यनाथ मिश्र (अ)

शेखावाटी मिशन–100

(स) भारतेंदु हरिश्चंद्र (क) इलाचन्द्र जोशी

प्र:3 "खम्भा टेकि खड़ी जैसे नारि मुगलाने की" यह पंक्ति किसने किसके बारे में लिखी? (ब)

(अ) शुक्ल जी में चौधरी साहब के बारे में (ब) वामनाचार्य गिरि ने चौधरी साहब के बारे में

(स) चौधरी साहब ने शुक्ल के बारे में (द) शुक्ल जी ने भारतेंदु जी के बारे में

प्र:4 'प्रेमघन की स्मृति छाया' पाठ में 'मिर्जापुर' शब्द का क्या अर्थ लिया गया है?

(अ) सरस्वती नगर (ब) यमुनानगर (स) लक्ष्मीपुर (द) अलीपुर (स)

प्र:5 समवयस्क हिन्दी प्रेमियों में कौनसे लेखक सम्मिलित नहीं थे

(अ) पं. लक्ष्मीनारायण चौबे (ब) बद्रीनाथ गौड़

(स) बद्रीनारायण चौधरी (द) पं. उमाशंकर द्विवेदी **(स)**

प्र:6 बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' के व्यक्तित्व की विशेषता नहीं है–

(अ) वे खानदानी रईस थे (ब) वे अपने सम्पूर्ण कार्य स्वयं करते थे

(स) वे कवि हृदय के साथ बोलने में वक्र थे (द) वे नागरी भाषा के कटर समर्थक थे **(ब)**

प्र:7 'अरे! ! जब फूट जाई तबै चलत आवह' कथन से चौधरी साहब की किस मनोवृति का आभास होता है।

(अ) वे आलसी थे (ब) वे स्वावलम्बी थे

(स) वे रईसी प्रकृति के थे (द) वे नौकरों पर आश्रित नहीं थे **(स)**

प्र:8 मिर्जापुर में भारतेन्दु हरिशचन्द्र के परम मित्र कौन रहते थे?

(अ) बदरीनारायण चौधरी (ब) उमाशंकर द्विवेदी

(स) लक्ष्मी नारायण चौबे (द) बद्रीनाथ गौड़ **(अ)**

लघुतरात्मक प्रश्न–(40 शब्द)

प्र:1 उपाध्याय बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमधन' की पहली झलक लेखक ने किस प्रकार देखी?

उत्तर– लेखक मिर्जापुर में नगर से बाहर रहते थे। वहीं उन्हें पता चला कि भारतेन्दु जी के मित्र उपाध्याय चौधरी प्रेमधन रहते है। डेढ़ मील का सफर तय करके सभी बालक एक मकान के नीचे पहुँचे। प्रेमधन से मिलने की योजना बनाई गई । उन बालको को एकत्रित किया गया जो चौधरी साहब के मकान से परिचित थे । उन्हें आगे किया गया। नीचे का बरामदा खाली था ऊपर का बरामदा लताओं के जाल से आवृत्त था। लेखक ने ऊपर की ओर देखा। काफी देर बाद लताओं के बीच एक मूर्ति खड़ी दिखाई दी।– ये ही चौधरी प्रेमधन थे उनके दोनों कंधों पर बाल बिखरे हुए थे देखते ही देखते यह मूर्ति दृष्टि से ओझल हो गई। यही बदरीनारायण चौधरी की पहली झलक थी जो लेखक ने देखी ।

प्र:2 'निस्संदेह' शब्द को लेकर लेखक ने किस प्रसंग का जिक्र किया है?

उत्तर– लेखक अपनी समवयस्क मित्र–मंडली में हिन्दी के नए–पुराने लेखकों की चर्चा किया करता था। इस चर्चा में 'निस्संदेह' इत्यादि शब्द आया करते थे, जबकि जिस स्थान पर लेखक रहता था, वहाँ अधिकतर वकील, मुख्तार तथा कचहरी में काम करने वाले अफसर और अमले रहते थे। ये लोग उर्दू को तरहीज देते थे अतः उनके कानों को हम लोगों की हिन्दी

शेखावाटी मिशन–100

कुछ अटपटी और अनोखी लगती थी। इसलिए उन्होंने लेखक की मित्र मंडली का नाम 'निस्संदेह लोग' रख लिया था।

प्र:3 लेखक ने अपने पिताजी की किन–विशेषताओं का उल्लेख किया है?

उत्तर–लेखक राम चन्द्र शुक्ल ने अपने पिताजी की निम्न विशेषताओं का उल्लेख किया –

1) वे फारसी के अच्छे ज्ञाता और पुरानी हिन्दी कविता के प्रेमी थे

2) भारतेन्दु जी के नाटक उन्हें बहुत प्रिय थे। इन नाटको को कभी– कभी सुनाया करते थे।

3) वे रात को घर के सब लोगों को इकट्ठा कर उन्हें राम चरित मानस और रामचन्द्रिका बड़े चिताकर्षक ढंक से पढ़कर सुनाया करते थे।

प्र:4 बचपन में लेखक के मन में भारतेंदुजी के सम्बन्ध में कैसी भावना जगी रहती थी?

उत्तर–बचपन में लेखक रामचन्द्र शुक्ल के मन में भारतेंदु जी के संबन्ध में एक अपूर्व मधुर भावना जगी रहती थी। उनकी बाल–बुद्धि भारतेंदु हरिश्चन्द्र और सत्यवादी हरिशचंद्र नाटक के नायक राजा हरिश्चन्द्र में कोई भेद नहीं कर पाती थी।

प्र:5 लेखक का हिन्दी साहित्य के प्रति झुकाव किस तरह बढ़ता गया–

उत्तर–ज्यों–ज्यों लेखक सयाना होता गया हिन्दी साहित्य की ओर उसका झुकाव बढ़ता गया। उसके पिताजी साहित्य के प्रेमी थे। भारत जीवन प्रेस की किताबें उनके यहाँ आया करती थी साथ ही मिर्जापुर में केदारनाथ पाठक ने एक पुस्तकालय खोला था जहाँ से किताबें लाकर रामचन्द्र शुक्ल पढ़ा करते थे। अपने समवयस्क मित्रों– काशीप्रसाद, जायसवाल, भगवानदासजी हालना, पं. बदरीनाथ गौड़, और पं. उमाशंकर द्विवेदी के साथ वे हिन्दी के नये–पुराने लेखकों की चर्चा करते रहते थे। परिणामतः हिन्दी साहित्य की ओर उनका झुकाव बढ़ता गया।

प्र:6 सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

वे लोगो को प्राय बनाया करते थे, इससे उनसे मिलने वाले लोग भी उन्हें बनाने की फिक्र में रहा करते थे। मिर्जापुर में पुरानी परिपाटी के एक बहुत ही प्रतिभाशाली कवि रहते थे, जिनका नाम था वामनाचार्यगिरि। एक दिन वे सड़क पर चौधरी साहब के ऊपर एक कविता जोड़ते चले जा रहे थे। अंतिम चरण रह गया था कि चौधरी साहब अपने बरामदे में कंधों पर बाल छिटकाए खंभे के सहारे खड़े दिखाई पड़े। चट कवित्त पूरा हो गया और वामनजी ने नीचे से वह कवित्त ललकारा, जिसका अंतिम अंश था– "खंभा टेकि खड़ी जैसे नारि मुगलाने की।"

उत्तर– **संदर्भ –** प्रस्तुत गंधारा पाठ्यपुस्तक 'अंतरा' (भाग–2) में संकलित 'प्रेमधन की छाया–स्मृति' पाठ जो रामचन्द्र शुक्ल द्वारा रचित संस्मरणात्मक निबंध से उदृधत है।

प्रसंग – इस गंधाश में लेखक ने प्रेमधन जी के व्यक्तित्व के विषय में बताया है।

व्याख्या – लेखक ने प्रेमधन जी के विषय में बताया है कि वे लोगों से हास–परिहास किया करते थे, अकसर लोग उनसे मिलने वाले भी उनका मजाक बनाने की इसलिए ताक में रहते थे। मिर्जापुर में एक पुरानी परिपाटी के प्रतिभाशाली कवि रहते थे। एक दिन वे प्रेमघन के ऊपर कविता बनाते हुए चले जा रहे थे। कविता का आखिरी चरण बनना रह गया था। तभी उन्हें बरामदे में चौधरी साहब खडे, दिखाई दिए, जिनके कंधों पर बाल फैले हुए थे लिए हुए खड़े थे और

शेखावाटी मिशन–100

वह एक हाथ से खंभे का सहारा जैसे कोई मुगल स्त्री खड़ी हो। इस तरह उन्होंने प्रेमघन पर व्यंग्यपूर्ण कविता रच कर उनका मजाक बनाया।

विशेष –(i) भाषा प्रवाहपूर्ण खड़ी बोली हिन्दी है।

(ii) शैली वर्णनात्मक है।

(iii) तत्सम शब्दों का चयन किया है।

प्र:7 आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का साहित्यिक परिचय लिखिए।

उत्तर–आचार्य रामचन्द्र शुक्ल उच्चकोटि के आलोचक,निबंधकार, साहित्य चिंतक एवं इतिहास लेखक के रूप में जाने जाते है। उन्होंने अपने मौलिक लेखन, संपादन व अनुवादों से हिन्दी साहित्य में पर्याप्त वृद्धि की।

भाषा – आचार्य शुक्ल ने संस्कृत तत्सम शब्दावली युक्त तथा मुहावरेदार परिष्कृत खड़ी बोली हिन्दी का प्रयोग किया है। आवश्यकतानुसार वे अपनी भाषा में अंग्रेजी और हिन्दी फारसी के प्रचलित शब्दों का प्रयोग भी करते है। शैली – शुक्लजी की गद्य शैली विवेचनात्मक है जिसमें विचार प्रधानता, सूक्ष्म तर्क योजना, सदृश्यता, व्यंग्य–विनोद का भी योगदान है। विषय के अनुसार वे कभी व्याख्यात्मक शैली का, कभी आलोचनात्मक शैली का तो कभी हास्य–व्यंग्य प्रधान शैली का प्रयोग करते हैं।

प्रमुख रचनाएँ – चिन्तामणी, रस–मीमांसा (निबन्ध) हिन्दी साहित्य का इतिहास, तुलसीदास सूरदास त्रिवेणी (समालोचना), जायसी ग्रन्थावली, भ्रमरगीतसार, हिन्दी शब्द सागर, काशीनागरी प्रचारिणी पत्रिका, आनन्द एवं कादम्बिनी पत्रिका (सम्पादन) ग्यारह वर्ष का समय (कहानी), अभिमन्यु वध, (बुद्धचरित काव्य ग्रन्थ।)

पाठ–2

पंडित चन्द्रधर शर्मा गुलेरी (सुमिरिनी के मनके)

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

प्र:1 'बालक बच गया' निबंध में प्रधानाध्यापक के बच्चे की उम्र कितनी थी?

(अ) सात वर्ष (ब) आठ वर्ष (स) नौ वर्ष (द) पाँच वर्ष (ब)

प्र:2 'बालक बच गया' निबंध में बच्चे को सबके सामने किस तरह से दिखाया जा रहा था?

(अ) एक हीरो की तरह (ब) एक नेता की तरह

(स) एक अध्यापक की तरह (द) मिस्टर हादी के कोल्हू की तरह (द)

प्र:3 'बालक बच गया' घड़ी के पुर्जे, ढेले चुन लो शीर्षक रचनाएं साहित्य की किस विधा के अन्तर्गत आती है?

(अ) लघु कथा (ख) लघुनिबंध (स) लघु नाटक (द) लघु कहानी (ब)

प्र:4 किस लेखक को 'इतिहास दिवाकर' की उपाधि से सम्मानित किया गया है?

(अ) रामचंद्र शुक्ल (ब) हजारी प्रसाद द्विवेदी (स) चौधरी प्रेमधन (द) चन्द्रधर शर्मा गुलेरी (द)

प्र:5 'दुर्लभ बंधु' रचना के अनुसार सच्चा प्रेमी कौन सी पेटी को छूता है।

शेखावाटी मिशन–100

(अ) लोहे की पेटी (ब) सोने की पेटी

(स) ताँबे की पेटी (द) चाँदी की पेटी (अ)

प्र:6 'बालक बच गया' निबन्ध का मूल प्रतिपाद्य क्या है ?

(अ) शिक्षा ग्रहण की सही उम्र (ब) व्यक्ति के विकास हेतु शिक्षा देना

(स) मनुष्य और मनुष्यता को बचाए रखना (द) उपर्युक्त सभी **(द)**

प्र:7 बालक ने वृद्ध महाशय, से इनाम में क्या माँगा ?

(अ) पुस्तक (ब) खेल का सामान

(स) पेन (द) लड्डू **(द)**

प्र:8 'घड़ी के पुर्जे' के आधार पर धर्म का उद्देश्य क्या है।

(अ) मानव मात्र का हित करना (ब) धर्म पर मुट्ठीभर लोगों का अधिकार हो

(स) धर्म का रहस्य जाने बिना उसका पालन करें (द) विधर्मी का विनाश **(अ)**

प्र:9 धर्म का रहस्य जानने का अधिकार किसको होना चाहिए?

(अ) धर्माचार्यों को (ब) वेदशास्त्रज्ञों को

(स) आम आदमी को (द) धर्म उपदेशकों को **(स)**

लघुत्तरात्मक प्रश्न (उत्तर सीमा 40 शब्द)

प्र:1 जीवन साथी का चुनाव मिट्‌टी के ढेलो पर छोड़ना कहाँ तक उचित है तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर– जीवन साथी का चुनाव मिट्टी के ढेलो पर छोड़ना लेखक चद्रधर शर्मा गुलेरी के अनुसार बिल्कुल अनुचित है, क्योंकि यह अंधविश्वास और मूर्खता है जो मनुष्य को परिश्रम से दूर भगाकर भविष्य के लिए पछतावे की स्थिति में डालता है ढेले भाग्य नही बनाते, बल्कि सही समझदारी आपसी समझ और परिश्रम से ही जीवन में खुख शांति व मनोवांछित फल मिलते है, जैसा कि लेखक ने कबीर के दोहों के माध्यम से समझाया है कि पत्थर पूजने से भगवान नहीं मिलते, बल्कि व्यावहारिक कर्म और विवेक जरूरी है।

प्र:2 'बालक बच गया' शीषर्क लघू निबंध में निहित व्यंग्य को स्पष्ट करते हुए बताइए की ऐसी शिक्षा पद्धति से कैसे बचा जा सकता है।

उत्तर– निबंध में लेखक ने अपने जीवन के अनुभव को हमारे सामने अत्यंत व्यावहारिक रूप में रखा है। आठ वर्ष के बालक को शिक्षा के नाम पर कठिन प्रश्नों का उत्तर रटवाया जाता है, जिसका शायद वह अर्थ भी नहीं जानता। इस कारण उसकी स्वभाविक प्रवृति का हनन होता है उसके बनावटी पन बढ़ जाता है। लेखक ने बताने की कोशिश की है। कि हमे बच्चों पर लादना नहीं चाहिए बल्कि उसके मस्तिष्क में शिक्षा के प्रति रूची पैदा करने वाले गुणों का विकास करना चाहिए।

प्र:3 लेखक ने धर्म का रहस्य जानने के लिए 'घड़ी के पुर्जे का' दृष्टान्त क्यों दिया?

उत्तर–धर्म उपदेशक अपने कथन को घड़ी के दृष्टान्त से समझाते है घड़ी समय जानने के लिए होती है। यदि स्वयं घड़ी देखना नहीं आता तो किसी जानकार व्यक्ति से समय पूछ लो। घड़ी ने वह समय क्यों बताया, इस रहस्य को जानने

शेखावाटी मिशन–100

के लिए तुम घड़ी के पुर्जो को खोलकर उन्हें फिर जमाने की चेष्टा मत करो। ऐसा करने पर तुम्हें निराशा हाथ लगेगी। ठीक इसी तरह धर्म के बारे में जो बताया जा रहा है, उसे चुप– चाप सुनलो, उसके बारे में तर्क–वितर्क और प्रश्न मत करो। धर्म का रहस्य पत्ता करना उसी प्रकार तुम्हारा काम नहीं है, जैसे घड़ी को खोलकर उसके पुर्जे लगाना तुम्हारे वश की बात नहीं। इसी कारण लेखक ने धर्म का रहस्य जानने के लिए घड़ी के पुर्जे का दृष्टान्त दिया है।

प्र:4 "धर्म का रहस्य जानना सिर्फ धर्माचार्यों का काम नहीं। कोई भी व्यक्ति अपने स्तर पर उस रहस्य को जानने का हकदार है, अपनी राय दे सकता है।" टिप्पणी कीजिए।

उत्तर– धर्म पर कुछ मुट्ठीभर लोगों का एकाधिकार निश्चित रूप से संकुचित अर्थ प्रदान करता है। ये मुट्ठीभर लोग नहीं चाहते कि धर्म का रहस्य हर कोई जान ले। ऐसा होने पर एकाधिकार छिन जायेगा, उनके स्वार्थ सिद्ध नहीं हो पायेंगे किन्तु जब धर्म का सम्बन्ध आम आदमी से जुड़ जायेगा और वह धर्म के रहस्य से परिचित हो जायेगा तो निश्चय ही धर्म उसके विकास में सहायक होगा।

प्र:5 वैदिककाल में हिन्दुओं में कैसी लाटरी चलती थी, जिसका जिक्र लेखक ने किया है ?

उत्तर– वैदिक काल में योग्य पत्नी चुनने के लिए वर विभिन्न स्थानों की मिट्टी से बने ढ़ेले कन्या के समक्ष रखता था और उनमें से कोई एक ढ़ेला चुनने को कहता। वह जिस ढ़ेले को चुनती, उसकी मिट्टी जिस स्थान से ली गई थी, उसके आधार पर यह निर्धारित किया जाता था कि वह कन्या विवाहोपरान्त कैसे पुत्र को जन्म देगी। यदि अच्छे स्थान की मिट्टी का ढ़ेला चुनती तो अच्छी सन्तान को जन्म देगी और यदि बुरे स्थान की मिट्टी का ढ़ेला चुनती है तो बुरी संतान को जन्म देगी। इस प्रकार वैदिक काल में हिन्दू ढ़ेले– छुआकर पत्नी वरण करते थे। यह एक प्रकार की लाटरी थी जिसका जिक्र लेखक ने यहाँ किया है।

प्र:6 पण्डित चन्द्र धर शर्मा गुलेरी का साहित्यिक परिचय लिखो–

उत्तर–पण्डित चन्द्रधर शर्मा का जन्म सन् 1883 ई. में पुरानी बस्ती, जयपुर में हुआ। वे संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित, बहुभाषाविद, प्राचीन इतिहास और पुरातत्ववेत्ता, भाषा–विज्ञानी, लेखक और समालोचक थे। गुलेरी जी ने लेखन के लिए खड़ी बोली हिन्दी को अपनाया। उनकी भाषा सरल, सरस और विषयानुकूल है।

प्रमुख कृतियाँ– कहानियाँ – सुखमय जीवन, बुद्धु का काँटा, उसने – कहा था। सिर्फ उसने कहा था, कहानी से गुलेरीजी हिन्दी कहानीकारों में अमर हो गये हैं।

सम्पादन – 1. समालोचक (1903–06 ई.), 2. मर्यादा (1911–12 ई.), 3. प्रतिभा (1918–20 ई.), 4. नागरी प्रचारिणी पत्रिका (1920–22 ई.)

सम्मान– गुलेरीजी को 'इतिहास दिवाकर' की उपाधि से सम्मानित किया गया।

निबन्धात्मक प्रश्न–

प्र:1 निम्न गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

उत्तर–धर्म के रहस्य की जानने की इच्छा प्रत्येक मनुष्य न करे जो कहा जाए वही कान ढ़लकाकर सुन ले, इस सत्ययुगी मत के समर्थन में घड़ी का दृष्टान्त बहुत तालियाँ पिटवाकर दिया जाता है। घड़ी समय बतलाती है। किसी घड़ी देखना

शेखावाटी मिशन–100

जाननेवाले से समय पूछ लो और काम चला लो। यदि अधिक करो तो घड़ी देखना स्वयं सीख लो किन्तु तुम चाहते हो कि घड़ी का पीछा खोलकर देखें, पुर्जे गिन लें, उन्हें खोलकर फिर जमा दे साफ करके फिर लगा ले– यह तुमसे नहीं होगा। तुम उसके अधिकारी नहीं। यह तो वेद– शास्त्रज्ञ धर्माचार्यो का ही काम है कि घड़ी के पुर्जे जाने, तुम्हे इससे क्या ? क्या इस उपमा से जिज्ञासा बन्द हो जाती है?

सन्दर्भ– प्रस्तुत पंक्तियाँ पण्डित चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरीजी' द्वारा रचित पाठ 'सुमिरिनी के मनके' से ली गई है। यह अंश इस पाठ के दूसरे खण्ड 'घड़ी के पूर्जे से उद्धृत किया गया है। जिसे हमारी पाठ्य–पुस्तक अन्तरा भाग–2 में संकलित किया गया है।

प्रसंग– धर्म का उपदेश देने वाले विद्वान घड़ी का उदाहरण देकर धर्म के विषय में बताते है घड़ी में केवल समय देखो। उसको खोलकर मत देखो। धर्म के उपदेश सुनो, उस पर तर्क मत करो।

व्याख्या – धर्मोपदेशक प्रायः यह कहा करते हैं कि तुम्हे धर्म के बारे में जो कुछ बताया जाये उसे चुपचाप कान खोलकर सुन लो, उस पर कोई टीका–टिप्पणी मत करो, कोई जिज्ञासा न करो। क्योंकि तुम्हे धर्म का रहस्य जानने की कोई आवश्यकता नहीं। इस धर्म रूपी घड़ी का उपयोग तुम्हें केवल समय जानने के लिए करना है न कि घड़ी को पीछे से खोलकर उसके पुर्जों को देखने, खोलने, साफ करने या पुनः जोड़ने की जरूरत है। जब धर्मोपदेशक धर्म की तुलना घड़ी से करते हैं, तो श्रोता ताली बजाकर उनका समर्थन करते हैं। इस प्रकार तालियाँ पिटवाकर उपदेशक लोगों के मन में धर्म का रहस्य जानने के लिए उठी जिज्ञासा को बेमानी बताकर उसे शांत करना चाहते हैं। किन्तु वास्तव में ऐसा होता नहीं है। हर व्यक्ति के मन में धर्म का रहस्य जानने की कुछ जिज्ञासा रहती है। साथ ही जो शंकाएँ मन में उठती है उनका वह समाधान भी करना चाहता है।

विशेष–

(i) लेखक ने धर्मोपदेशकों की प्रवृति पर प्रकाश डाला है।

(ii) उपदेशक धर्म की उपमा घड़ी से देते हैं।

(iii) भाषा सरल, सहज और प्रवाहपूर्ण खड़ी बोली हिन्दी है।

(iv) उपदेशात्मक शैली का प्रयोग किया गया है।

पाठ–3

फणीश्वरनाथ 'रेणु' (संवदिया)

प्र:1 संवदिया कहानी एक जीवंत चित्रण है?

(अ) नारी मन के दुःख और करुणा की (ब) बाल मन के दुःख व करुणा की

(स) पुरुष मन के दुःख और करूणा की (द) बजुर्ग मन के दुःख व करुणा की **(अ)**

प्र:2 बड़ी बहुरिया की टूटी ड्योढी के द्वारा लेखक ने इशारा किया है?

(अ) समाज का सांस्कृतिक पतन (ब) पतनशील सांमती व्यवस्था

(स) समाज को वैचारिक पत्तन (द) आर्थिक पत्तन **(ब)**

शेखावाटी मिशन–100

प्र:3 "आगे नाथ न पीछे पगहा" मुहावरे का क्या अर्थ है?

(अ) बहुत अधिक डर जाना (ब) जानकारी प्राप्त करना

(स) कोई जिम्मेदारी ना होना (द) नुकसान हो जाना **(स)**

प्र:4 "उधार का सौदा खाने में बड़ा मीठा लगता है" यह कथन संवदिया कहानी में किसने कहा?

(अ) बड़ी बहुरिया ने (ब) हरगोबिन ने

(स) गुल मुहम्मद आगा ने (द) मोदिमाइन ने **(द)**

प्र:5 'संवदिया' फणीश्वरनाथ रेणु की किस प्रकार की कहानी है?

(अ) ऐतिहासिक कहानी (ब) मनोवैज्ञानिक कहानी

(स) सांस्कृतिक कहानी (द) आंचलिक कहानी **(द)**

प्र:6 हरगोबिन संवदिया कहाँ से संवाद लेकर गया ?

(अ) जलालगढ से बिहपुर (ब) बिहपुर से जलालगढ

(स) जलालगढ से खगड़िया (द) खगड़िया से जलालगढ **(अ)**

प्र:7 माँ ने बड़ी बहुरिया के लिए क्या भेजा था?

(अ) फल (ब) दही–चूड़ा

(स) बासमती धान का चूड़ा (द) उपर्युक्त सभी **(स)**

प्र:8 फणीश्वर नाथ 'रेणू' को हिन्दी में किस रूप में जाना जाता है।

(अ) ऐतिहासिक कथाकार (ब) सामाजिक कथाकार

(स) आंचलिक कथाकार (द) मनोवैज्ञानिक कथाकार **(स)**

लघुत्तरात्मक व दीर्घउत्तरात्मक प्रश्न–

प्र:1 संवदिया कहानी के आधार पर समाज में नारी के प्रति लोगों की मानसिक संकीर्णताओं को उजागर किया है? विस्तारपूर्वक लिखिए।

उत्तर– 'संवदिया कहानी' समाज में नारी के प्रति व्याप्त मानसिक संकीर्णता और शोषण को गहराई से उजागर करती है यह कहानी मानवीय संवेदना और विशेष रूप से असहाय व सहनशील नारी मन की पीड़ा का सूक्ष्म चित्रण करती है, जो निम्नलिखित है–

(i) पुरुष–प्रधान मानसिकता और उपेक्षाः– कहानी में दिखाया गया है कि किस प्रकार एक स्त्री को उसके पति की मृत्यु के बाद उपेक्षित जीवन जीना पड़ता है।

(ii) आर्थिक निर्भरता और शोषणः– बड़ी बहुरिया की आर्थिक स्थिति खराब हो जाती है सम्पति के लालच में परिवार के अन्य सदस्य शोषण करने से भी नही हिचकिचाते ।

(iii) संवादहीनता और अकेलेपन की त्रासदी :– संवदिया के माध्यम से बड़ी बहुरिया अपनी पीड़ा को अपने मायके तक पहुंचाना चाहती है संवदिया गांव की दुखदायी गाथा कहते हुए भावुक हो जाता है यह स्थिति समाज में नारी के अकेलेपन और दुखदायी दशा को दर्शाता है।

शेखावाटी मिशन–100

(iv) सामाजिक रुढ़ियाँ और बंधन :– उस समय के समाज में नारी को अनेक बंधनो में जकड़ कर रखा जाता था ।

प्र:2 रावलपिंडी का नाम सुनकर गाँधीजी की आँखो में चमक आने का क्या कारण था?

उत्तर– रावलपिंडी का नाम सुनकर गाँधी जी की आँखो में चमक आने का कारण भीष्म साहनी की आत्मकथा "गाँधी, नेहरू और यास्सेर आराफात" से जुड़ा एक प्रसंग हो सकता है जहाँ उनके रावलपिंडी में जन्म और गाँधी से मुलाकात का जिक्र है जिससे गाँधी जी की यादें और रावलपिंडी के प्रति उनके विचार जगमगा उठे होंगे या यह उनके भारत–पाकिस्तान विभाजन के बाद भी उस क्षेत्र के लोगों के प्रति प्रेम और उम्मीद का प्रतीक हो सकता है जहां उनका विचार जीवित था।

प्र:3 फणीश्वरनाथ 'रेण' के जीवन और रचनाओं का संक्षिप्त परिचय दीजिए?

उत्तर – फणीश्वरनाथ 'रेणु' का जन्म बिहार राज्य के पूर्णिया जिले के औराही–हिंगना नामक गाँव में वर्ष 1921 में हुआ। रेणु ने वर्ष 1942 के 'भारत छोड़ो' आंदोलन में भाग लिया। नेपाल के राणाशाही विरोधी आंदोलन में भी उनकी सक्रिय रहे। 'रेणु' का निधन 1977 ई में हुआ। रेणु जी, की रचनाओं में ग्रामीण जीवन, संस्कृति व आंचलिक जीवन को मार्मिकता के साथ प्रस्तुत किया।

प्रमुख रचनाएँ – उपन्यास मैला आँचल, परती परिकथा, कितने–चौराहे कहानी संग्रह–ठुमरी, एक आदिम रात्रि की महक, अग्निखोर रिपोर्ताज–ऋणजल–धनजल, नेपाली क्रांति कथा।

प्र:4 संवदिया की क्या विशेषताएँ है और गाँव वालों के मन में संवदिया की क्या अवधारणा है?

उत्तर–संवाद के प्रत्येक शब्द को याद रखना तथा जिस सुर और स्वर में संवाद सुनाया गया है, ठीक उसी ढंग से जाकर सुनाना संवदिया की विशेषताएँ है । यह सहज काम नहीं है। गाँव वालो की संवदिया के विषय में धारणा है कि निठल्ला, कमजोर, और पेटू आदमी ही संवदिया का काम करता है, बिना मजदूरी लिए गाँव–2 संवाद पहुँचाता है। औरतो की मीठी बोली सुनकर ही उनका संदेशवाहक बन जाता है। हरगोबिन को इसीलिए गाँववाले औरतो का गुलाम भी कहते है।

प्र:5 बड़ी बहुरिया का संवाद हरगोबिन क्यों नहीं सुना सका ?

उत्तर– बड़ी बहुरिया पूरे गाँव की लक्ष्मी थी। यदि वह बड़ी बहुरिया की विपत्ति कथा उसकी माँ से कहता तो वह उसे उसके पास बुला लेती जिससे पूरे गाँव की बदनामी होती । गाँव की लक्ष्मी गाँव छोड़कर चली जायेगी तब गाँव मे क्या रह जाएगा। सुनने वाले हरगोबिन का नाम लेकर थूकेंगे। कैसा गाँव है, जहाँ लक्ष्मी जैसी बहुरिया दुःख भोग रही है। इसी कारण हरगोबिन बड़ी बहुरिया का संवाद उसकी माँ को नहीं सुना सका।

प्र:6 'डिजिटल इंडिया' के दौर में संवदिया की क्या भूमिका हो सकती है ?

उत्तर–पुराने समय मे जब आवागमन के साधन बहुत कम थे। सूचनाओं के आदान–प्रदान की व्यवस्था नहीं थी । उस समय गाँवों में अपना समाचार भेजने के लिए संवदिया होता था संवदिया एक संदेशवाहक होता था जो संवाद को बोलकर संदेश पहुँचाता था। वर्तमान में डिजिटल इंडिया होने पर संचार के अनेकानेक माध्यम विकसित हो गए है। जो किसी समाचार को दृश्य श्रव्य माध्यम से दुनिया के किसी भी कोने में क्षणभर में पहुंचा देते है। अतः 'डिजिटल इंडिया' में संवदिया की प्रत्यक्षतः कोई भूमिका नजर न आती है। लेकिन संवदिया एक विश्वसनीय व्यक्ति होता है अतः विशेष

शेखावाटी मिशन–100

क्षेत्रों व परिस्थितियों में तथा परम्परा के अनुसार संवदिया का आज भी महत्व है।

निबंधात्मक प्रश्न–

प्र:6 निम्नलिखित गद्यांश की व्याख्या कीजिए।

संवदिया डटकर खाता है और अफर कर सोता है, किन्तु हरगोबिन को नींद नहीं आ रही है। यह उसने क्या किया? क्या कर दिया? वह किसलिए आया था? वह झूठ क्यों बोला? नहीं............नहीं, सुबह उठते ही वह बूढी माता को बड़ी बहुरिया का दिया सही संदेश सुना देगा – अक्षर–2 मायजी, आपकी इकलौती बेटी बहुत कष्ट में है। आज ही किसी को भेजकर बुलवा लिजिए। नहीं तो वह सचमुच कुछ कर बैठेगी। आखिर, किसके लिए वह इतना सहेगी।.......... बड़ी बहुरिया ने कहा है, भाभी के बच्चों की जूठन खाकर वह एक कोने में पड़ी रहेगी।

संदर्भ – प्रस्तुत पंक्तियाँ 'संवदिया' नामक कहानी से ली गई है। यह आंचलिक कहानी 'फणीश्वरनाथ रेणु' द्वारा रचित है और इसे हमारी पाठ्य पुस्तक 'अंतरा भाग –2' में संकलित किया गया है।

प्रंसग–बड़ी बहुरिया का संदेश लेकर हरगोबिन संवदिया उसकी बूढी माँ के गाँव पहुँचा। उसके सामने सुस्वाद भोजन की थाली रखी गई पर उससे खाया न गया। बार–बार आँखो के सामने बड़ी बहुरिया की करुण मूर्ति आ जाती है। साथ ही उसे इस बात की भी पीड़ा थी कि उसने संवदिया का कर्त्तव्य पूरा नहीं किया इन पंक्तियो मे उसके इसी मानसिक अंतर्द्वन्द्व की अभिव्यक्ति हुई है।

व्याख्या–संवदिया का विशेष आदर–सत्कार होता है। अच्छा एवं स्वादिष्ट भोजन वह पेट भर कर खाता है पर हरगोबिन संवदिया से आज न तो भर पेट भोजन किया गया और न ही नींद आ रही है। बार–बार उसे लगता है कि उसने बड़ी बहू का संदेश माँ जी को न सुनाकर अपराध किया है। बड़ी बहु ने बड़ी आशा और विश्वास से उसे भेजा था पर उसने कर्त्तव्य का निर्वाह नहीं किया। वह यहाँ बड़ी बहुरिया के कष्टों का समाचार देने आया था पर यहाँ आकर उसने झूठ क्यों बोला कि वहाँ सब ठीक–ठाक है और हवेली में बड़ी बहुरियां कुशल से है जबकि बड़ी बहुरिया भोजन न मिलने के कारण बथुआ साग खाकर जैसे–तैसे गुजारा कर रही थी वह सोचता है कि वह सुबह उठकर माँ जी को सब बता देगा कि आपकी बेटी वहाँ पर परेशान है और आप जल्दी उसे, अपने पास बुला ले अन्यथा वह अपने आप को कुछ कर लेगी आखिर कब तक वह बथुआ साग खाकर जीवित रहेगी एवं वह इतना कष्ट किसके लिए सहेगी। उसने तो यह संदेश दिया है कि मुझे शीघ्र बुला लें। मैं भाभी के बच्चों की जूठन खाकर एक कोने में पड़ी रहूँगी। संवदिया ने अपने कर्तव्य का पालन नहीं किया इसीलिए संवदिया की आंखो से नींद गायब हो गई।

विशेष–

(i) प्रस्तुत अवतरण में हरगोबिन के अंतर्द्वन्द्व का चित्रण है।

(ii) हरगोबिन को यह अपरोध बोध हो रहा था कि उसने बड़ी बहुरिया का संदेश माँ जी को न सुनाकर बहुत बड़ी भूल की है।

(iii) भाषा सरल, सहज व प्रवाहपूर्ण हिन्दी है।

(iv) शैली – मनोविश्लेषण शैली का प्रयोग किया गया है।

शेखावाटी मिशन–100

पाठ–4

भीष्म साहनी (गाँधी, नेहरू और यास्सेर अराफात)

प्र:1 'भीष्म साहनी' का यास्सर अराफात से परिचय कहाँ हुआ था?
(अ) टयूनिस (ब) स्वीडन (स) मलेशिया (द) पेरिस (अ)

प्र:2 'गांधी नेहरू यास्सर अराफात' पाठ की विधा क्या है?
(अ) कहानी (ब) रिपोर्ताज (स) संस्मरण (द) यात्रावृतांत (स)

प्र:3 अफ्रो–एशियाई लेखक संघ का सम्मेलन कहाँ हुआ था?
(अ) स्वीडन (ब) ट्यूनिस (स) मुम्बई (द) कश्मीर (ब)

प्र:4 भीष्म साहनी के भाई 'बलराज साहनी' किस पत्रिका के सह–संपादक थे?
(अ) कल्पना (ब) नयी तालीम (स) समन्वय (स) मतवाला (ब)

प्र:5 गांधी जी के निजी सचिव कौन थे?
(अ) महादेव गोविंद रानाडे (ब) डॉ नय्यर
(स) मिस्टर ऑन (द) महादेव देसाई (द)

प्र:6 "गाँधी, नेहरू और यास्सेर अराफात" पाठ साहनी की किस रचना का अंश है?
(अ) पहला पाठ (ब) भटकती राख
(स) आज के अतीत (द) भाग्य रेखा **(स)**

प्र:7 सेवाग्राम में लेखक किसके सानिध्य में रहे ?
(अ) जवाहरलाल नेहरू (ब) यास्सेर अराफात
(स) महात्मा गाँधी (द) बलराज **(स)**

प्र:8 जवाहरलाल नेहरू के साथ लेखक की मुलाकात कहाँ हुई ?
(अ) सेवाग्राम (ब) फिलिस्तीन
(स) काश्मीर (द) मास्को **(स)**

प्र:9 काश्मीर में बातो ही बातों में नेहरू जी की धर्म के बारे में किससे बहस छिड़ गई?
(अ) भीष्म साहनी से (ब) रामेश्वरी नेहरू से
(स) शेख अब्दुला से (द) यास्सेर अराफात से **(ब)**

प्र:10 यास्सेर अराफात किस भारतीय नेता को आदरणीय मानते थे?
(अ) गाँधीजी (ब) लाल बहादुर शास्त्री
(स) सुभाष चन्द्र बोस (द) नेहरू **(अ)**

प्र:11 किस उपन्यास के लिए भीष्म साहनी को साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया ?
(अ) झरोखे (ब) कड़ियाँ

शेखावाटी मिशन–100

(स) बसंती (द) तमस **(द)**

लघुतरात्मक व दीर्घउत्तरात्मक प्रश्न –

प्र:1 लेखक सेवाग्राम कब और क्यों गया था ?

उत्तर–लेखक (भीष्म साहनी) अपने भाई बलराज साहनी के पास कुछ दिनों तक रहने के लिए सेवाग्राम गए थे जो उस समय वहाँ से प्रकाशित होने वाली पत्रिका 'नयी तालीम' के सह–सम्पादक थे। यह सन 1938 के आस पास की बात है जिस साल कांग्रेस का हरिपुरा अधिवेशन हुआ था।

प्र:2 लेखक ने सेवाग्राम में किन–किन लोगो के आने का जिक्र किया है?

अत्तर–वहाँ पृथ्वी सिंह आजाद, जो प्रसिद्ध क्रांतिकारी थे। लेखक ने वहाँ मीराबेन व सीमांत गाँधी के नाम से विख्यात खान अब्दूल गफ्फार खान और बाबू राजेन्द्र प्रसाद को भी देखा था। इन सबका जिक्र लेखक ने इस संस्मरण में किया है।

प्र:3 फिलिस्तीन के प्रति भारत का रवैया बहुत सहानुभूति पूर्ण एवं समर्थन भरा क्यों था ?

उत्तर–भारत की विदेश नीति अन्याय का विरोध करने की रही है। साम्राज्यवादी शक्तियों ने फिलिस्तीन के प्रति जो अन्यायपूर्ण रवैया अपनाया हुआ था उसकी भर्त्सना भारत के नेताओ द्वारा की गयी थी। भारत के नागरिको ने भी इसी कारण फिलिस्तीन और उसके नेता यास्सेर अराफात के प्रति अपनी सहानुभूति दिखायी और समर्थन व्यक्त किया। फिलिस्तीन हमारा मित्र देश है तथा यास्सेर अराफात का भारत में बहुत सम्मान था।

निबंधात्मक प्रश्न–

प्र:1 गंद्याश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

उन्हीं दिनों सेवाग्राम में अनेक जाने–माने देशभक्त देखने को मिले। पृथ्वीसिंह आजाद आए हुए थे जिनके मुँह से वह सारा किस्सा सुनने को मिला कि कैसे उन्होंने हथकड़ियों समेत, भागती रेलगाड़ी में से छलाँग लगाई और निकल भागने में सफल हुए और फिर गुमनाम रहकर बरसों तक एक जगह अध्यापन कार्य करते रहे। उन्हीं दिनों वहाँ पर मीरा बेन थी, खान अब्दुल गफ्फार खान आए हुए थे, कुछ दिल के लिए राजेंद्र बाबू भी आए थे। उनके रहते यह नहीं लगता था कि सेवाग्राम दूर पार का कस्बा हो।

उत्तर– **संदर्भ–** यह गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक अंतरा (भाग–2) भीष्म साहनी द्वारा रचित आत्मकथा 'आज के अतीत' से अवतरित है।

प्रसंग – लेखक साहनी जी कुछ दिन तक गाँधी जी के आश्रम सेवाग्राम में रहे यहाँ वहीं के अनुभवों का जिक्र किया है।

व्याख्या – लेखक जिन दिनों सेवाग्राम में था, उन्हीं दिनों कई देशभक्त भी वहाँ थे। लेखक को उन्हें देखने का अवसर मिला। वहाँ प्रसिद्ध वीर पृथ्वी सिंह आजाद भी आए हुए थे। उनकी बहादुरी के चर्चे उन दिनों चर्चा में थे। उनकी बहादुरी का किस्सा लेखक को इन्हीं के मुँह से सुनने को मिला। उन्होने बताया वे हथकड़ियों सहित चलती रेलगाड़ी से छलांग लगाकर भाग निकलने में सफल रहे थे। फिर गुमनामी में रहकर एक जगह पढ़ाने का काम करते रहे। उन दिनों आश्रम में मीराबेन खान अब्दुल गफ्फार खान तथा राजेंद्र बाबू थे। उनके रहने से वहाँ खूब चहल–पहल रहती थी।

शेखावाटी मिशन–100

तब सेवाग्राम महत्त्वपूर्ण स्थान बन गया था और दूर का कस्बा प्रतीत नहीं होता था।

विशेषः– (i) लेखक ने सेवाग्राम के बारे में अपने अनुभव बताए है।

(ii) पृथ्वीसिंह आज़ाद के वीरतापूर्ण कारनामों की झलक है।

(iii) भाषा सरल एवं सुबोध है।

पाठ–5

असगर वजाहत (शेर, पहचान, चार हाथ, साझा)

प्रः1 'शेर' लघु कथा में शेर किसका प्रतीक है।

(अ) राजा का (ब) प्रजा का (स) व्यवस्था का (द) आमजनता का (स)

प्रः2 जागरूक जनता के प्रतीक कौन थे?

(अ) खैराती, रामू, छिद्दू (ब) राजा, शंकर, छिद्दू

(स) शंकर, भुवन, रामू (द) आम जनता और राजा (अ)

प्रः3 राजा द्वारा जनता के आँख कान व मुँह बंद करवाने का वास्तविक उद्देश्य क्या था ?

(अ) जनता को निरकुंश बनाना (ब) जनता को अधिक अधिकार प्रदान करना

(स) जनता को गुमराह करके स्वंय निरकुंश बनना (द) अच्छी तरह से प्रजा का पालन–पोषण करना (स)

प्रः4 'साझा' लघुकथा में हाथी किसका प्रतीक है।

(अ) राजा का (ब) प्रभावशाली वर्ग का (स) प्रजा को (द) किसान का (ब)

प्रः5 'चार हाथ' कहानी उजागर करती है?

(अ) बाल मजदूरी (ब) मजदूरों का शोषण

(स) भष्ट्राचार (द) नारी अत्याचार (ब)

प्रः6 राज्य को कैसी प्रजा पसन्द है–

(अ) मेहनती (ब) कामचोर

(स) बहरी, गूँगी और अंधी (द) आज्ञाकारी **(स)**

प्रः7 हाथी ने किसान के साथ साझे में खेती की–

(अ) मक्का की (ब) ईख की

(स) ज्वार की (द) बाँस की **(ब)**

प्रः8 लोग शेर कहानी में रोजगार प्राप्त करने के लिए जा रहे थे–

(अ) राजा के पास (ब) शेर के मुँह में

(स) खेत में (द) हाथी के पास **(ब)**

शेखावाटी मिशन–100

लघुत्तरात्मक व दीर्घउत्तरात्मक प्रश्नः—

प्रः1 कहानी में लेखक ने शेर को किस बात का प्रतीक बताया है ?

उत्तर—कहानी में शेर को लेखक ने शासन—सत्ता का प्रतीक बताया है। सत्ता अहिंसक और सहःअस्तित्ववादी होने का दावा करती है। उसने भ्रम फैला रखा है कि वह जनता की हित चिन्तक है। इसी कारण जनता उस पर विश्वास करके उसकी बात मानती है। कुछ स्वार्थवश भी उसका सहयोग करते है। सत्ता विरोध बर्दाश्त नहीं करती और विरोधी को ताकत के साथ कुचल देती है। वह जनहित के नाम पर अपना हित चाहती है।

प्रः2 शेर के मुँह और रोजगार के दफ्तर के बीच क्या अंतर है ?

उत्तर—शेर के मुंह में जो एक बार जाता है वह वापस कभी नहीं आता है। लेकिन दफ्तर मे तो लोग बार—बार चक्कर लगाते हैं अर्जी देते हैं। पर उन्हें नौकरी नहीं मिलती। शेर जानवरो को निगल लेता है। पर रोजगार दफ्तर नौकरी चाहने वालो को निगलता नहीं लेकिन उन्हें रोजगार प्रदान करके जीने का अवसर भी देता है। इस कथा से लेखक ने वर्तमान शासन व्यवस्था पर व्यंग्य किया है।

प्रः3 आंखे बंद रखने और आँखे खोलकर देखने के क्या परिणाम निकले ?

उत्तर—प्रजा के आँखे बंद रखने से धीरे—धीरे राजा का प्रभूत्व सर्वत्र व्याप्त हो गया और वह निरकुंश हो गया। जनता को राजा द्वारा किए जाने वाले अपने ही शोषण का पता न चला। जब प्रजाजनों— खैराती, राम छिद्दू ने आंख खोलकर देखा तो वे एक—दूसरे को न देख सके सर्वत्र राजा ही दिखाई दिया। अर्थात राजा ने उत्पादन के साधनो पर धीरे—धीरे अपना अधिकार जमा लिया और प्रजाजनो को भुलावे में रखकर ऐसा बना दिया कि अब वे एकजुट होकर उसके खिलाफ खड़े होने का दुस्साहस नहीं कर सके। पूंजीपति भी तो यही करता है।

प्रः4 चार हाथ न लग पाने पर मिल मालिक की समझ में क्या बात आई ?

उत्तर—मिल मालिक की समझ में यह बात आई कि इस तरह उत्पादन दूना नहीं किया जा सकता। उसने तय किया कि उत्पादन बढाने और खर्च उतना ही रखने के लिए मजदूरो की संख्या दुगुनी कर दी जाए और मजदूरी आधी कर दी जाए। उसने ऐसा ही किया और बेबस लाचार मजदूर आधी मजदूरी पर ही काम करने लगे।

प्रः5 हाथी ने खेत की रखवाली के लिये क्या घोषणा की ?

उत्तर—हाथी ने पूरे जंगल में घूमकर डुग्गी पीट आया कि गन्ने की खेती में उसका साझा है अतः कोई जानवर खेत को नुकसान न पहुंचाएं, नहीं तो अच्छा न होगा।

प्रः6 शेर कहानी में हमारी व्यवस्था पर जो व्यंग्य किया गया है, उसे स्पष्ट कीजिए ?

उत्तर—शेर इस लघुकथा में व्यवस्था का प्रतीक है। लेखक ने इसके माध्यम से हमारी व्यवस्था पर व्यंग्य किया है। झूठे प्रचार के माध्यम से शासन जनता को खुशहाली का झांसा देता है तथा जनता का कुछ भी भला नहीं होता है। सब कुछ शासको की जेब में समा जाता है। लोग तरह—2 के सपने दिखाते हैं। इसमें सुविधाभोगियो पर विशेष रूप से व्यंग्य किया गया है।

शेखावाटी मिशन—100

प्र:7 असगर वजाहत का साहित्यिक परिचय लिखों।

उत्तर–असगर वजाहत

जन्म – सन् 1946 फतेहपुर (उत्तरप्रदेश)।

प्रमुख रचनाएँ– दिल्ली पहुँचना है, स्विमिंग पूल, सब कहाँ कुछ, आधी बानी, मैं हिंदू हूँ (कहानी–संग्रह), फिरंगी लौट आए, इन्ना की आवाज, वीरगति, समिधा, जिस लाहौर नई देख्या तथा अकी (नाटक), सबसे सस्ता गोस्त (नुक्कड़ नाटक), रात में जागने वाले, पहर दोपहर तथा सात आसमान, कैसी आगि लगाई (उपन्यास) असगर वजाहत ने गजल की कहानी वृत्तचित्र का निर्देशन किया है तथा बूँद–बूँद धारावाहिक का लेखक भी किया।

निबंधात्मक प्रश्न–

प्र.1 साझा कहानी किसानो की दुरवस्था को उजागर करती है स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– साझा कहानी किसानो की दयनीय और बदहाल स्थिति को निम्नलिखित बिंदुओ के माध्यम से स्पष्ट करती है

(i) पूंजीपतियों द्वारा शोषणः– कहानी में 'हाथी' समाज के अमीर शक्तिशाली और प्रभुत्वशाली वर्ग (पूँजीपतियों) का प्रतीक है। ये लोग किसानों को धोखे में रखकर या मजबूरी का फायदा उठाकर उनकी मेहनत और फसल को हड़प लेते है।

(ii) किसानों की लाचारी :– किसान कड़ी मेहनत करके फसल उगाता है। लेकिन पूँजीपतियों के शोषण के कारण वह सक्षम होते हुए भी लाचार हो जाता है उसे पता भी नहीं चलता और उसकी सारी कमाई शोषक वर्ग के पेट में चली जाती है।

(iii) व्यवस्था पर व्यंग्य :– यह कहानी उस सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था पर गहरा व्यंग्य है जहाँ किसानो की मेहनत का उचित मूल्य नही मिलता और वे लगातार कर्ज के बोझ तले दबे रहते है।

(iv) आर्थिक बदहाली के कारणः– कहानी उन कारणो की पड़ताल करती है, जिनके चलते किसान गरीबी और बदहाली के दुष्चक्र में फंस जाते हैं, जैसे कि उपज की उचित दाम न मिलना और ऋणग्रस्तता।

प्र:2 गंद्याश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

कुछ दिनों बाद मैंने सुना कि शेर अंहिसा और सह–अस्तित्ववाद का बड़ा जबरदस्त सर्मथक है इसलिए जगली जानवरों का शिकार नहीं करता। मैं सोचने लगा, शायद शेर के पेट में वे सारी चीजें है जिनके लिए लोग वहाँ जाते है और मैं भी एक दिन शेर के पास गया । शेर आँखे बंद किये पड़ा था और उसका स्टाफ ऑफिस का काम निपटा रहा था। मैंने वहाँ पूछा, "क्या यह सच है कि शेर साहब के पेट के अन्दर रोजगार का दफ्तर है?" बताया गया कि यह सच है।

उत्तर– **संदर्भ –** प्रस्तुत पंक्तियाँ 'असगर वजाहत' जी की लघु कथा 'शेर' से ली गई है जो हमारी पाठ्यपुस्तक अंतरा (भाग 2) में संकलित है।

प्रसंग – जंगल में शेर के ऑफिस के बारे में लेखक ने सुना था शेर के पास जाने पर उसने क्या देखा इसका वर्णन यहाँ किया गया है।

शेखावाटी मिशन–100

व्याख्या– शेर का प्रचार तंत्र बहुत मजबूत था। उसने अपने बारे में प्रचारित करवाया कि वह अंहिसावादी हो गया है, वह सह–अस्तित्ववाद और अंहिसा का समर्थक हो गया है अब वह शिकार नहीं करता तो उससे डरने की कोई आवश्यकता नहीं है। लेखक विचार करने लगा कि हो सकता है कि शेर के पेट में हरी घास का मैदान, रोजगार का दफ्तर और स्वर्ग विद्यमान हो, जिसके प्रलोभन में फंसकर जंगली जानवर उसके मुँह में प्रवेश करते जा रहे है इसका पता लगाने लेखक एक दिन शेर के पास गया। लेखक का अभिप्राय यह है कि शासन व्यवस्था अपने विषय में जो कुछ कहती है उसे सच मान लेने के अतिरिक्त जनता के पास क्या चारा है। शेर के पेट में रोजगार दफ्तर है यह शेर के द्वारा प्रचारित किया गया झूठ था पर जंगल में इसे सत्य समझकर उसके मुँह में समाते जा रहे थे।

विशेषः–(i) शेर व्यवस्था का प्रतीक है।

(ii) शैली प्रतीकात्मक है।

(iii) भाषा सहज व प्रवाहपूर्ण है।

(iv) राज्य व्यवस्था जो झूठ–सत्य अपने बारे में प्रचारित करती है, उसे जनता मान ही लेती है।

पाठ–6

निर्मल वर्मा (जहाँ कोई वापसी नहीं)

प्र:1 'जहाँ कोई वापसी नहीं' पाठ की मूल संवेदन क्या है?

(अ) वृक्षारोपण की समस्या (ब) प्रदूषण की समस्या

(स) विस्थापन की समस्या (द) भष्ट्राचार की समस्या (स)

प्र:2 पेड़ों के एक सत्याग्रह का अनुभव लेखक को कहाँ हुआ?

(अ) सिंगरौली में (ब) मालवा में (स) धनबाद में (द) भाखड़ा में (अ)

प्र:3 'जहाँ कोई वापसी नहीं' निर्मल वर्मा द्वारा रचित. यात्रावृतान्त किस संग्रह से लिया गया है?.

(अ) राख की लहर (ब) धुंध से उठती धुन

(स) हर बगारिस में (द) चीड़ों पर चाँदनी (ब)

प्र:4 लेखक निर्मल वर्मा किस संस्था की तरफ से सिंगरोली गए थे?

(अ) दिल्ली विश्वविद्यालय (ब) वित्त मंत्रालय

(स) हम वत्तन संस्थान (द) लोकायन संस्था (द)

प्र:5 खैरवार जाति के राजा कब राज किया करते थे–

(अ) 1845 से पूर्व (ब) 1926 से पूर्व

(स) 1950 से पूर्व (द) 1905 से पूर्व **(ब)**

शेखावाटी मिशन–100

प्र:6 'जहाँ कोई वापसी नहीं।' पाठ में किस गाँव का उल्लेख है?

(अ) अमझर (ब) बिस्कोहर

(स) जलालगढ़ (द) जहाजपुर **(अ)**

प्र:7 आधुनिक भारत के नए शरणार्थी कहा गया है–

(अ) बंग्लादेशी (ब) पाकिस्तान से आए हिन्दू

(स) विस्थापित लोग (द) कोई नहीं **(स)**

प्र:8 लोकायन संस्था विकास कार्यों का जायजा लेने कहाँ गई थी–

(अ) सिंगरौली (ब) नया गाँव

(स) अमझर (द) बिस्कोहर **(अ)**

लघुतरात्मक व दीर्घउत्तरात्मक प्रश्न–

(i) अमझर से आप क्या समझते है? अमझर गाँव में सूनापन क्यों है ?

उत्तर–'अमझर' एक गाँव का नाम है जिसका अर्थ है– आम के पेड़ो से घिरा गाँव जहाँ आम झरते हैं। पिछले कुछ वर्षो से इन पेड़ो पर सूनापन है। न कोई फल लगता है न नीचे झरते है। कारण पूछने पर पता चला कि जब से सरकारी घोषणा हुई है कि अमरौली प्रोजेक्ट के अन्तर्गत नवागाँव के अनेक गाँव उजाड़ दिए जाएँगे तब से न जाने कैसे आम के पेड़ सूखने लगे। आदमी उजड़ेगा तो पेड़ जीवित रहकर क्या करेंगे।

(ii) आधुनिक भारत के नए शरणार्थी किन्हें कहा गया हैं?

उत्तर–औधोगीकरण के कारण जिन लोगो को अपनी जमीन – घर छोड़कर जाना पड़ा, ऐसे विस्थापित लोग ही आधुनिक भारत के नए शरणार्थी कहलाए जाएंगे। अपने गाँव, घर, परिवेश से हटने के बाद लोगो को ऐसे नये स्थान तलाशने पड़ते है जहाँ वह शरण ले सके या रह सके।

(iii) औधोगीकरण ने पर्यावरण का संकट पैदा कर दिया है, क्यों और कैसे ?

उत्तर–औद्योगिकरण से विकास को तो गति मिलती है परन्तु पर्यावरण को हानि पहुंचती है। वनों की अँधाधुँध कटाई औधोगिक कचरे का निस्तारण तथा गैस उत्सर्जन के कारण उत्पन्न वायु प्रदूषण आदि अनेक समस्याएं पैदा हो सकती है। अनेक लोगों को अपने घर बार एवं परिवेश को छोड़कर विस्थापित होना पड़ता है। जिससे वे अपनी संस्कृति से कट जाते हैं। पेड़ो की अंधाधुंध कटाई से पर्यावरण का संकट उत्पन्न हो जाता है। बाढ जैसी प्राकृतिक विपदाएँ एवं भोपाल गैस त्रासदी जैसी दुर्घटनाएँ इस औद्योगीकरण की देन है। लेखक का मत यह है कि विकास होना तो चाहिए पर उस मॉडल पर नहीं जो हमने यूरोप की नकल पर आधारित योजनाएं बनाते हुए किया है।

(iv) निर्मल वर्मा का साहित्यिक परिचय लिखों।

उत्तर–

निर्मल वर्मा

जन्म – सन् 1929 शिमला (हिमाचल प्रदेश)।

शेखावाटी मिशन–100

प्रमुख कहानी संग्रहः परिंदे, जलती झाड़ी, तीन एकांत, पिछली गरमियों में, कव्वे और काला पानी, बीच बहस में, सूखा तथा अन्य कहानियाँ। वे दिन, लाल टीन की छत, एक चिथड़ा सुख, अंतिम अरण्य (उपन्यास)। रात का रिपोर्टर जिस पर सीरियल तैयार किया गया है उनका प्रसिद्ध उपन्यास है। हर बारिश में, चीड़ों पर चाँदनी धुंध से उठती धुन में उनके यात्रा संस्मरण है। शब्द और स्मृति, कला का जोखिम, ढलान से उतरते हुए (निबंध–संग्रह)।

पुरस्कार– साहित्य अकादमी पुरस्कार।

निधनः– सन् 2005

(v) सिंगरौली, के संबंध में क्या दंत कथा है, इसको 'काला पानी' क्यों माना जाता है?

उत्तर– एक दंत कथा के अंनुसार सिंगरौली नाम 'शृंगावली' पर्वतमाला से निकला है। यह पूर्व–पश्चिम में फैली है। सिंगरौली के चारों ओर घने जंगल है। इनके कारण तथा यातायात के साधन बहुत कम होने के कारण एक जमाने में लोग सिंगरौली में न जाते थे। और न वहाँ से बाहर जाते थे। अपने अपार सौन्दर्य के बावजूद इसको 'काला पानी' कहा जाता था क्योंकि वहाँ के लोगों का सम्पर्क बाहरी दुनिया से नहीं था।

(vi) यूरोप और भारत की पर्यावरण संबंधी चिंताएँ किस प्रकार भिन्न है।

उत्तर– (i) यूरोप में पर्यावरण का प्रश्न मनुष्य और भूगोल के बीच संतुलन बनाए रखने का है, जबकि भारत में यह प्रश्न मनुष्य और उसकी संस्कृति के बीच के नाजुक संतुलन को बनाए रखने का है।

(ii) यूरोप की सांस्कृतिक विरासत संग्रहालयों में सुरक्षित रही है, जबकि भारत की सांस्कृतिक विरासत उन रिश्तों में है जो उसको धरती, जंगलों, नदियों आदि समूचे परिवेश से जोड़ते है।

(vii) निर्मल वर्मा ने स्वातंत्र्योत्तर भारत की सबसे बड़ी ट्रेजडी किसे माना है और क्यों?

उत्तर– लेखक के अनुसार स्वतंत्रता के बाद भारत की सबसे बड़ी ट्रेजडी शासक वर्ग द्वारा विकास के लिए पश्चिमी देशों की देखादेखी व नकल करके बनाई गई योजनाओं से है, जो भारतीय संस्कृति एवं परिवेश से पूर्णतः भिन्न है। देश की आजादी के बाद हमारे अधिकतर प्रारंभिक नेता पश्चिमी देशों से शिक्षित थे। उन्होंने वहाँ की औधोगिक प्रगति देखी थी, किंतु वे यूरोप तथा भारत की सांस्कृतिक भिन्नता के कारण दोनों की सामाजिक प्रवृतियों का अंतर नहीं समझ सके। पश्चिम की नकल करते हुए औद्योगिक विकास की और अग्रसर हो गए। हम पश्चिम को मॉडल न बना कर अपनी शर्तों और मर्यादाओं के आधार पर भारतीय स्वरूप में औद्योगिक विकास कर सकते थे, जिसकी और नीति निर्धारकों ने ध्यान ही नहीं दिया।

निबन्धात्मक प्रश्न–

(i) निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

उत्तर– ये लोग आधुनिक भारत के नए शरणार्थी है, जिन्हें औद्योगीकरण के झंझावत ने अपने घर–जमीन से उखाड़कर हमेशा के लिए निर्वासित कर दिया है। प्रकृति और इतिहास के बीच यह गहरा अंतर है। बाढ़

शेखावाटी मिशन–100

या भूकम्प के कारण लोग अपना घर बार छोड़कर कुछ अरसे के लिए जरूर बाहर चले जाते है, किन्तु आफत टलते ही वे दोबारा अपने जाने पहचाने परिवेश में लौट भी आते है किंतु विकास और प्रगति के नाम पर जब इतिहास लोगो को उन्मूलित करता है तो वे फिर कभी अपने घर वापस नहीं लौट सकते। आधुनिक औधोगीकरण की आँधी में सिर्फ भनुष्य ही नहीं उखड़ता, बल्कि उसका परिवेश और आवास स्थल भी हमेशा के लिए नष्ट हो जाते है।

संदर्भ– प्रस्तुत पंक्तियाँ निर्मल वर्मा के यात्रावृत 'जहाँ कोई वापसी नही' से ली गई है। इसे हमारी पाठ्य–पुस्तक 'अंतरा भाग–2' में संकलित किया गया है।

प्रसंग– व्यक्ति प्राकृतिक विपदाओं के कारण अपना घर बार छोड़कर कुछ समय के लिए विस्थापित होता है पर आधुनिक भारत में औद्योगिकरण के झंझावत ने तमाम लोगो को विस्थापित करके सदा के लिए शरणार्थी बनने को विवश कर दिया है।

व्याख्या–व्यक्ति को प्राकृतिक विपदाओं भूकम्प, बाढ आदि के कारण अपना घर बार छोड़कर थोड़े समय के लिए विस्थापित होकर कहीं अन्यत्र शरण लेनी पड़ती है। जैसे ही प्राकृतिक विपदा शांत हुई वे अपने पुराने घर में, पुराने परिवेश में लौट जाते है किंतु औद्योगीकरण के झंझावत (तूफान) से जो विस्थापन लोगों को झेलना पड़ता है। यह स्थायी किस्म का होता है। जिसमें व्यक्ति को सदा के लिए अपना घर–बार छोड़कर इधर–उधर शरण लेनी पड़ती है। औद्योगीकरण के कारण विस्थापित ये आधुनिक भारत के नए शरणार्थी है जिन्हें अपनी जमीन से अपने घर से सदा के लिए उखाड़कर निर्वासित कर दिया गया है। प्राकृतिक प्रकोप तो कुछ समय के लिए होता है और जैसे ही वह समाप्त होता है विस्थापित लोग पुनः अपने घर में लौट आते हैं।

विशेष–

(i) औद्योगीकरण के कारण होने वाले लोगो के विस्थापन पर लेखक ने चिंता व्यक्त की है।

(ii) लेखक का दृष्टिकोण मानवीय एवं संवेदनशील है।

(iii) विकास और प्रगति का चेहरा मानवीय होना चारिए, यही लेखक कहना चाहता है।

(iv) भाषा सरल, सहज और प्रवाहपूर्ण है।

(v) शैली विवरणात्मक और विचारात्मक है।

शेखावाटी मिशन–100

पाठ–7

ममता कालिया (दूसरा देवदास)

(i) दूसरा देवदास कहानी में लेखिका ने किस परिवेश को केन्द्र में रखा है?

(अ) काशी (ब) मथुरा (स) हरिद्वार (द) अयोध्या (स)

(ii) 'दूसरा देवदास' कहानी में ब्यालू का क्या अर्थ है?

(अ) दोपहर का भोजन (ब) शाम का भोजन (स) शाम की आरती (द) सुबह का भोजन (ब)

(iii) स्पेशल आरती से लेखक का क्या आशय है?

(अ) एक सौ इक्यावन रूपये की आरती (ब) चंदन की थाली वाली आरती

(स) नींलाजली वाली आरती (घ) घी के दीपक वाली आरती (अ)

(iv) ममता कालिया की कहानी 'दूसरा देवदास' का नायक है–

(अ) गौरव (ब) वंशीधर

(स) संभव (द) मोहन **(स)**

(v) संभव की लड़की से पहली मुलाकात कहाँ हुई –

(अ) हर की पोड़ी पर (ब) मंदिर में

(स) बाग में (द) बाजार में **(अ)**

(vi) "मनोकामना की गाँठ विचित्र है, इधर बाँधो और उधर लग जाती है" यह किसने सोचा–

(अ) पारो ने (ब) संभव ने

(स) नानी ने (द) पण्डित ने **(ब)**

(vii) 'दूसरा देवदास' कहानी में गंगापुत्र किसे कहा गया है–

(अ) गोताखोर (ब) भीखारी

(स) पण्डित (द) संभव **(अ)**

(viii) मनोकामना हेतु लाल पीले धागे कितने रुपये में बिक रहे थे–

(अ) दो रुपये (ब) पाँच रुपये

(स) सवा रुपये (द) तीन रुपये **(स)**

लघुतरात्मक व दीर्घउत्तरात्मक प्रश्न–

(i) "इस भीड़ में एक सूत्रता थी न जाति का महत्व था न भाषा का" दूसरे देवदास कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर– दूसरा देवदास कहानी के संदर्भ में, "इस भीड में एक सूत्रता थी, न जाति का महत्व था, न भाषा का" कथन का अर्थ है कि उस भीड़ में सभी लोग एक समान थे न जाति का महत्व था और न ही भाषा का। देवदास कहानी में मुख्य पात्र देवदास और पारो की प्रेमकहानी में जाति और सामाजिक स्थिति के भेदभाव को नहीं दर्शाया गया है जब देवदास और पारो एक दूसरे के साथ होते है तब वे जाति और भाषा की सीमाओं को भूल जाते है यह दर्शाता है कि सच्चे

शेखावाटी मिशन–100

प्रेम में जाति और भाषा का कोई महत्व नहीं होता है।

(ii) मनोकामना की गाँठ भी अद्भूत अनूठी हैं, "इधर बाँधो उधर लग जाती है।" कथन के आधार पर पारो की मनोदशा का वर्णन कीजिए?

उत्तर– कल गंगा घाट पर लड़की की भेंट लड़के से हुई थी और पूजारी ने उन्हें पास खड़ा देखकर भ्रम से पति–पत्नी समझकर फलने–फूलने का आशीष भी दिया। लड़की छिटककर दूर खड़ी हो गई पर उन दोनों के मन में प्रेम का अंकुरण हो गया था। आज मंसा देवी के दर्शन करने के बाद लड़की ने मनोकामना पूरी होने की कलावे की जो गाँठ बाँधी थी लगता था उस गाँठ का असर हुआ और उसकी दुबारा मुलाकात हुई। वह सोचने लगी कि आज ही उसने गाँठ बाँधी थी और आज ही उसकी मुलाकात संभव से हुई उनका परिचय भी हुआ जब मन्नू ने अपनी बुआ का नाम पारो बताया तब संभव ने भी अपना नाम संभव देवदास बताया अर्थात वह पारो का देवदास है। पारों के मन में भी संभव के प्रति प्रेम उत्पन्न हो चुका।

(iii) 'दूसरा देवदास' कहानी के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–ममता कालिया की कहानी 'दूसरा देवदास' एक प्रेमकथा है। कहानी का शीर्षक पात्र, घटना या स्थान के नाम पर रखा जाता है। वह आकर्षक, रोचक, संक्षिप्त एवं कौतूहलवर्धक भी होना चाहिए। संभव को पता चला कि जो लड़की गंगातट पर उसे पूजारी के पास मिली पूजारी ने उन्हें पति–पत्नी समझकर फलो–फूलो का आशीष दिया था उसका नाम पारो है तो उसने परिचय देते हुए अपना नाम बताया, संभव देवदास। पारो और देवदास शरत्चन्द्र के उपन्यास देवदास के पात्र है। इसीलिए इस कहानी का शीर्षक दूसरा देवदास पूरी तरह उपयुक्त है।

(iv) 'दूसरा देवदास' कहानी की मूल संवेदना क्या है।

उत्तर– 'दूसरा देवदास' कहानी में लेखिका 'ममता कालिया' ने हर की पौड़ी हरिद्वार की पृष्ठभूमि में युवा–मन की भावुकता, संवेदना तथा वैचारिक चेतना को अभिव्यक्त किया है। इसः कहानी में अचानक हुई मुलाकात के बाद युवा हृदय में कल्पना तथा रूमानियत के जो भाव उठते है उन्हें बखूवी प्रस्तुत किया है।

(v) लेखिका ने गंगापुत्र किसे कहा है और क्यों?

उत्तर–गंगापुत्र उन गोताखोरों के लिए प्रयुक्त शब्द है जो भक्तो द्वारा गंगा में चढ़ाए गए पैसे गोता लगाकर निकाल लेते है अथवा पूजा के लिए गंगा में किश्ती की तरह तैराये गए दोनो में से पैसे बटोरते हैं। गंगा ही उनकी जीविका का साधन है। वे इसी क्षेत्र में पले–बढ़े है। गंगा ही इनकी माँ है अतः लेखिका ने इन्हें गंगापुत्र कहा है।

(vi) हर की पौड़ी पर होने वाली गंगा जी की आरती का 'दूसरा देवदास' कहानी के आधार पर भावपूर्ण वर्णन कीजिए।

उत्तर– हर की पौड़ी पर गंगा जी के अनेक मंदिर है। पंडित–पुजारी गंगा जी की आरती की तैयारी करने में व्यस्त है। पीतल की नीलांजलि (आरती) हजारो बत्तियाँ घी में भीगोकर रखी गई है। कुछ भक्तों ने स्पेशल आरती बोल रखी है अर्थात एक सौ इक्यावन रूपये वाली आरती। अचानक हजारों दीप जल उठते है आरती शुरू हो जाती है जय जय गंगे माता,

शेखावाटी मिशन–100

जो कोई तुझको ध्याता। सारे सुख पाता, जय गंगे माता। फिर भक्तों का समवेत स्वर गूँजता है।

(vii) ममता कालिया का साहित्यिक परिचय लिखो ?

उत्तर– <u>ममता कालिया</u>

जन्म – सन 1940 मथुरा (उत्तर प्रदेश)।

प्रकाशित कृतियाँ–

बेघर, नरक दर नरक, एक पत्नी के नोट्स, प्रेम कहानी, लड़कियाँ, दौड़ (उपन्यास), हाल ही में दो कहानी संग्रह प्रकाशित – पच्चीस साल की लड़की, थियेटर रोड़ के कौवे।

प्रमुख पुरस्कार–

साहित्य भूषण 2004 में, कहानी समान 1989 में अभिनव भारती कलकता द्वारा रचना पुरस्कार एवं श्रेष्ठ कहानी पुरस्कार।

<u>निबन्धात्मक प्रश्न–</u>

(i) निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

उत्तर– लड़की ने आज गुलाबी परिधान नहीं पहना था पर सफेद साड़ी में लाज से गुलाबी होते हुए उसने मंसा देवी पर एक और चुनरी चढ़ाने का संकल्प लेते हुए सोचा "मनोकामना की गाँठ भी अद्भूत, अनूठी है इधर बाँधो उधर लग जाती है पारो बुआ पारो बुआ इनका नाम है..." मन्नू ने बुआ का आँचल खींचते हुए कहा। "संभव देवदास" संभव ने हँसते हुए वाक्य पूरा किया। उसे भी मनो कामना का लाल पीला धागा और उसमें पड़ी गिठान का मधुर स्मरण हो आया।

संदर्भ– प्रस्तुत पंक्तियाँ ममता कालिया की कहानी 'दूसरा देवदास' से ली गई है। यह कहानी हमारी पाठ्य पुस्तक 'अंतरा भाग–2' में संकलित है।

प्रसंग– हर की पौड़ी पर गंगा स्नान के बाद संभव को वहाँ एक लड़की मिली। दोनो को बहुत पास खड़ा देखकर और लड़की द्वारा प्रयुक्त 'हम' शब्द से पुजारी को दोनों का पति–पत्नी होने का भ्रम हुआ। उसने आशीर्वाद दिया। अगले दिन मंसादेवी मंदिर से लौटते समय वही लड़की अपने भतीजे के साथ संभव को मिली।

व्याख्या– कल उस लड़की ने गुलाबी वस्त्र पहने थे आज वह सफेद साड़ी में थी और लज्जा से गुलाबी हो रही थी। लड़की ने मंसा देवी के दर्शन कर मनोकामना पूरी होने की गाँठ बाँधी तो उधर संभव ने भी मनोकामना पूरी होने की गाँठ धागे से बांध दी। संभव को देखकर लड़की ने मन ही मन संकल्प लिया कि देवी पर एक चूनर और चढ़ाऊँगी। वह सोच रही थी कि मनोकामना की यह गाँठ कैसी अद्भूत व अनोखी है। इधर बाँधो उधर लग जाती है। लड़की के साथ आया छोटा भाई लड़का मन्नू उसका भतीजा था पहले ही हर की पोड़ी पर संभव से मिल चुका था और उसे अपना मित्र भी बना लिया।

विशेष–

शेखावाटी मिशन–100

(i) विवरणात्मक शैली तथा सहज, सरल भाषा प्रयुक्त है।

(ii) 'दूसरा देवदास' एक प्रेम कहानी है। देवदास उपन्यास के नायक नायिका के जो नाम है वही इस कहानी के नायक–नायिकाओं के भी है।

(iii) संभव ने अपना नाम संभव देवदास बताकर यह बता दिया कि वह पारो से प्रेम करने लगा है। पारो व देवदास की प्रसिद्ध कहानी शरत बाबू के बगंला उपन्यास देवदास में है।

(ii) गंद्याश सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

भीड़ लड़के ने दिल्ली में भी देखी थी, बल्कि रोज देखता था। दफ्तर जाती भीड, खरीद–फरोख्त करती भीड़, तमाशा देखती भीड, सड़क क्रॉस करती भीड़। लेकिन इस भीड़ का अंदाज निराला था। इस भीड़ में एकसूत्रता थी। न यहाँ जाति का महत्व था, न भाषा का, महत्त्व उद्देश्य का था और वह सबका समान था, जीवन के प्रति कल्याण भावना। इस भीड़ में दौड़ नहीं थी, अतिक्रमण नहीं था और भी अनोखी बात यह थी कि कोई भी शरणार्थी किसी सैलानी आनंद में डुबकी नहीं लगा रहा था।

उत्तर–**संदर्भ** – प्रस्तुत गंद्याश पाठयपुस्तक अंतरा (भाग 2) में संकलित दूसरा देवदास से अवतरित है जो लेखिका ममता कालिया द्वारा रचित है।

प्रसंग – बैसाखी के दिन हर की पौड़ी पर एकत्रित हुई श्रद्धालुओं की भीड़ देखकर अंचभित संभव कहता है, ऐसा नहीं है कि उसने ऐसी भीड़ पहले कभी न देखी हो, बल्कि वह रोजाना ही दिल्ली में ऐसी ही भीड़ देखता है, जो दफ्तर जाती है, वस्तुओं को खरीदती–बचती है, किसी घटना पर तमाशबीन बनकर उसे देखती रहती है या फिर सड़क पार करती है ऐसी अनेक भीड़, उन सब भीड़ से अलग थी दिल्ली में देखी गई भीड़ बिखराव था, लेकिन इस भीड में एकसूत्रता की भावना थी। इसमें न जाति, न भाषा किसी आधार पर कोई भेदभाव न था, बल्कि सभी का एक उद्देश्य, एक लक्ष्य था। उससे भी महत्वपूर्ण बात गंगा के पवित्र जल में स्नान से अधिक स्वंय से आत्मसात होने की प्रक्रिया थी। जिसमें श्रद्धालु जितना अधिक ध्यान लगाते उत्तना ही अधिक स्वयं को अहम मुक्त, कुंठारहित अनुभव करते हैं।

विशेष – (i) भारतीय संस्कृति की विशेषता अनेकता में एकता का उल्लेख किया है।

(ii) वर्णनात्मक शैली

(iii) तत्सम शब्द मुक्त भाषा व प्रवाहपूर्ण भाषा

शेखावाटी मिशन–100

पाठ–8

हजारी प्रसाद द्विवेदी (कुटज)

(i) 'कुटज' निबंध में पृथ्वी का मानदण्ड किसे कहा गया है?

(अ) अरावली पर्वत (ब) हिमालय को (स) सतपुड़ा को (क) विध्याचल को (ब)

(ii) लेखक ने 'कुटज' के जीवन की तुलना किससे की है?

(अ) राजा पृथु से (ब) राजा जनक से (स) राजा दशरथ से (द) राजा हरिश्चंद्र से (ब)

(iii) "मनस्वी मित्र तुम धन्य हो" मनस्वी मित्र का प्रयोग किस लिए हुआ है?

(अ) कुंभज मुनि के लिए (ब) द्विवेदी के लिए

(स) कुटज के लिए (द) ऋषि मुनि के लिए (स)

(iv) कुटज नाम से किस मुनि को जाना जाता है?

(अ) नारद मुनि (ब) अगस्त्य मुनि (स) वशिष्ठ मुानि (द) पुलस्त्य मुनि (ब)

(v) हजारी प्रसाद द्विवेदी ग्रंथावली कितने भागों में संकलित है?

(अ) दस (ब) सात (स) ग्यारह (द) बारह (स)

(vi) हजारी प्रसाद द्विवेदी ने अपराजेय जीवन शक्ति का प्रतीक कहा है–

(अ) कनेर (ब) शीशम

(स) कुटज (द) बरगद **(स)**

(vii) 'आत्मनस्तु कामाय सर्वं प्रियं भवति' कथन है–

(अ) कालिदास (ब) याज्ञवल्क्य

(स) द्विवेदीजी (द) गाँधीजी **(ब)**

(viii) हजारी प्रसाद द्विवेदी का जन्म हुआ– .

(अ) 1915 ई. (ब) 1907 ई.

(स) 1911 ई. (द) 1920 ई. **(ब)**

(ix) कुटज का वृक्ष पाया जाता है–

(अ) शिवालिक पर्वत श्रृंखला (ब) विन्ध्याचल

(स) अरावली (द) कैलाश पर्वत **(अ)**

<u>लघुतरात्मक व दीर्घउत्तरात्मक प्रश्न</u>–

(i) कुटज के वृक्ष की तीन विशेषताएं अपने शब्दों में लिखिए–

उत्तर–कुटज के वृक्ष पर्वत की काफी ऊँचाई पर मिलते हैं। वहाँ पानी की कमी है।

–भयंकर गर्मी में भी ये वृक्ष सरस (हरे–फरे) और फूलो से लदे रहते है। कुटज की जड़े पर्वत की चट्टानों को फोड़कर गहराई से पानी ग्रहण कर लेती है।

–कुटज की जीवनी–शक्ति दुरंत है। कठोर पथरीली जमीन, जल का आभाव, भीषण गर्मी में भी कुटज हरा–भरा व

शेखावाटी मिशन–100

फूलो से लदा रहता है।

(ii) कुटज को 'गाढे का साथी' क्यों कहा गया है ?

उत्तर– 'गाढे का साथी' का तात्पर्य है कठिन समय में साथ देने वाला। गरमी में जब कोई और फूल पुष्पित दिखाई नहीं देता तब कुटज ही खिलता रहता है। कालिदास ने अपने काव्य 'मेघदूत' में लिखा है कि जब रामगिरि पर रहने वाले यक्ष ने अपनी प्रिया के पास सन्देश भेजने हेतु 'मेघ' को तैयार किया तो उसे कुटज पुष्प अर्पण किया। जब कोई दूसरा पुष्प उपलब्ध नहीं था, तब कुटज ही काम आया। इस कारण द्विवेदी जी ने उसे गाढे का साथी कहा है।

(iii) कुटज किस प्रकार अपनी अपराजेय जीवनी शक्ति की घोषणा करता है ?

उत्तर–कुटज विपरीत परिस्थितियों में भी जीवित रहकर अपनी अपराजेय जीवनी शक्ति की घोषणा करता है। कठोर पाषाण को भेदकर, झंझा– तुफान को रगड़कर अपना भोजन प्राप्त कर लेता है। और भयंकर लू के थपेड़ो में भी सरस बना रहता है, खिला रहा है। प्राण ही प्राण को पुलकित करता है। जीवन शक्ति ही जीवन शक्ति को प्रेरणा देती है। कुटज की यही अपराजेय जीवनी शक्ति हमें उल्लासपूर्ण जीने की प्रेरणा देती है। चाहे सुख हो या दुख, अपराजित होकर उल्लास विकीर्ण करते हुए जीवित रहे यही कुटज का संदेश है।

(iv) 'कुटज' हम सभी को क्या उपदेश देता है? टिप्पणी कीजिए ?

उत्तर– कुटज हम सभी को अपराजेय जीवनी शक्ति का उपदेश देता है। कठिन परिस्थितियों में भी जिजीविषा के बल पर कुटज न केवल जी रहा है। अपितु हँस भी रहा है। न वह किसी को अपमानित करता है न ग्रहो की खुशामद करता है वह अवधूत की भाँति कह रहा है चाहे सुख हो या दुख प्रिय हो या अप्रिय, जो मिल जाए उसे अपराजित ह्रदय से सोल्लास ग्रहण करो, हार मत मानों।

(v) हजारी प्रसाद द्विवेदी का साहित्यिक परिचय लिखों ।

उत्तर– <u>**हजारी प्रसाद, द्विवेदी**</u>

जन्म सन् 1907, आरत दूबे का छपरा, बलिया (उत्तर–प्रदेश) में हुआ।

महत्वपूर्ण रचनाएँ –

अशोक के फूल, विचार और वितर्क, कल्पलता, कुटज, आलोक पर्व (निबंध –संकलन) बाणभट्ट की आत्मकाथा, पुनर्नवा, अनाम दास का पोथा (उपन्यास) सूर–साहित्य, कबीर, हिन्दी साहित्य की भूमिका, कालिदास की लालित्य योजना। हजारी प्रसाद द्विवेदी ग्रन्थावली (ग्यारह खंड) में संकलित है।

निधन– सन् 1979 में हुई।

(vi) "जीना भी एक कला है और कुटज इस कला को जानता है" पाठ के आधार पर कथन को समझाइए ।

उत्तर– आचार्य द्विवेदी ने तो जीने को कला से सभी बढ़कर एक तपस्या माना है। तपस्या में तल्लीनता और सहिष्णुता का होना आवश्यक होता है। गीता में कहा गया है 'सुख–दुःख समे कृत्वा लाभालाभौ, जयाजयौ।' यही जीवन जीने की जीने की कला बताता है। हिमालय कला है, रहस्य है। 'कुटज' हमें जीने की कला बताता है। हिमालय के ऊँचे पथरीले प्रदेश में, जहाँ घास भी भीषण गर्मी, लू और जलाभाव में सूख जाती है, वहाँ, कुटज हरा–भरा और फूलों से लदा रहता

शेखावाटी मिशन–100

है। उसकी जड़े चट्टानों को तोड़कर गहराई से अपना भोजन प्राप्त करती है। वह सिखाता है कि विपरित परिस्थितियों में संघर्ष करके ही मनुष्य जी सकता है।

निबंधात्मक प्रश्न–

(i) **गंद्याश सप्रसंग व्याख्या कीजिए।**

नाम इसलिए बड़ा नहीं है कि वह नाम है वह इसलिए बड़ा होता है कि उसे सामाजिक स्वीकृति मिली होती है। रूप व्यक्ति सत्य है, नाम समाज–सत्य। नाम उस पद को कहते हैं जिस पर समाज की मुहर लगी होती है। आधुनिक शिक्षित लोग जिसे 'सोशल सेक्शन' कहा करते है। मेरा मन नाम के लिए व्याकुल है, समाज द्वारा स्वीकृत, इतिहास द्वारा प्रमाणित, समष्टि–मानव की चित्त–गंगा में स्नात।

उत्तर – **संदर्भ –** प्रस्तुत पंक्तियाँ 'कुटज' नामक ललित निबंध से अवतरित है द्विवेदी जी का यह निबंध हमारी पाठ्य पुस्तक अंतरा (भाग–2) में संकलित है।

प्रसंग– क्या किसी वस्तु का नया नाम रख सकते है? इसलिए लेखक हल निकालता है कि नया नाम दे पाना संभव नहीं क्योंकि नाम से ही पहचान जुड़ी हुई होती है।

व्याख्या – लेखक कहता है इस वृक्ष का नाम मुझे याद नहीं आ रहा आए इसे पहचान पाना भी संभव नहीं हो रहा। इससे यह बात प्रमाणित होती है फि नाम बड़ा है, रूप नहीं। तब लेखक ने सोचा क्यों न इसका नया नामकरण कर दिया जाये। पर मन इसके लिए तैयार नहीं हुआ। नाम को नाम रखने मात्र से महत्ता प्राप्त नहीं होती। नाम को सामाजिक स्वीकृति प्राप्त है। समाज में उसकी पहचान इस नाम से ही है इसलिए नाम बड़ा है। रूप का संबंध व्यक्ति से है किन्तु नाम समाज की सम्पत्ति है। समाज ने ही उसे वह नाम दिया है और समाज उसे उस नाम से ही पहचानता है। इसी को 'सोशल सेक्शन' या सामाजिक स्वीकृति कहा जाता है। यही कारण है कि लेखक का मन इस वृक्ष के उस नाम को जानने के लिए व्याकुल है जो समाज द्वारा स्वीकृत है तथा समाज रूपी मानव की चितरूपी गंगा में स्नान किए हुए है।

विशेष – (i) नाम इसलिए बड़ा है क्योकि उसे सामाजिक स्वीकृति प्राप्त है।

(ii) तत्सम प्रधान शब्दावली।

(iii) विवेचनात्मक शैली का प्रयोग किया गया है।

शेखावाटी मिशन–100

अन्तराल भाग–2

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

प्र:1 'चूल्हा ठंडा किया होता, तो दुश्मनों का कलेजा कैसे ठंडा होता।' यह कथन किसका है। 'सूरदास की झोपड़ी' पाठ के आधार पर बताइए।

(अ) जगधर (ब) नायकराम (स) ठाकुरदीन (द) बजरंगी (ब)

प्र:2 सूरदास ने भीख माँगकर कितनी पूँजी एकत्रित कर ली थी?

(अ) चार सौ रुपये (ब) पाँच सौ रुपये

(स) तीन सौ रुपये (द) दो सौ रुपये (ब)

प्र:3 भैरों को उकसाने और भड़काने में किसकी भूमिका थी?

(अ) जगधर की (ब) सुभागी की

(स) ठाकुरदीन की (द) नायकराम की (अ)

प्र:4 सुभागी अपने पति की मार से बचने के लिए कहाँ छिप जाती है?

(अ) मंदिर के पीछे (ब) पत्थर के पीछे

(स) स्वयं के घर के पीछे (द) सूरदास की झोपड़ी में (द)

प्र:5 'बिस्कोहर की माटी' शीर्षक पाठ किस शैली में लिखा गया है

(अ) आत्मकथात्मक शैली (ब) भावात्मक शैली

(स) विवरणात्मक शैली (द) विवेचनात्मक शैली (अ)

प्र:6 'बिस्कोहर की माटी' शीर्षक पाठ कहाँ से लिया गया है ?

(अ) अतीत के चलचित्र से (ब) आत्मकथा नंगातलाई का गाँव

(स) आवारा मसीहा से (द) हिन्दी आलोचना (ब)

प्र:7 "कोइया वही जलपुष्प है, जिसे कुमुद कहते है।" "बिस्कोहर की माटी" पाठ में इसका एक अन्य नाम क्या है?

(अ) कोका–बेली (ब) कमल – ककड़ी

(स) भसीण (द) कमल–पत्र (अ)

प्र:8 'अपना मालवा खाऊ – उजाडू सभ्यता में' पाठ जनसत्ता के किस स्तंभ से लिया गया है ?

(अ) कागद मसी (ब) मालवा दर्शन

(स) कागद कारे (द) अपना मत (स)

प्र:9 'खाऊ – उजाडू सभ्यता' किसकी देन है?

(अ) पाकिस्तान की (ब) यूरोप और अमेरिका

(स) चीन की (द) रूस की (ब)

प्र:10 'अपना मालवा खाऊ – उजाडू सभ्यता में' पाठ के आधार पर लेखक क्या कहना चाहता है ?

शेखावाटी मिशन–100

(अ) विकास की गति के साथ पर्यावरण रक्षा का सामंजस्य होना आवश्यक है।

(ब) कल – कारखाने लगाने जरूरी हैं।

(स) पर्यावरण रक्षा अनिवार्य है।

(द) नदियों पर पुल बनाने आवश्यक है। (अ)

प्र:11 'सूरदास की झोपड़ी' कहानी प्रेमचंद के किस उपन्यास का अंश है?

(अ) गोदान (ब) रंगभूमि

(स) कर्मभूमि (द) गबन **(ब)**

प्र:12 सुभागी किसकी पत्नी थी?

(अ) भैरों की (ब) जगधर की

(स) सूरदास की (द) नायकराम **(अ)**

प्र:13 सुभागी भैरों की मार के डर से कहाँ छिप जाती है?

(अ) खेत में (ब) मेले में

(स) सूरदास की झोपड़ी में (द) कहीं नहीं **(स)**

प्र:14 किस घटना से सूरदास को आत्मग्लानि हुई और वह फूट–फूटकर रोया ?

(अ) झोपड़ी में आग लगने से (ब) पैसे चलें जाने से

(स) चरित्र पर प्रश्न उठाने से (द) अंधे होने के कारण **(स)**

प्र:15 यह किसने सोचा कि जब तक सूरे को रुलाएगा, तड़पाएगा नहीं तब तक उसे चैन नहीं मिलेगा।

(अ) नायकराम ने (ब) भैरों ने

(सं) जगधर ने (द) सभी ने **(ब)**

प्र:16 'बिस्कोहर की माटी' पाठ में 'भसीण' शब्द का संबन्ध किस पुष्प से है?

(अ) हरसिंगार (ब) चमेली (स) कमल (द) गुलाब **(स)**

प्र:17 'छप्पन का काल' किस वर्ष पड़ा?

(अ) 1856 (ब) 1999 (स) 1973 (द) 1899 **(द)**

प्र:18 'सूरदास की झोंपडी' कहानी का का मुख्य पात्र कौन है?

(अ) सूरदास (ब) भैरों (स) सुभागी (द) जगधर **(अ)**

प्र:19 क्षिप्रा नदी द्वारा किसके पाँव पखारे जाते है–

(अ) ओंकारेश्वर (ब) महाकालेश्वर (स) नर्बदेश्वर (द) त्रंबकेश्वर **(ब)**

प्र:20 गाँव में 'लू' से बचने की दवा थी–

(अ) पक्के आम का रस (ब) प्याज का शरबत **(स)**

(स) कच्चे आम का पना (द) नींबू का रस

शेखावाटी मिशन–100

प्र:21 सूरदास की झोपड़ी से रुपयों की थैली उठाने व उसे जलाने का काम किसने किया ?

(अ) भैरों ने (ब) जगधर ने

(स) नायकराम ने (द) गणेशी ने **(अ)**

प्र:22 किसने कहा–यह कैसे लगी सूरे, चूल्हे में तो आग नहीं छोड़ दी थी ?

(अ) भैरो ने (ब) जगधर ने

(स) नायकराम ने (द) बजरंगी ने **(द)**

प्र:23 यह किसने कहा कि क्या। आज चूल्हा ठंडा नहीं किया था ?

(अ) भैरो ने (ब) बजरंगी ने

(स) जगधर ने (द) नायकराम ने **(स)**

प्र:24 यह किसने कहा– तुम क्या बिगाड़ोगे, भगवान आप ही बिगाड़ देंगे। इसी तरह जब मेरे घर में चोरी हुई थी, तो सब स्वाहा हो गया था–

(अ) ठाकुरदीन (ब) नायकराम

(स) बजरंगी (द) सुभागी **(अ)**

प्र:25 यह किसने कहा– अन्दर तो जा सकते हो; पर बाहर नहीं निकल सकते। अब चलो आराम से सो रहो जो होना था, हो गया। पछताने से क्या होगा?

(अ) ठाकुरदीन (ब) नायकराम

(स) बजरंगी (द) जगधर **(ब)**

प्र:26 यह किसने कहा– कि मुहल्लेवाले तुम्हें भड़कायेंगे, पर मैं भगवान से कहता हूँ मैं इस बारे में कुछ नहीं जानता ?

(अ) भैरो (ब) सुयागी

(स) जगधर (द) बजरंगी **(स)**

प्र:27 'जो खुद भी खोंचा लेकर घूमकर' कम तौलता है, उसका मन आज सूरे के पैसों को लेकर विचलित हो रहा था–वह है।

(अ) भूरा (ब) जगधर

(स) नानकराम (द) ठाकुरदीन **(ब)**

प्र:28 सूरदास की झोपड़ी में आग लगाने के बारे में कौन जानता था ?

(अ) सुभागी (ब) बजरंगी

(स) ठाकुरदीन (द) नायकराम **(अ)**

प्र:23 मिठुआ किसके घर से रोता हुआ चला आ रहा था ?

(अ) भैरो (ब) जगधर

(स) बजरंगी (द) घीसू **(द)**

शेखावाटी मिशन–100

प्र:30 किसने कहा कि– हम भी सौ लाख बार बनाएंगे–

(अ) मीठुआ ने (ब) घीसू ने

(स) सूरदास ने (द) बजरंगी ने **(स)**

प्र:31 भस्म स्तूप के चारों और कौन जमा हो गए जिन्होंने .... प्रश्नों से सूरदास को परेशान कर दिया ?

(अ) ग्रामीणों ने (ब) बालकों ने

(स) औरतों ने (द) किसी ने नहीं **(ब)**

प्र:32 आजकल तो देखते ही हो, बल्लमटेरों के मारे बिकरी कितनी मंदी हैं ? किसने कहा?

(अ) भैरो (ब) जगधर

(स) सूरदास (द) सुभागी **(अ)**

प्र:33 गाँव में अकाल के समय प्राकृतिक सपंदा के रूप में विश्वनाथ त्रिपाठी ने किसे खाने योग्य बताया है–

(अ) कमल ककड़ी (ब) पेड़ की छाल

(स) दोनों ही (द) दोनों ही नहीं **(अ)**

प्र:34 कमल, कोइयाँ, हर सिंगार तोरो, लौकी, भिण्डी, भटकटैया, इमली, कदंब आदि किसके नाम है?

(अ) फलों के (ब) फूलों के

(स) दोनों (द) दोनों ही नहीं **(ब)**

प्र:35 डोड़हा मजगिदवा, धामिन, गोंहुअन, घोर कड़ाइच आदि प्रजाति है–

(अ) बिच्छुओं की (ब) नेवलों की

(स) सांपों की (द) कीटों की **(स)**

प्र:36 कौन अपनी चोंच से इतनी सतर्कता, कोमलता से डैनों के अंदर अंडे छिपा लेती है?

(अ) चील (ब) बतख

(स) कोयल (द) सारस **(ब)**

प्र:37 बिसनाथ का छोटा भाई पैदा हो जाने से उसका दूध कट गया बाद में उसको किसने पाला?

(अ) नानी ने (ब) मौसी ने

(स) कसेरिन दाइ ने (द) बुआ ने **(स)**

प्र:38 सुई की डोरी से बनी हुई कथरी को क्या कहते हैं?

(अ) गुदड़ी (ब) सुजनी

(स) दोनों ही (द) दोनों ही नहीं **(स)**

प्र:39 कमल, कोइयाँ हरसिंगार आदि पुष्प किस ॠतु में फूलते हैं।

(अ) वर्षा (ब) ग्रीष्म

शेखावाटी मिशन–100

(स) हेमंत (द) शरद **(द)**

प्र:40 भरभंडा या सत्यानाशी फूल का दूध माँ कब लगाती थी?

(अ) हड्डी दर्द होने पर (ब) कान दर्द

(स) आँख आने पर (द) सिरदर्द **(स)**

प्र:41 फूल खिले, खिले फूल

धान फूल, कोदो फूल

कुटकी फूल, खिले। कविता के कवि है?

(अ) बिसनाथ (ब) नवल शुक्ल

(स) पंत (द) प्रसाद **(ब)**

प्र:42 सबसे खतरनाक साँप की प्रजाति गोंहुअन थी जिसे और किस नाम से जानते थे?

(अ) घोर कड़ाइच (ब) फेंटारा

(स) धामिन (द) डोंहड़ा **(ब)**

प्र:43 चेचक के रोगी के पास कौन फूल और पत्ते रखे जाते थे?

(अ) पीपल के (ब) खेजड़ी के

(स) सरसों के (द) नीम के **(द)**

प्र:44 ततैया का डंक किस फूल के सूँघने से झड़ जाता था?

(अ) बेर का फूल (ब) हरसिंगार

(स) इमली का फूल (द) सभी **(अ)**

प्र:45 कटहल किस ऋतु का फल और तरकारी है ?

(अ) सर्दी का (ब) वर्षा का

(स) गर्मी का (द) सभी का **(स)**

प्र:46 खेतों में पानी देने के लिए जो नालियाँ बनाई जाती है, उन्हें कहते हैं?

(अ) बरहा (ब) गढ़ढे

(स) रेती (द) सिंचारी **(अ)**

प्र:47 बिस्कोहर में किसके घर के आँगन में जूही लगी थी?

(अ) संतोषी भैया (ब) जतिन भैया

(स) सोम् भैया (द) सीतू भैया **(अ)**

प्र:48 सूरदास का चरित्र है–

(अ) ईर्ष्या भाव वाला (ब) प्रतिशोध लेने वाला

शेखावाटी मिशन–100

(स) पराई स्त्री पर बुरी नजरवाला (द) पुनर्निमाण मैं विश्वासी **(द)**

प्र:49 झोपड़ी से निकलती ज्वालाओं की तुलना किससे की है?

(अ) मंदिर के स्वर्ण कलश से (ब) जल में चाँद के प्रतिबिम्ब से .

(स) अ व ब दोनों (द) लहराती हुई नागिन से **(अ)**

प्र:50 बिस्कोहर में देवी का फूल माना जाता है–

(अ) गुड़हल का पुष्प (ब) हरसिंगार पुष्प

(स) बेर का पुष्प (द) नीम का पुष्प **(अ)**

प्र:51 मालवा में मानसून के जाने का महीना होता है।

(अ) अगहन (ब) क्वार

(स) पूस (द) मार्गशीर्ष **(ब)**

प्र:52 अपना मालवा 'खाऊ उजाडू' सभ्यता, पाठ प्रभाष जोशी ने लिखा तब इनकी उम्र थी–

(अ) 50 वर्ष (ब) 60 वर्ष

(स) 70 वर्ष (द) 80 वर्ष **(स)**

प्र:53 किस नदी ने यशवंत सागर को इतना भर दिया कि 25 साइफन एक साथ चलाने पड़े –

(अ) चंबल (ब) गंभीर

(स) पार्वती (द) बनास **(ब)**

प्र:54 ज्ञान तो पश्चिम रेनेसां के बाद ही आया है–कथन में भाव है–

(अ) लक्षणा (ब) क्रोध

(स) क्षोभ (द) व्यंग्य **(द)**

प्र:55 हाथीपाला नाम क्यों पड़ा?

(अ) हाथी पर बैठकर गुजरने के कारण (ब) चंद्रभागा के कारण

(स) ऊँचे स्थल पर होने के कारण (द) हाथियों की अधिकता से **(अ)**

प्र:56 ओंकारेश्वार जाते समय कौनसा घाट आता है?

(अ) विंध्य घाट (ब) रानीघाट

(स) मालवा घाट (द) राजघाट **(अ)**

प्र:57 नेमावर के रास्ते ही केवड़ेश्वर से कौनसी नदी निकलती है?

(अ) गंभीरी (ब) पार्वती

(स) शिप्रा (द) चंबल **(स)**

प्र:58 पिछले 128 सालों में मालवा में कब 77 इंच तक पानी गिरा था?

(अ) 1873 (ब) 1888

शेखावाटी मिशन–100

(स) 1973 (द) 1956 **(स)**

प्र:59 भारी बारिश से सोयाबीन की फसल गल गई, लेकिन इसकी भरपाई किस फसल से हुई?

(अ) गेहूँ व चने (ब) सरसो व सौंफ

(स) रागी व उड़द (द) सभी **(अ)**

प्र:60 नयी दुनिया पत्रिका की लाइब्रेरी में पानी के रिकॉर्ड कब से उपलब्ध हैं?

(अ) 1847 (ब) 1858

(स) 1857 (द) 1878 **(द)**

प्र:61 लेखक प्रभास जोशी नदी को क्या मानते हैं?

(अ) जल स्रोत (ब) माता

(स) सुलभ स्रोत (द) धरोहर **(ब)**

प्र:62 इनमें से दो मुँहा सर्प होता है?

(अ) मजगिदवा (ब) डोंडहा

(स) भटिहा (द) फैंटारा **(स)**

प्र:63 सबसे खतरनाक साँप जिसके काट लेने पर आदमी घोड़े की तरह हिनहिनाकर मरे –

(अ) मजगिदवा (ब) धामिन

(स) घोर कड़ाइच (द) फैंटारा **(स)**

प्र:64 हजारी प्रसाद द्विवेदी का कथन क्या यह सब बिना किसी प्रयोजन के है? बिना किसी उद्देश्य के है? किस संबंध में है?

(क) माँ की ममता (ब) मित्र का प्रेम

(स) बतखों का पानी में तैरना (द) शरद ऋतु में हर सिंगार का खिलना **(अ)**

प्र:65 नागदा स्टेशन पर मीणा जी बिना चीनी की चाय पिलाते थे, समाचार भी देते थे, किस कारण दुखी थे?

(अ) पानी गिरने से (ब) चाय कम बिकने से

(स) गई रात बिजली गिरने से (द) गई रात क्वालालंपुर में भारत के हारने से **(द)**

लघुत्तरात्मक प्रश्नः–

प्र:1 **''सूरदास की झोपड़ी'' पाठ के आधार पर लिखिए कि पूरे मोहल्ले में सूरदास की बदनामी क्यों हुई?**

उत्तर– भैरो सूरदास का पड़ोसी था। वह अपनी पत्नी सुभागी को पीटता था। वह पिटाई से बचने के लिए सूरदास की झोंपड़ी में छिप जाती है। सूरदास के हस्तक्षेप से वह उसे मार नहीं पाता । परिणामस्वरूप वह सुभागी और सूरदास के अनैतिक संबंधों की बात कहने लगता है। इससे सूरदास की पूरे मोहल्ले में बदनामी होती है और उसके चरित्र पर प्रश्न उठाये जाने लगते है।

शेखावाटी मिशन–100

प्र:2 "यह फूस की राख न थी, उसकी अभिलाषाओं की राख थी।" सूरदास की झोंपड़ी पाठ के आधार पर इस कथन को सिद्ध कीजिए।

उत्तर– सूदास बैठा रहा। लोग चले गए थे और धीरे–धीरे झोपड़ी की आग ठंडी हो गई थी। तब वह उठा और अनुमान से द्वार की ओर से झोपड़ी में घुसा। उसने उसी दिशा में राख को टटोलना शुरू किया, जहाँ छप्पर में पोटली रखी थी। निराशा, उत्तावलेपन और अधीरता से उसने सारी राख छान डाली परन्तु पोटली नहीं मिली।

उसने एक–एक कर रुपये जोड़े थे। उसने सोचा था कि उन रुपयों से वह गया जाकर अपने पितरों का पिंडदान करेगा। वह अपने पुत्र मिठवा की शादी करेगा और चैन की रोटी खायेगा। झोंपड़ी जलने से उसके सारे अरमान ही जल गए थे। यह फूस की राख नही थी, यह उसकी इन्हीं अभिलाषाओं की राख थी।

प्र:3 झोपड़ी में आग लग जाने से सूरदास को किस बात का दुख था? और क्यों–

उत्तर–उसे पोटली के जल जाने का दुख था क्यों कि जो उसके जीवन भर की कमाई थी, जो उसकी सारी यातनाएँ और रचनाओं का निष्कर्ष थी। उसे दुख था कि उस पोटली में उसका, उसके पितरों का और उसके नाम लेवा का उद्धार संचित था।

प्र:4 सूरदास पोटली में जमा पैसों से क्या–क्या करना चाहता था?

उत्तर–गया जाकर पित्तरों को पिण्डदान करना, मिठुआ की सगाई कर बहु घर लाना ताकि उसको रोटी अपने हाथों से न बनानी पड़े।

प्र:5 लोगों के चले जाने के बाद भी सूरदास झोपड़ी की गर्म राख में क्या पाना चाह रहा था ?

उत्तर–लोगों के चले जाने के बाद सूरदास ने सोचा की पोटली जल गई होगी पर रुपयों की चाँदी तो कहीं, गई ना होगी। अतः वह उन रुपयों की चाँदी उस गर्म राख में ढूँढ़ रहा था।

प्र:6 जगधर को कैसे अंदेशा हुआ कि झोपड़े में आग–भैरो ने लगाई होगी?

उत्तर–क्योंकि भैरो ने जगधर से सूरदास को रुलाने की बातें कही थी और कहा था कि वह अपमान का बदला अवश्य लेगा।

प्र:7 जगधर भैरों को सूरदास के रुपये क्यों वापस लौटाने को कह रहा था?

उत्तर–जगधर मन का खोटा आदमी नहीं था पर इस समय वह भैरों के पास अचानक आए इतने धन को पचा नहीं पा रहा था, वह सोच रहा था कि आधे रुपये उसे मिल जाए तो अच्छा रहे।

प्र:8 जगधर भैरों को क्या–क्या कहकर डराता है कि तुम्हें सूरदास रुपये वापस लौटा देने चाहिए?

उत्तर–सूरे की बड़ी मसक्कत की कमाई है। हजम न होगी, पुलिस पकड़ लेगी या गरीब ही हाय बड़ी जानलेवा होती है आदि बातें कहकर डराता है।

प्र:9 सुभागी किसको, भैरों का दूसरा रूप मानती थी और वह अपने घर अब कभी वापस क्यों नहीं जाना चाहती थी?

उत्तर–जगधर को। वह अपने घर इसलिए नहीं जाना चाहती थी कि उसका पति उसे पीटता था। जरूरत. की कोई भी चीज उसे लाकर नहीं देता था तथा उसने सुभागी के चरित्र पर शक के कारण से सूरदास की झोपड़ी भी जला दी थी।

शेखावाटी मिशन–100

प्र:10 सुभागी ने यह क्यों तय किया कि वह भैरो के घर ही रहेगी?

mÙkj & जब सुभागी को जगधर से यह सुनने को मिला कि भैरों ने आग लगाने से पहले झोपड़े की, धरन से पैसों की पोटली चुरा ली थी। दूसरी बात सूरदास के चेहरे की असह्य वेदना को देखा तथा यह भी सोचा कि मेरे ही कारण सूरदास को यह नुकसान हुआ है। तब उसने भैरो के घर ही जाने की बात कही।

प्र:11 सूरदास विजय गर्व की तरंग में राख के ढेर को दोनों हाथों से क्यों उड़ाने लगा?

उत्तर–पहले तो वह अपने पैसों के चले जाने से तथा भैरो द्वारा सुभागी को पीटने की बात से नैराश्य, ग्लानि, चिंता और क्षोभ में डूबा हुआ था लेकिन जब उसके बेटे को घीसू ने चिढ़ाया कि खेल में रोते हो तो इस बात से उसे ऐसा लगा कि किसी ने उसका हाथ पकड़कर किनारे पर खड़ा कर दिया हो। सूरदास ने यह भी माना कि एक जीवन भी तो यह खेल है इसलिए विजय गर्व की तरंग में उठ खड़ा हुआ और दोनो हाथो से राख उड़ाने लगा।

प्र:12 मालवा के शासकों ने पानी के रख–रखाव के लिए क्या प्रबन्ध किए?

उत्तर– पानी के रख–रखाव के महत्त्व को समझते हुए राजाओं ने पठार पर पानी को रोककर रखने के उपाय किये। उन्होने पानी संरक्षण के लिए अनेक तालाब बनवाए, बड़ी–बड़ी बावड़ियाँ बनवाई, ताकि बरसात का पानी रुका रहे और धरती के गर्भ के पानी को सुरक्षित रखा जा सके।

प्र:13 बिसनाथ की माँ लू से बचने के लिए क्या–क्या करती थी ?

उत्तर–धोती या कमीज से गाँठ लगाकर प्याज बाँधना। कच्चे आम का पन्ना गुड़ या चीनी में भूनकर उसको पिलाना। उसका शरबत देह में लेपना और सिर धोना।

प्र:14 गुलाम अली साहब की पहाड़ी ठुमरी कौनसी है? जिसे सुन बिसनाथ क्यों रोने लगते हैं?.

उत्तर– 'अब तो आवो साजन'–गुलाम अली साहब की ठुमरी थी। क्योंकि इसे सुनकर बिसनाथ को अपने से लगभग दस–बारह साल–बड़ी वह औरत जो सुंदरी से कम नहीं थी वह औरत इस ठुमरी को सुनने से व्याकुल नजर आती तो बिसनाथ रोने लगते थे।

प्र:15 'बिस्कोहर की माटी' पाठ का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– 'बिस्कोहर की माटी' पाठ का प्रतिपाद्य प्रकृति के साथ मानव संबंधों की पड़ताल करना है। लेखक ने अपनी उम्र के साथ अपने पड़ाव पार करने के बाद अपने जीवन में गाँव तथा आस पास के प्राकृतिक वातावरण का वर्णन किया है। इसके साथ ही ग्रामीण जीवन–शैली, परिवेश, लोक कथाओं, लोक–मान्यताओं तथा सुखो दुःखों से परिचित कराना इसका मूल भाव है।

प्र:16 'बिस्कोहर की माटी' पाठ के आधार पर वर्षा ऋतु में ग्रामीण परिवेश का मनोहारी दृश्य का चित्रण कीजिए।

उत्तर– ग्रामीण जीवन में भीषण गर्मी के पश्चात वर्षा ऋतु का विशेष महत्त्व है। आकाश में छाए गरजते बादलो को देख सुन कर चित्त प्रसन्न हो उठता है। वर्षा में बादलों तथा बूँदों और हवा के कारण उत्पन्न होने वाली आवाजों से संगीत का आनंद प्राप्त होता है। वर्षा के कारण सभी जीव–जन्तुओं में नवजीवन का संचार हो जाता है। वर्षा के

शेखावाटी मिशन–100

जल से धुले हुए पत्ते अत्यंत चमकीले तथा सुंदर लगते है।

प्र:17 बिस्कोहर में हुई बरसात का वर्णन अपने शब्दों में करो –

उत्तर– बिस्कोहर में बरसात अचानक नहीं आती पहले काली घटा छा जाती, बादल गरजते फिर दूर से आ रही घोड़ों की सेना की तरह बारिश आती फिर बिस्कोहर की धरती, सिवान, आकाश दिशाएँ, तालाब, बूढ़ी राप्ती नदी निखर उठते थे।

प्र:18 फूल केवल गंध ही नहीं देते दवा भी देते हैं, कैसे?

उत्तर–लेखक विश्वनाथ ने बताया कि उनके गांव में तरह तरह के पुष्प खिलकर ग्रामीण प्रकृति को सुन्दरता प्रदान करते थे साथ ही उन्होंने एक पुष्प भरभंडे के बारे में बताया कि उसे सत्यानाशी भी कहते है जिसका दूध बच्चों की आँख आने पर माँ आँख में लगाया करती थी। इसलिए फूल को सुगंध के साथ–साथ दवा देने वाले कहा है।

प्र:19 पहली बारिश में नहाने से शरीर के कौन–कौन से रोग मिटते है ?

उत्तर–पहली बारिश में नहाने से कई रोगों से मुक्ति मिलती है–जैसेः– दाद, खाज, फोड़ा–फुंसी आदि

प्र:20 वर्षा ऋतु में ग्रामीण क्या–क्या कष्ट उठाते है?

उत्तर– ग्रामीण वर्षा ऋतु में हर तरफ गंदगी, कीचड़ और बदबू झेलते हैं। खाना बनाने का ईंधन गीला हो जाता है जिससे खाना बनाने में परेशानी आती है। धरती पर जोंक, कैचुआ, जुगनू, बोका, गोंजर, मच्छर, डाँस आदि फैलने लगते है जिससे ग्रामीण लोग परेशान होते हैं।

प्र:21 लेखक को क्यों लगता है कि हम जिसे विकास की औद्योगिक सभ्यता कहते हैं वह उजाड़ की अपसभ्यता है?

उत्तर–लेखक को ऐसा इसलिए लगता है क्योंकि मानव कृत्रिम विकास को ही प्राथमिकता देने लगा है अधिकाधिक धनार्जन ही अपना उद्देश्य समझने लगा है जिससे पेड़–पौधे काटकर प्रकृति को नुकसान पहुंचाया जा रहा है तथा विषैली गैसों का व्यापार कर प्रकृति को उजाड़ा जा रहा। इसलिए उजाड़ की अपसभ्यता कहा है।

प्र:22 लोक में छप्पन का काल सुनने में आता है वो कौनसा समय है। उस समय मालवा की क्या स्थिति रही?

उत्तर–1899 ई. समय था। उस समय मालवा में 15.75 इंच पानी ही गिरा था लेकिन मारवाड़ से भी लोग अपने विपत्ति के समय में यहाँ आएं थे क्योंकि यहाँ पीने का पानी था तथा खाने को पर्याप्त था।

प्र:23 आज मालवा की सदानीरा नदियाँ अपने गालों के आंसू भी क्यों नहीं बहा सकती ?

उत्तर–क्योंकि जब लोग मालवा में प्रकृति माता से जुड़े थे तो नदी हमेशा बहती थी। अब लोगों ने स्वार्थ से प्रकृति को तरह–तरह के नुकशान दिए हैं जिससे वर्षा कम होती है।

निबंधात्मक प्रश्न–

प्र:1 सूरदास प्रतिशोध में नहीं बल्कि पुनर्निर्माण में विश्वास करने वाला है। 'सूरदास की झोपड़ी' पाठ के आधार पर समझाइए।

उत्तर– सूरदास की झोपड़ी में आग लग जाने से उसकी जीवन भर की कमाई समाप्त हो गई। झोपड़ी में आग लग

शेखावाटी मिशन–100

जाने के बाद वह रातभर रुपयों की पोटली टटोलता रहा लेकिन जब उसने मिठुआ से कहे गए घीसू के ये शब्द सुने कि तुम खेल में रोते हो, तो वह सोचता है कि जीवन भी एक खेल है। रुपये चले गये तो फिर मेहनत करूँगा और कमा लूँगा। इसलिए मन को दुःखी नहीं करना चाहिए।

वह पुनः जीवन के निर्माण में लग जाता है। अतः यह कहा जा सकता है कि सूरदास प्रतिशोध में नहीं पुनर्निर्माण में विश्वास करने वाला है।

प्र:2 'बिस्कोहर की माटी' आत्मकथांश में लेखक ने ग्रामीण–प्राकृतिक सुषमा और सम्पदा का सुंदर वर्णन किया है। पाठ के आधार पर अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर– 'बिस्कोहर की माटी' आत्मकथांश में आत्मकथाकार डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी ने ग्रामीण परिवेश को विभिन्न ऋतुओं से जोड़कर वर्णित किया है। बिस्कोहर गाँव की पूर्व दिशा की ओर तालाब में कमल के फूल खिले थे। गाँव के तालाबों में सिंघाड़े खूब लगते थे। सिंघाड़े के भी फूल होते हैं और उनमें गंध भी होती है। शरद ऋतु में हरसिंगार फूलता है। गाँव में ज्ञात–अज्ञात वनस्पतियों, जल के विविध रूपों और मिट्टी के वर्णों– आकारों का एक समस्त वातावरण था, जो सजीव था। गाँव में सैकड़ों प्रकार के फूल खिलते थे। गाँव में सत्यानाशी के भी बहुत फूल होते थे। लेखक को लगता था कि कदम्ब का पेड़ संसार में केवल उसके गाँव में ही था। घास–पात से भरी मेड़ों पर, मैदानों में, तालाबों में नाना––प्रकार के साँप पाये जाते थे। गर्मी चिलचिलाती पड़ती थी। भीषण गर्मी के बाद वर्षा की फुहारें पुलकित करती थीं। वर्षा के बाद बिस्कोहर की धरती, आकाश, तालाब, नदी सब निखर उठते थे। बरसात की भीगी चांदनी चमकती तो नहीं लेकिन शोभा के भार से दबी प्रतीत होती थी।

प्र:3 आशा से ज्यादा दीर्घजीवी और कोई वस्तु नहीं होती सूरदास की झोपड़ी पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए ?

उत्तर– आशा को अनुकूल और प्रतिकूल दोनों परिस्थितियों में दीर्घजीवी कहा जाता है। क्योंकि आशा व्यक्ति को कार्य करने की प्रेरणा देती है– सूरदास कर्म से भिखारी था किन्तु उसे आशा थी कि वह एक दिन गया जाकर पितरों का पिण्डदान करेगा, एक कुआँ और मंदिर बनवाएगा। मिठुआ का विवाह करेगा। इसी आशा के कारण रूखा सूखा खाकर भी उसने पाँच सौ रूपये से अधिक राशि एकत्रित कर ली थी।

विपरीत परिस्थितियों में भी व्यक्ति आशावादी बना रहता है। भैरों ने शत्रुता वश उसकी झोंपड़ी में आग लगा देने पर भी सूरदास को आशा थी कि उसकी पोटली उसको मिल जाएगी इसी कारण वह राख के ढेर को टटोल रहा था। इसलिए आशा को दीर्घजीवी कहा जाता है।

प्र:4 सूरदास की झोंपडी पाठ के आधार पर सूरदास की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए ?

mÙkj & **(i) दृष्टिहीन एवं गरीब–** सूरदास दृष्टिहीन अथवा गरीब है, वह भीख माँगकर अपना जीवन–यापन करता है।

(ii) सहृदय व्यक्ति– सूरदास की यह सहृदयता है कि वह एक अनाथ बालक मिठुआ का पालन–पोषण अपनी संतान की तरह करता है।

(iii) आत्मविश्वासी– सूरदास आत्मविश्वासी है वह फिर से घर बनाने और रूपये कमाने पर विश्वास रखता है।

(iv) सहनशील– झोंपड़ी में आग लग जाने से उसका सब कुछ जलकर राख हो जाता है पर वह फिर भी सारी हानि धैर्यपूर्वक स्वीकार करता है।

(v) बदले की भावना की अपेक्षा पुर्ननिमर्माण पर आस्था–

सूरदास की झोपड़ी में आग लगा दी किन्तु फिर भी वह बदले की अपेक्षा पुनर्निर्माण पर आस्था रखता है।

प्र:5 भैरो के हाथ थैली लगने का पता होने पर जगधर की क्या मनोदशा हुई ? उसका चित्रण कीजिए।

उत्तर– भैरो के हाथ सूरदास की रूपये की थैली लगने का पता होने पर जगधर ईर्ष्यावश सोचने लगा कि अब तो भैरों, मौज उड़ायेगा। पाप–पुण्य तो कुछ भी नहीं है। मैं भी तो दिन भर झूठ बोलता हूँ। कम तोलता हूँ, खोटे बाटों का उपयोग करता हूँ। तेल की मिठाई को घी की कहकर बेचता है। ईमान गँवाने पर भी कुछ हाथ नहीं लगता यह जानते हुए कि यह बुरा काम है। लेकिन बाल बच्चों की खातिर अनुचित कार्य करता हूँ। इसने ईमान खोया, तो कुछ लेकर खोया, इसका किया गया गुनाह बेस्वाद तो नहीं है फिर जगधर ने ईर्ष्यापूर्वक जाकर सारी बात सूरदास और सुभागी को बता दी।

प्र:6 बिस्कोहर की माटी पाठ के आधार पर शरद ऋतु प्राकृतिक छटा का वर्णन कीजिए?

उत्तर– बिस्कोहर की माटी पाठ मे वर्षा के बाद शरद ऋतु की प्राकृतिक आभा का वर्णन करते हुए बताया गया है कि बरसात के बाद बिस्कोहर की धरती, सिवान, आकाश, दिशाएँ, तालाब, बूढ़ी राप्ती नदी निखर उठते हैं। धान के पौधे झूमने लगते है, भुट्टे, चरी सनई के पौधे, करेले, खीरे कांकर, भिंडी, तोरी के पौधे फिर लताएँ। शरद में फूल – तालाब में शैवाल (सेवार) उसमें नीला जल – आंकाश का प्रतिबिंब–नीले जल के कारण तालाब का जल अगाध लगता है। तालाबों का नीला प्रसन्न जल ऐसा लगता कि अभी इसमें से कोई देवी देवता प्रकट होगा। शरद ऋतु में हरसिंगार के सफेद फूल खिल जाते है तथा सभी वनस्पतियों में निर्मल सौन्दर्य आ जाता है। रात के स्वच्छ आकाश में चाँदनी छिटक जाती है ऐसा दृश्य बहुत ही मनभावना लगता है।

प्र:7 बिस्कोहर की माटी पाठ की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए ?

उत्तर– बिस्कोहर की माटी पाठ की मूल संवेदना प्रकृति के साथ मानव सम्बंधों की पड़ताल करना है। जीवन की स्थितियाँ ऋतु परिवर्तन के साथ कैसे बदलती है और गाँवों के लोग प्राकृतिक प्रकोपों का सामना किस तरह करते है तथा प्रकृति जग से किस तरह अपना अटूट प्रेम सम्बन्ध रखते हैं इन सभी की, व्यंजना करना इसका मूल भाव है। इस पाठ से हमें यह सीख भी मिलती है कि वर्तमान समय में आधुनिकता के कारण हमें प्रकृति से दूर नहीं होना चाहिए। प्रकृति के साथ अपने घनिष्ठ संबंध बनाए रखने चाहिए और दवाइयों के स्थान पर प्रकृति से निर्मित जड़ी–बुटियों का उपयोग करना चाहिए।

प्र:8 बिस्कोहर की माटी, पाठ में लेखक ने कौन–कौनसे प्राकृतिक पेड़–पौधों का अर्थात वनस्पतियों का वर्णन किया है, अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए?

उतर– बिस्कोहर की माटी पाठ में नंगातलाई गाँव का वर्णन किया गया है। इसमें कई पेड़–पौधों अर्थात वनस्पतियों का वर्णन

शेखावाटी मिशन–100

है–

कमल– नंगातलाई गाँव के पोखर में कमल खिलते है। अकाल के समय लोग (कमल – ककड़ी) खाते थे। कमल का बीज कमल गट्ठा भी अधिकतर खाया जाता था।

कोइयाँ–यह जल में उत्पन्न होता है, जिसे कुमुद कहते हैं इसे कोकाबेली के नाम से भी जाना जाता है।

प्र:9 बिसनाथ ने अपनी माँ की तुलना बतख से क्यों की हैं ?

उत्तर–निम्न कारणों से बिसनाथ ने अपनी माँ की तुलना बतख से की है–

खतरों से बचाना–

जिस प्रकार बतख अपने पंखों को फैलाकर अपने अण्डों को दुनिया की नजरों से बचाए रखती है उसी प्रकार लेखक की माँ भी ढाल बनकर अपने बच्चों को बुरी नजरों से बचाती है।

सार्थकता और कोमलता से देखरेख–

जैसे बतख माँ अपनी पेनी चोच से सतर्कता बरतते हुए कोमलता से अपने अण्डों को पंखों के अंदर छुपाती है उसी प्रकार मानव माँ भी अपने बच्चों को डाटते– मारते समय ध्यान रखती है कि शिशु को नुकसान न पहुँचे।

आने वाले खतरे को भाँपना–

बतख माँ की निगाह सदैव कौवे की ताक पर रहती है माँ भी बच्चे पर आने वाले संभावित खतरे को भाँप लेती है।

प्र:10 ''खूब मनाओं दसेरा–दिवाली'' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– ''खूब मनाओं दसेरा–दिवाली'' पंक्ति का आशय है कि इस बार मालवा में खूब बरसात हुई है। ताल–तलैया पानी से लबालब हो गए है। फसलें लहलहाने लगी है। जनजीवन खुशी से पूरित है। इस बार मालवा में अच्छी पैदावार हुई है। इसलिए खुशी से त्योहारों का आयोजन करो ।

प्र:11 'अपना मालवा – खाऊ उजाडू सभ्यता में' पाठ में लेखक ने पर्यावरण संबंधी चिन्ता का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया है। पठित पाठ के आधार पर लिखिए।

उत्तर– पाठ में लेखक ने नागदा, इन्दौर, ओंकारेश्वर, नेमावर आदि स्थानों का यात्रा विवरण प्रस्तुत करते हुए बताया है कि अब यहाँ पर कुएँ, तालाब आदि सूख गए हैं। नर्मदा पर बड़े बाँध बनने के कारण औद्योगिक विकास भले ही हुआ हो लेकिन पर्यावरण का नाश ही हुआ है। परिणामस्वरूप सभ्यता उजड़ गयी और लोग खाऊ – उजाडू सभ्यता में आनंद लेने लगे है।

प्र:12 लेखक ने वर्तमान सभ्यता को खाऊ – उजाडू कहा है। इससे आप कहाँ तक सहमत है?

उत्तर– लेखक प्रभाष जोशी ने बताया है कि वर्तमान सभ्यता खाऊ–उजाडू है अर्थात पेट भर कर खाओ और पेट की खातिर दूसरों का घर–बार या पर्यावरण उजाड़ दो। वर्तमान में औद्योगिक विकास के नाम पर नदियों पर बाँध बनाये जा रहे है, सड़कों को चौड़ा किया जा रहा है। और नये–नये कल कारखाने स्थापित किए जा रहे हैं और पर्यावरण

शेखावाटी मिशन–100

को नष्ट किया जा रहा है। इसी खाऊ – उजाड़ू सभ्यता के कारण तीर्थस्थान, सैर–सपाटे और विलास केन्द्रों में परिवर्तित होते जा रहे है। वर्तमान सभ्यता के इस स्वार्थी आचरण से हम पूर्णतया असहमत हैं। जीवन में विकास की गति के साथ–साथ पर्यावरण रक्षा का सामंजस्य होना आवश्यक है।

प्रः13 अपना मालवा पाठ में मूल भाव क्या है। लेखक हमें क्या संदेश देना चाहता है और आप उसकी पूर्ति कैसे कर सकते हैं?

उत्तर–अपना मालवा पाठ में हमें यह सीख मिलती है कि हमें भौतिकता की होड़ में प्रकृति को नुकसान नहीं पहुँचाना चाहिए। ऐसी जगह उद्योग स्थापित नहीं करने चाहिए जहाँ लोगों की बसावट हो क्योंकि ऐसा करने से उन लोगों को विस्थापित होना पड़ता है और अपनी आजीविका, गंवानी पड़ती है। लेखक ने यही सन्देश दिया है कि पर्यावरण संरक्षण पर ध्यान दिया जावे, अधिक से अधिक पेड़ लगाये जाएँ। धरती में पानी को रोकने हेतु कुएं, तालाबों, बावड़ियों को पुनः खुदवाकर जल स्रोत का ध्यान रखा जावे।

प्रः14 धरती का वातावरण गर्म क्यों रहा है इसमें यूरोप और अमेरिका की क्या भूमिका है ?

उत्तर–(i)वातावरण के गरम होने का कारण–

आज औधोगिक विकास के चलते हम जो उद्योग धंधे, कल–कारखाने लगा रहे है उनसे वातावरण को गरम करने वाली गैसे निकलती है ये गैसे वातावरण के तापमान को बढ़ा रही है।

(ii) यूरोप और अमेरिका की भूमिका–

यूरोप और अमेरिका देश समृद्ध देशों की श्रेणी में आते हैं ये देश अपने औद्योगिक विकास के लिए जो उद्योग स्थापित करते है उनसे कार्बन–डाइ ऑक्साइड गैसे निकलती है जो धरती के वातावरण को गरम करती है।

(iii) इसे रोकने के उपाय– इन हानियों से बचने के लिए हमें प्रकृति के विकास को साथ लेकर चलना होगा। उद्योगों के विकास में ऐसा विकल्प चुनना होगा जिससे उद्योगों को नुकसान न पहुँचे।

प्रः15 "निद्रा अवस्था में भी उपचेतना जागती है।" पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए– (सूरदास की झोपड़ी पाठ के आधार पर)

उत्तर– निद्रावस्था में भी मनुष्य अवचेतन मस्तिष्क क्रियाशील रहता है आने वाली विपत्ति से वह मनुष्य को सावधान कर देता है सूरदास की झोपड़ी में आग लगने पर उनके अवचेतन ने उन्हें सजग कर दिया और वे सभी जागकर आग बुझाने लग गये थे।

प्रः16 'प्रकृति सजीव नारी बन गई' इस कथन के संदर्भ में लेखक की प्रकृति नारी और सौन्दर्य सम्बन्धी मान्यताएँ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– बिसनाथ जब दस वर्ष का था तब उसने उस औरत को पहली बार बढ़नी में एक रिश्तेदार के यहाँ देखा था उसे देखकर ऐसा लगा जैसे बरसात की चाँदनी रात में जूही की खुशबू आ रही है उस समय बिसनाथ संतोषी भया के घर के आगँन में जूही बेल को देखते थे। उसकी खुशबू उसके प्राणों में बसी रहती थी। चाँदनी में जूही के सफेद फूल ऐसे लगते थे मानों पेड़ों, लताओं पर चाँदनी ही फूल के रूप में दिखाई पड़ रही हो। चाँदनी भी प्रकृति फूल भी प्रकृति और खुशबू

शेखावाटी मिशन–100

भी प्रकृति। वह औरत भी बिसनाथ को जूही की लता बनी हुई चाँदनी के रूप में दिखाई दी जिसके फूलों से सुगंध आ रही थी। बिसनाथ ने उसे औरत के रूप में नहीं देखा था। उसमें बिसनाथ ने प्रकृति के ही सजीव रूप को देखा था। ऐसा लगता था जैसे प्रकृति ने ही सजीव ही स्त्री एका रूप धारण किया था।

अभिव्यक्ति और माध्यम

बहुविकल्पात्मक प्रश्न–

प्र:1 अखबार की आवाज कौनसा लेख कहलाता है।

(अ) स्तम्भस्तम्भ लेख (ब) संपादकीय लेख

(स) आलेख (द) संपादक के नाम पत्र (ब)

प्र:2 पत्रकारिता में स्टोरीज किसे कहते है।

(अ) खबरों को (ब) विज्ञापनों को

(स) ग्राफिक्स को (द) विशेष लेखन को (अ)

प्र:3 एक सुव्यवस्थित, सृजनात्मक और आत्म निष्ठ लेख कहलाता है।

(अ) स्तम्भ (ब) विशेष लेखन (स) फीचर (द) समाचार (स)

प्र:4 समाचार लेखन की उलटा पिरामिड शैली में समाचार के सबसे महत्वपूर्ण तथ्य को सबसे पहले लिखा जाता है उसे क्या कहते है?

(अ) इंड्रो/मुखड़ा (ब) बॉडी (स) समापन है (द) उपर्युक्त सभी (अ)

प्र:5 वह पत्रकार क्या कहलाता है? जो भुगतान के आधार पर अलग–अलग अखबारों के लिए स्वतंत्र रूप से लिखता है।

(अ) पूर्णकालिक (ब) अंशकालिका (स) फ्रीलांसर (द) सम्पादक (स)

प्र:6 किस प्रकार का पत्रकार किसी समाचार संगठन के लिए एक निश्चित मानदेय पर काम करता है।

(अ) पूर्णकालिक (ब) अंशकालिका (स) फ्रीलांसर (द) कोई नहीं (ब)

प्र:7 समाचार लेखन के लिए उपयोग लिए जाने वाले ककारों में से कौनसे ककार विषय के विवरणात्मक व्याख्यात्मक और विश्लेषणात्मक पहलू पर जोर देते है।

(अ) क्या, कौन (ब) कब, कहाँ (स) कैसे क्यों (द) अ व ब दोनों (स)

प्र:8 समाचार लेखन के लिए उपयोग लिए जाने वाले ककारो में से कौनसे ककार सूचनात्मक और तथ्यों पर आधारित माने जाते है।

(अ) क्या, कौन (ब) कब, कहां (स) कैसे, क्यों (द) अ व ब दोनो (द)

प्र:9 संपादकीय लेखन की जिम्मेदारी प्रायः किसकी होती है।

(अ) फ्रीलांसर (ब) अशंकालिक पत्रकार

(स) संपादक मण्डल (द) प्रसिद्ध लेखक (स)

शेखावाटी मिशन–100

प्र:10 किस प्रकार के लेख अपने लेखक के नाम से जाने और पसंद किए जाते है–

(अ) संपादकीय (ब) विशेष लेख (स) स्तम्भ लेख (द) समाचार (स)

प्र:11 किस स्तंभ को पाठकों का अपना स्तंभ माना जाता है।

(अ) आलेख (ब) विशेष लेख

(स) संपादक के नाम पत्र (द) संपादकीय (स)

प्र:12 एक अच्छे साक्षात्कार कर्ता के लिए निम्न में से कौन सा गुण अनिवार्य है।

(अ) संवेदनशीलता (ब) कूटनीतिज्ञ

(स) धैर्य और साहस (द) उपर्युक्त सभी (द)

प्र:13 कविता की अनजानी दुनिया का सबसे पहला उपकरण किसे माना जाता है।

(अ) शब्द (ब) वाक्य

(स) छंद (द) चित्रभाषा (अ)

प्र:14 कविता का कौनसा घटक कविता को इंद्रियों से पकड़ने मे सहायक माना जाता है।

(अ) शब्द (ब) छंद व बिम्ब (स) परिवेश (द) भाषा (ब)

प्र:15 कविता के किस घटक को उसकी आंतरिक लय कहाँ जाता है।

(अ) शब्द (ब) छंद (स) परिवरेश (द) चित्रभाषा (ब)

प्र:16 साहित्य लेखन की किस विद्या को 'दृश्य काव्य' की संज्ञा दी गई है।

(अ) कहानी (ब) कविता (स) निबंध (द) नाटक (द)

प्र:17 'नाटक' को प्रायः किस काल में संयोजित किया जाता है।

(अ) वर्तमान काल (ब) भूतकाल (स) भविष्य काल (द) उपर्युक्त सभी (अ)

प्र:18 सामान्तया कितने अंक के नाटक को श्रेष्ठ नाटक माना जाता है।

(अ) एक अंक (ब) दो अंक (स) तीन अंक (द) दस अंक (स)

प्र:19 भरत मुनि के नाटयशास्त्र के अनुसार नाटक के एक अंक की अवधि कम–से–कम कितनी होनी चाहिए।

(अ) 50 मिनट (ब) 60 मिनट (स) 48 मिनिट (उ) 52 मिनट (स)

प्र:20 किस घटक को नाटक का शरीर कहा जाता है।

(अ) शब्द (ब) संवाद (स) परिवेश (द) कथ्य (अ)

प्र:21 कहानी का कौनसा घटक उसे रोचकता प्रदान करता है?

(अ) कथानक (ब) द्वंद्व (स) संवाद (द) क्लाइमेक्स (ब)

प्र:22 फीचर लेखन की शुरुआत होती है–

(अ) बीच से (ब) शुरु से (स) अन्त से (द) कहीं से भी (द)

प्र:23 तथ्यों की खोज और विश्लेषण पर जोर दिया जाता है–

शेखावाटी मिशन–100

(अ) फीचर में (ब) विशेष रिपोर्ट में (स) समाचार पत्र में (द) कोई नहीं (ब)

प्रः24 अखबार की भूमिका क्या है?

(अ) पाठकों को सूचना देना (ब) जागरूक बनाना (द)

(स) शिक्षित बनाना (द) उपर्युक्त सभी

प्रः25 अखबार लोकतान्त्रिक समाज में भूमिका अदा करते हैं?

(अ) एक पहरेदार की (ब) शिक्षक की (द)

(ब) जनमत निर्माता की (द) उपर्युक्त सभी

प्रः26 नियमित वेतनभोगी पत्रकार कहलाता है?

(अ) फ्रीलांसर पत्रकार (ब) पूर्णकालिक पत्रकार (ब)

(स) अंशकालिक पत्रकार (द) कोई नहीं

प्रः27 पत्रकारिता है–

(अ) शोच समझकर लिखा गया लेख (ब) जल्दी में लिखा गया साहित्य (ब)

(स) विचार विमर्श के अनुसार लेख (द) कोई नहीं

प्रः28 पत्रकारिता का सम्बन्ध किससे है?

(अ) तथ्यों से (ब) कल्पना से

(स) सोच–समझ से (द) उपर्युक्त सभी (अ)

प्रः29 पत्रकारीय लेखन की भाषा–शैली कैसी होनी चाहिए–

(अ) अलंकारिक (ब) संस्कृतनिष्ठ (स)

(स) आम बोलचाल की भाषा (द) मुहावरेदार

प्रः30 आमतौर पर अखबारों में समाचार लिखते हैं?

(अ) अंशकालिक और फ्रीलांसर पत्रकार (ब) फ्रीलांसर और पूर्णकालिक पत्रकार (स)

(स) पूर्णकालिक और अंशकालिक पत्रकार (द) इनमें से कोई नहीं

प्रः31 उलटा–पिरामिड शैली का भाग. है –

(अ) बॉडी (ब) इंट्रो मुखडा (द)

(स) समापन (द) उपर्युक्त सभी

प्रः32 समाचार लेखन की उलटा पिरामिड शैली में क्लाइमेक्स मिलता है

(अ) अन्त में (ब) शुरुआत में (ब)

(स) बीच में (द) उपर्युक्त में से कोई नहीं

प्रः33 उलटा पिरामिड शैली की शुरुआत हुई थी–

(अ) 16 वीं सदी में (ब) 17 वीं सदी में (द)

शेखावाटी मिशन–100

(स) 10 वीं सदी में (द) 19 वीं सदी में

प्र:34 समाचार का इन्ट्रो या मुखड़ा लिखने में किन ककरों का प्रयोग किया जाता है?

(अ) कितना (ब) कहाँ (अ)

(स) कब (द) क्यों

प्र:35 समाचार के पहले पैराग्राफ में किन ककारों को आधार बनाकर खबर लिखी जाती है?

(अ) क्या (ब) कौन (द)

(स) कहाँ (द) उपर्युक्त सभी

प्र:36 फीचर लेखन है–

(अ) सुव्यवस्थितः (ब) आत्मनिष्ठ (द)

(स) सृजनात्मक (द) उपर्युक्त सभी

प्र:37 फीचर का उद्देश्य क्या है–

(अ) पाठकों को सूचना देना (ब) मनोरंजन करवाना (द)

(स) शिक्षित करना (द) उपर्युक्त सभी

प्र:38 निम्न में से पाठकों को तात्कालिक घटनाक्रम से अवगत कराता है

(अ) फीचर (ब) विशेष रिर्पोट (द)

(स) सम्पादकीय (द) समाचार पत्र

प्र:39 निम्न में से किस की भाषा मन को छूने वाली होती है?

(अ) सम्पादकीय (ब) फीचर (ब)

(स) खेल समाचार (द) उपर्युक्त सभी

प्र:40 निम्न में से किसे कहानी के जरिये कहा जाता है?

(अ) विशेष रिपोर्ट (ब) प्रतिवेदन (स)

(स) फीचर (द) कोई नहीं

प्र:41 फीचर के प्रकार है–

(अ) खोजपरक फीचर (ब) साक्षात्कार फीचर (द)

(स) रूपात्मक फीचर (द) उपर्युक्त सभी

प्र:42 फीचर के आखिरी हिस्से में किसकी योजनाओं पर फोकस करना चाहिए–

(अ) वर्तमान की (ब) भविष्य की

(स) भूतकाल की (द) सभी (ब)

प्र:43 निम्न में से कौनसा प्रकार विशेष रिपोर्ट का है?

(अ) खोजी रिपोर्ट (ब) इन डेप्थ रिपोर्ट

(स) विश्लेषणात्मक रिपोर्ट (द) उपर्युक्त सभी (द)

शेखावाटी मिशन–100

प्र:44 निम्न में हो भ्रष्टाचार और अनियमितताओं को उजागर करने के लिए, कौनसी रिपार्ट का प्रयोग किया जाता है

(अ) विवरणात्मक रिपोर्ट (ब) खोजी रिपोर्ट (ब)

(स) विश्लेषणात्मक रिपोर्ट (द) इन डेप्थ रिपोर्ट

प्र:45 किस रिपोर्ट के अन्तर्गत सूचनाओं और आंकडों की गहरी छानबीन की जाती है

(ब) इन–डेप्थ रिपोर्ट (ब) खोजी रिपोर्ट (अ)

(स) विश्लेषणात्मक रिपोर्ट (द) विवरणात्मक रिपोर्ट

प्र:46 निम्न में से विचारपरक लेखन श्रेणी में आते हैं–

(अ) सम्पादकीय (ब) स्तम्भ लेख (द)

(स) टिप्पणियाँ (द) सभी

प्र:47 निम्न में से कौनसा विचारपरक लेखन नाम के साथ नहीं छापा जाता है–

(अ) सम्पादकीय (ब) स्तम्भ लेख

(स) टिप्पणियाँ (द) फीचर (अ)

प्र:48 संवाददाताओं के बीच काम का विभाजन मीडिया की भाषा में कहलाता है–

(अ) बाइट (ख) बीट (ब)

(स) फीचर (द) कोई नहीं

प्र:49 किसी खास विषय पर सामान्य लेखन से हटकर किया गया लेखन कहलाता है

(अ) फीचर लेखन (ब) स्तम्भ लेखन (स)

(स) विशेष लेखन (द) कोई नहीं

प्र:50 निम्न में से विशेष लेखन के क्षेत्र कौन से हैं?

(अ) अर्थ व्यापार (ब) विदेश (द)

(स) रक्षा (द) सभी

प्र:51 विशेष लेखन की भाषा और शैली में निम्न में से कौनसी शब्दावली काम, में ली जाती है

(अ) तत्सम शब्दावली (ब) अलंकारिक शब्दावली (स)

(स) तकनीकी शब्दावली (द) उपर्युक्त सभी

प्र:52 कौनसी पात्रकारिता सामान्य पत्रकारिता की तुलना में काफी जटिल होती है

(अ) आर्थिक पत्रकारिता (ब) फिल्म पत्रकारिता (अ)

(स) खेल पत्रकारिता (द) इनमें से कोई नहीं

प्र:53 खेल में विशेषज्ञता हासिल करने के लिए निम्न में से क्या करना चाहिए।

शेखावाटी मिशन–100

(अ) खेल में बनने वाले रिकॉडर्स का पता होना चाहिए (द)

(ब) खेल के नियम

(स) खेल की तकनीकी शब्दावली का ज्ञान

(द) उपर्युक्त सभी

प्र:54 कविता क्या है? (द)

(अ) संवेदना के निकट (ब) मन को छूने वाली

(स) झकझोर देने वाली (द) उपर्युक्त सभी

प्र:55 निम्न में से कौनसी कला अन्य कलाओं की तरह सिखाई नहीं, जाती ??

(अ) संगीत कला (ब) नृत्यकला

(स) कविता (द) चित्रकला (स)

प्र:56 निम्न में से कविता के घटक क्या है?

(अ) शब्द (ब) बिम्ब और छंद (द)

(स) चित्रभाषा (द) उपर्युक्त सभी

प्र:57 नाटक के घटक कौन कौन से है?

(अ) शब्द (ब) संवाद (द)

(स) समय का बंधन (द) उपर्युक्त सभी

प्र:58 कौनसी विधा नाटक के सबसे ज्यादा निकट होती है?

(अ) कहानी (ब) कविता

(स) नाटक (द) निबन्ध (ब)

प्र:59 निम्न में से नाटक का नकारात्मक तत्व नहीं है –

(अ) असंतुष्टि (ब) छटपटाहट

(स) उत्सुकता (द) अस्वीकार (स)

प्र:60 निन्न में से कहानी के घटक कौन से है?

(अ) कल्पना (ब) कथानक (द)

(स) पात्र (द) उपयुक्त सभी

शेखावाटी मिशन–100

अभिव्यक्ति और माध्यम

लघुत्तरात्मक प्रश्नः–

प्र:1 पत्रकार कितने प्रकार के होते है नाम लिखिए।

उत्तर – पत्रकार तीन प्रकार के होते है–

1. पूर्णकालिक पत्रकार 2. अंशकालिक पत्रकार 3. फ्रीलांसर

प्र:2 समाचार प्राय किस शैली में लिखे जाते हैं।

उत्तर– समाचार प्राय उलटा पिरामिड शैली में लिखे जाते हैं।

प्र:3 समाचार लेखन की उलटा पिरामिड शैली पर प्रकाश डालिए

उत्तर– यह समाचार लेखन की प्रचलित शैली है इसमें समाचार को तीन भागों में बांटा जाता है सबसे महत्वपूर्ण तथ्यों जिनको पहले लिखा जाता है उसे इंट्रो कहते है उसके बाद समाचार पर विस्तार से प्रकाश डाला जाता जो बॉडी व समापन कहलाता है।

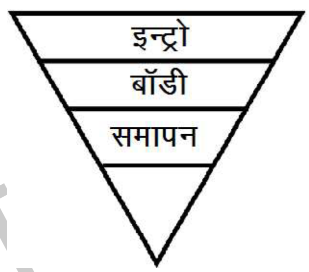

प्र:4 फीचर किसे कहते है ?

उत्तर – फीचर एक सुव्यवस्थित, सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन है जिसका उद्देश्य पाठकों को सूचना देने, शिक्षित करने के साथ–साथ मनोरंजन करना होता है फीचर प्रायः कथात्मक शैली में लिखे जाते है।

प्र:5 ऑप–एड पृष्ठ से आप क्या समझते है?

उत्तर– संपादकीय पृष्ठ के सामने वाले पृष्ठ को ऑप–एड पृष्ठ कहते है कुछ अखबारों में विचार परक लेख, टिप्पणियां और स्तम्भ इस पृष्ठ पर भी प्रकाशित होते है।

प्र:6 संपादक के नाम पत्र स्तंभ से क्या तात्पर्य है

उत्तर– अखबारों में यह एक स्थायी स्तम्भ होता है इसे पाठकों का अपना स्तम्भ कहा जाता है इसमें संपादक के नाम पाठकों के पत्र प्रकाशित होते है यह स्तम्भ प्राय संपादकीय पृष्ठ पर ही होता है।

प्र:7 अखबार के किस स्तम्भ के लिए कहा जाता है कि यह नए लेखकों के लिए लेखन की शुरुआत करने व हाथ मांजने का अवसर प्रदान करता है।

उत्तर – संपादक के नाम पत्र स्तम्भ के लिए

प्र:8 कविता के प्रमुख घटको का उल्लेख कीजिए

उत्तर– कविता के प्रमुख घटक प्रायः शब्द, बिम्ब और छंद, चित्रभाषा, परिवेश और संदर्भ तथा भाव माने जाते हैं।

शेखावाटी मिशन–100

प्र:9 "प्ले विद द वर्ड्स" कविता के बारे यह कथन किस विद्वान का है।

उत्तर– उब्ल्यु, एन्च. ऑर्डेन का

प्र:10 कविता के 'बिम्ब और छंद' तत्व से आप क्या समझते है ?

उत्तर– **बिम्ब**– कविता में प्रयुक्त कुछ विशेष शब्द जिनको सुनकर अनायास मन के भीतर कुछ चित्र कौंध जाते हो बिम्ब कहलाते है सुमित्रानंदन पंत ने इसे चित्रभाषा कहा था।

छंद– कविता को इंद्रियों से पकड़ने में सहायक आंतरिक लय को छंद कहा जाता है।

प्र:11 कविता की भाव संपदा से आप क्या समझते है?

उत्तर– कवि की वैयक्तिक सोच, दृष्टि या दुनिया को देखने का नजरिया कविता की भाव संपदा कहलाती है।

प्र:12 नाटक के प्रमुख घटक कौन कौन से है ?

उत्तर– नाटक प्रमुख घटकः–समय, शब्द, कथ्य, दृश्य, संवाद, परिवेश, सबटैक्स्ट रंगमंच ।

प्र:13 हिन्दी के किन्हीं पाँच नाटक रचनाकारों के नाम लिखिए

उत्तर– जयशंकर प्रसाद, मोहन राकेश, जगदीश चन्द्र माथुर, धर्मवीर भारती, सुरेन्द्र वर्मा ।

प्र:14 नाटक के प्रमुख घटक 'कथ्य' के बारे में आप क्या समझते है?

उत्तर– रंगमंच या नाटक के लिए लिखी गई कहानी को कथ्य कहा जाता है।

प्र:15 एक नए और अप्रत्याशित लेख में कौनसी विशेषताएं होनी चाहिए।

उत्तर– 1. शुरुआत आकर्षक हो। 2. विषय की सुसंबद्धता और सुसंगतता हो।
3. मैं शैली का प्रयोग दिखाई है। 4. भाषा व्याकरणिक शुद्धता के साथ सुसंगठित

(1) पत्रकारीय लेखन से आप क्या समझते हैं?

उत्तर– समाचार माध्यमों में काम करने वाले पत्रकार अपने पाठकों तक सूचनाएँ पहुँचाने के लिए लेखन के विभिन्न रूपों जैसे– सम्पादकीय, फीचर इत्यादि का इस्तेमाल करते हैं, इसे ही पत्रकारीय लेखन कहते हैं ।

(2) फ्रीलांसर पत्रकार क्या है?

उत्तर– फ्रीलांसर पत्रकार का संबंध किसी खास अखबार से नहीं होता है बल्कि वह भुगतान के आधार पर लिखता है।

(3) अखबार लोकतान्त्रिक समाज में पहरेदार की भूमिका कैसे निभाते है?

उत्तर– अखबार लोकतान्त्रिक समाज के लिए पहरेदार की भूमिका निभाते है क्योंकि इसके जरिये वे असंख्य पाठको को हर रोज सुबह देश दुनिया और पास–पड़ोस की घटनाओं, समस्याओं, मुद्दों और विचारों से अवगत कराते है।

शेखावाटी मिशन–100

(4) पत्रकारीय लेखन और साहित्यिक लेखन में दो अन्तर लिखिए।

उत्तर– (i) पत्रकारीय लेखन का सम्बन्ध वास्तविक घटनाओं, समस्याओं, और मुद्दों से हैं जबकि साहित्यिक लेखन का कल्पना से।

(ii) पत्रकारीय लेखन का सम्बन्ध समसामयिक होता है जबकि साहित्यिक का इतिहास से।

(5) पत्रकारीय लेखन में किस तरह की भाषा का इस्तेमाल करना चाहिए।

उत्तर– पत्रकारीय, लेखन में अलंकारिक संस्कृतनिष्ठ भाषा–शैली के बजाय आम बोलचाल की भाषा का इस्तेमाल किया जाना चाहिए भाषा साफ–सुथरी, सीधी लेकिन प्रभावी होनी चाहिए। शब्द सरल और आसानी से समझ में आने वाले होने चाहिए।

(6) संवाददाता या रिपोर्टर किसे कहा जाता है?

उत्तर– जो व्यक्ति किसी स्थान का समाचार लिखकर समाचार–पत्र, पत्रिका आदि में छपने के लिए भेजता हो या सीधे दूरदर्शन पर समाचार देता है। उसे रिपोर्टर या संवाददाता कहते हैं।

(7) समाचार लेखन में प्रयुक्त ककरों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर– प्रथम चार ककार क्या, कौन, कब और कहाँ सूचनात्मक और तथ्यों पर आधारित होते हैं जबकि अन्तिम दो ककार कैसे और क्यों विवरणात्मक, व्याख्यात्मक और विशलेषणात्मक पहलू पर आधारित होते हैं।

(8) उलटा पिरामिड शैली की तीन विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर– (i) सबसे पहले समाचार का सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य लिखा जाता है।

(ii) उसके बाद घटते क्रम में अन्य तथ्यों और सूचनाओं को लिखा जाता है।

(iii) क्लाइमेक्स पिरामिड के प्रारम्भ में आता है।

(9) पत्रकारिता और सृजनात्मक लेखन में क्या अन्तर है?

उत्तर– (i) पत्रकारिता का रिश्ता तथ्यों से है, जबकि सृजनात्मक लेखन का सम्बन्ध कल्पना से है

(ii) पत्रकारिता अनिवार्य रूप से तात्कालिकता और अपने पाठकों की रुचियों और जरूरतों को ध्यान में रखकर लिखा गया लेखन है जबकि सृजनात्मक लेखन काफी हद तक कथात्मक शैली की तरह है।

(10) फीचर लेखन की तीन विशेषताएँ लिखो –

उत्तर– (i) समकालीन घटना या क्षेत्र विशेष की मोहक प्रस्तुति होती है।

(ii) फीचर शैली का इस्तेमाल हल्के फुलके, नरम और मानवीय रूचि के समाचारों को लिखने के लिए किया जाता है।

शेखावाटी मिशन–100

(iii) एक अच्छे फीचर के साथ फोटो, रेखांकन व ग्राफिक्स आदि का होना जरूरी है।

(11) समाचार लेखन व फीचर लेखन में अन्तर बताइए।

उत्तर– (i) समाचार उलटा पिरामिड शैली में लिखा जाता है जबकि फीचर की शुरुआत कहीं से भी कर सकते हैं।

(ii) समाचार तात्कालिक घटनाक्रम से अवगत कराता है जबकि फीचर में ऐसा नहीं होता।

(iii) समाचार लेखन में लेखक अपने विचार नहीं लिख सकता जबकि फीचर में लिख सकता है।

(iv) समाचार लेखन में शब्द सीमा तय होती है जबकि फीचर में कोई शब्द–सीमा नहीं होती।

(12) फीचर लिखते समय ध्यान में रखने योग्य बातों को लिखिए।

उत्तर– (i) फीचर को सजीव बनाने के लिए उसमें उस विषय से जुड़े लोगों यानि पात्रों की मौजूदगी जरूरी है।

(ii) फीचर को मनोरंजक होने के साथ–साथ सूचनात्मक होना चाहिए।

(iii) कहानी का अंदाज ऐसा हो कि पाठकों को लगे कि वे खुद देख और सुन रहे हैं।

(13) विशेष रिपोर्ट की तीन विशेषताएँ बताइए।

उत्तर– (i) किसी घटना, समस्या या मुद्दे की गहरी छानबीन की जाती है।

(ii) महत्त्वपूर्ण तथ्यों को इकटठा किया जाता है।

(iii) तथ्यों का विश्लेषण करके नतीजों, प्रभावों तथा कारणों को स्पष्ट किया जाता है।

(14) खोजी रिपोर्ट और इन–डेप्थ रिपोर्ट में अन्तर लिखिए।

उत्तर– (i) खोजी रिपोर्ट में रिर्पोटर मौलिक शोध और छानबीन के जरिये ऐसी सूचनाओं तथा तथ्यों को सामने लाते है जो सार्वजनिक तौर पर पहले से उपलब्ध नहीं थी इन डेप्थ रिरर्पोट में सार्वजनिक तौर पर उपलब्ध तथ्यों, सूचनाओं, आंकड़ो की गहरी छानबीन की जाती है।

(15) विशेष रिपोर्ट को किस शैली में लिखा जाता है? बताइए ।

उत्तर– आमतौर पर विशेष रिपोर्ट को उलटा, पिरामिड शैली में लिखा जाता है। लेकिन कई बार इन रिपोर्टों को फीचर शैली में भी लिखा जाता है। ऐसी रिपोर्ट सामान्य समाचारों की तुलना में बड़ी और विस्तृत होती है अतः रूचिकर बनाए रखने हेतु रिपोर्ट उलटा पिरामिड शैली और फीचर शैली दोनों को मिलाकर भी लिखी जाती है।

(16) विशेष रिपोर्ट की भाषा किस तरह की होनी चाहिए?

उत्तर– विशेष रिपोर्ट की भाषा सरल, सहज और आम बोलचाल की होनी चाहिए। रिपोर्ट बहुत विस्तृत और बड़ी हो तो उसे श्रृंखलाबद्ध करके कई दिनों तक किस्तों में छापा जाता है।

शेखावाटी मिशन–100

(17) संपादकीय लेखन से आप क्या समझते हैं?.

उत्तर– संपादकीय लेखन सम्पादक और उनके सहयोगियों द्वारा लिखा जाता है। संपादकीय को अखबार की अपनी आवाज माना जाता है। संपादकीय के जरिये अखबार किसी घटना, मुद्दे प्रकट करते है। या समस्या के प्रति अपनी राय प्रकट करते है।

(18) सम्पादकीय लिखने का दायित्व किस पर होता है?

उत्तर – सम्पादकीय लिखने का दायित्व जिस अखबार में सम्पादकीय छपता है उस अखबार में काम करने वाले सम्पादक और उनके सहयोगियों पर होता है। आमतौर पर अखबार में सम्पादक ही सम्पादकीय लिखते हैं, बाहर का लेखक सम्पादकीय नहीं लिख सकता।

(19) लेख को परिभाषित कीजिए।

उत्तर– लेख में किसी भी विषय को रोचक तरीके से समझाया जाता है। लेख साहित्यिक और सूचनात्मक दोनों प्रकार के होते हैं। सभी अखबार सम्पादकीय पृष्ठ पर समसामयिक मुद्दों पर वरिष्ठ पत्रकारों और विशेषज्ञों के लेख प्रकाशित करते हैं। लेख में किसी भी विषय पर विस्तार से चर्चा की जाती है।

(20) स्तंभ अपने लेखकों के नाम से क्यों जाने जाते हैं?

उत्तर– स्तंभ का विषय चुनने और उसमें अपने विचार व्यक्त करने की स्तंभ लेखक को पूरीः छूट रहती है। स्तंभ में लेखकों के अपने विचार अभिव्यक्त रहते हैं। इसलिए स्तम्भ लेखन अपने लेखकों के नाम से जाने जाते हैं।

(21) साक्षात्कार से आप क्या समझतें है?

उत्तर– साक्षात्कार सामान्यतः दो या दो से अधिक व्यक्तियों द्वारा किसी विशेष उद्देश्य से आमने–सामने की गयी बातचीत को साक्षात्कार कहा जाता है। उसमें कुछ सवाल–जवाब होते हैं। यह एक प्रकार की मौखिक प्रश्नावली है जिसमें किसी व्यक्ति के विचारों, प्रतिक्रियाओं को जाना जाता है

(22) कोई भी समाचार पत्र या पत्रिका कब संपूर्ण लगती है?.

उत्तर– जब उसमें विभिन्न विषयों और क्षेत्रों के बारे में घटने वाली घटनाओं, समस्याओं और मुद्दों के बारे में नियमित जानकारी हो।

शेखावाटी मिशन–100

(23) विशेषीकृत रिपोर्टिंग के लिए दो आवश्यक बाते लिखो।

उत्तर– (i) सम्बन्धित विषय की गहरी जानकारी होना।

(ii) रिपोर्टिंग से सम्बन्धित भाषा और शैली का पूरा अधिकार, होना चाहिए।

(24) संवाददाताओं के बीच काम का विभाजन कैसे किया जाता है?

उत्तर– उत्तर संवाददाताओं के बीच काम का विभाजन आमतौर पर उनकी दिलचस्पी, और, ज्ञान को ध्यान में रखते हुए किया जाता है।

(25) बीट रिपोर्टिंग और विशेषीकृत रिपोर्टिंग में क्या अन्तर है?

उत्तर– इन दोनों में सबसे महत्त्वपूर्ण अन्तर यह है कि, बीट रिपोर्टर को आमतौर पर अपनी बीट से जुडी सामान्य खबरें ही लिखनी होती है लेकिन विशेषीकृत रिपोर्टिंग का तात्पर्य है कि सामान्य खबरों से आगे बढ़कर उस क्षेत्र या विषय से जुडी घटनाओं, समस्याओं का बारीकी से विश्लेषण करें और पाठकों के लिए उसका अर्थ स्पष्ट करने की कोशिश करें।

(26) किसी भी क्षेत्र में विशेष लेखन करने के लिए आवश्यक शर्त क्या है?

उत्तर – किसी भी क्षेत्र में विशेष लेखन के लिए जरूरी है कि उस क्षेत्र के बारे में आपको ज्यादा से ज्यादा पता हो, उसकी ताजा से ताजा सूचना आपके पास हो, आप उसके बारे में लगातार पढ़ते हो, जानकारियां और तथ्य इकट्ठे करते हों और उस क्षेत्र से जुड़े लोगों से लगातार मिलते रहते हो।

(27) विशेष लेखन की भाषा और शैली सामान्य लेखन से अलग है कैसे?

उत्तर– विशेष लेखन और सामान्य लेखन की भाषा और शैली में बुनियादी फर्क यह है कि हर क्षेत्र विशेष की अपनी विशेष तकनीकी शब्दावली होती है जो उस विषय पर लिखते हुए आपके लेखन में आती है।

(28) विशेष लेखन की शैली कैसी होती है?

उत्तर– विशेष लेखन की कोई निश्चित शैली नहीं होती । लेकिन अगर आप अपने बीट से जुड़ा कोई समाचार लिख रहे हैं तो उसकी शैली उलटा पिरामिड शैली ही होगी। लेकिन अगर आप समाचार फीचर लिख रहे है तो उसकी शैली कथात्मक हो सकती है।

(29) आर्थिक मामलों की पत्रकारिता सामान्य पत्रकारिता की तुलना में जटिल होती है कैसे?

उत्तर– आर्थिक मामलों की पत्रकारिता सामान्य पत्रकारिता की तुलना में काफी जटिल होती है ऐसा इसलिए क्योंकि आम लोगों को इसकी शब्दावलियों के बारे में था उनके मतलब के बारे में ठीक से पत्ता नहीं होता है।

शेखावाटी मिशन–100

(30) पत्र–पत्रिकाओं में खेलों के बारे में लिखने के लिए ध्यान रखने योग्य बातें क्या है?

उत्तर– खेलों के बारे में लिखने वालों के लिए जरूरी है कि वे खेल की तकनीक उसके नियमों, उसकी बारीकियों और उससे जुड़ी तमाम बातों से भलीभांति परिचित हो।

(31) खेलों में विशेषज्ञता हासिल कैसे की जा सकती है?

उत्तर–खेलों में विशेषज्ञता हासिल करने के लिए उसके बारे में जानकारी का स्तर ऊँचा होना चाहिए, उसको इस खेल में बनने वाले रिकॉर्ड्स के बारे में पता होना चाहिए। तब जाकर खेलों में विशेषज्ञता हासिल की जाती है।

(32) एक अच्छी कविता की क्या विशेषता है?

उत्तर– एक अच्छी कविता हमें उसे बार–बार पढे जाने के लिए आमंत्रित करती है। जब तक आप उससे दूर है, रहस्यमयी लगेगी, करीब जाते ही उसे बार–बार और देर तक सुनने को जी चाहेगा।

(33) कविता में चित्र भाषा का क्या महत्त्व है?

उत्तर– कविता के लिए चित्र भाषा की आवश्यकता पर बल दिया है क्योंकि चित्रों या बिम्बों का प्रभाव मन पर अधिक पड़ता है। दृश्य बिम्ब अधिक बोद्यगम्य होते हैं क्योंकि देखी हुई हर चीज हमें ज्यादा प्रभावित करती है।

(34) नाटक में सम्पूर्णता कैसे आती है?

उत्तर– साहित्य की अन्य विधाएँ अपने लिखित रूप में ही एक निश्चित और अन्तिम रूप को प्राप्त कर लेती है, वहीं एक नाटक अपने लिखित रूप में सिर्फ एक आयामी ही होता है जब उस नाटक का मंचन हमारे सामने आता है तब जाकर उसमें सम्पूर्णता आती है।

(35) नाटक को दृश्य काव्य की संज्ञा क्यों दी गई है?

उत्तर– नाटक को दृश्य काव्य इसलिए कहा गया है क्योंकि नाटक की अपनी निजी और विशेष प्रकृति है और वह है उसका दृश्य रूप। जहाँ साहित्य की अन्य विधाएँ लिखने के पश्चात् पूर्ण हो जाती है वहीं नाटक अपने लिखित रूप के पश्चात् जब नाटक का मंचन किया जाता है तब वह पूर्ण होता है। अतः नाटक देखने के पश्चात् पूर्ण होता है।

(36) नाटक का दूसरा महत्त्वपूर्ण अंग कौनसा है? समझाइए ।

उत्तर– नाटक का दूसरा महत्त्वपूर्ण अंग है– शब्द। वैसे तो सभी विधाओं के लिए आवश्यक है परन्तु नाटक में शब्द का विशेष महत्व है। नाटक की दुनिया में शब्द अपना अलग और विशेष रूप ग्रहण करता है, बोले जाने वाले शब्द को नाटक का शरीर कहा गया है। एक अच्छे नाटककार को कम से कम शब्दों में अपनी भावना और विचारों को व्यक्त करने की कला आनी चाहिए।

शेखावाटी मिशन–100

(37) नाटक में सबटेक्स्ट क्या है ?

उत्तर– एक सफल नाटक को कमजोर नाटक से जो अलग करती है वह है– संवादों का अपने आप में वर्णित था चित्रित न होकर क्रियात्मक होना, दृश्यात्मक होना और लिखे तथा बोले जाने वाले संवादों से भी ज्यादा उन संवादों के पीछे निहित अनलिखे एवं अनकहे संवाद की ओर ले जाना, जिन्हें अंग्रेजी भाषा में सबटेक्स्ट कहा गया है।

(38) नाटक की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

उत्तर – (i) नाटक दूसरी विधाओं से बिल्कुल अलग है। नाटक को दृश्य काव्य भी कहा गया है नाटक को पढने सुनने के साथ देखा भी जाता है।

(ii) नाटक की रचना किसी भी काल की हो परन्तु नाटक सदैव वर्तमान काल में ही घटित होता है।

(iii) शब्द, समय, कथ्य व संवाद आदि इसके मुख्य तत्त्व है।

(39) कहानी में कथानक की भूमिका को समझाइए।

उत्तर– कहानी का केन्द्रीय बिन्दु कथानक होता है कथानक कहानी का वह संक्षिप्त रूप होता है जिसमें प्रारम्भ से लेकर अंत तक सभी घटनाओं और पात्रों का उल्लेख किया जाता है। कथानक कहानी का प्रारम्भिक नक्शा होता है। कहानी का कथानक कहानीकार के मन में किसी घटना, जानकारी, अनुभव या कल्पना के कारण आता है।

(40) कहानी चरम उत्कर्ष अर्थात क्लाइमेक्स की ओर किस प्रकार बढ़ती है?

उत्तर– कथानक के अनुसार कहानी चरम उत्कर्ष अर्थात क्लाइमेक्स की ओर बढती है चरम उत्कर्ष का चित्रण बहुत ध्यानपूर्वक करना चाहिए क्योंकि भावों या पात्रो के अतिरिक्त चरम उत्कर्ष के प्रभाव को कम कर सकती है। कहानी कार की प्रतिबद्धता या उद्देश्य की पूर्ति के प्रति अतिरिक्त आग्रह कहानी को भाषण में बदल सकते हैं।

(41) लेखक कहानी का उद्देश्य किस प्रकार निर्धारित करता है?

उत्तर– लेखक को एक समस्या/जानकारी का सूत्र मिलने पर लेखक का ध्यान उसके पात्र, परिवेश, व्यवस्थाओं पर केन्द्रित हो जाता है। तत्पश्चात् वह सोचता है कि कहानी उसे समस्या ग्रस्त पर लिखनी है। परिवेश पर लिखनी है या व्यवस्था पर लिखनी है।

(42) कथानक में द्वन्द्व क्या महत्व है??

उत्तर – कथानक के बुनियादी तत्वों में द्वन्द्व का महत्त्व बहुत अधिक है। द्वन्द्व ही कथानक को आगे बढाता है। कहानी

शेखावाटी मिशन–100

में द्वन्द्व दो विरोधी तत्त्वों का टकराव किसी की खोज में आने वाली बाधाओं, अन्तर्द्वन्द्व आदि के कारण पैदा होता है। कहानीकार अपने कथानक में द्वन्द्व के बिन्दुओं को जितना स्पष्ट रखेगा, कहानी भी उतनी ही सफलता से आगे बढ़ेगी।

(43) नये और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन कैसे करना चाहिए।

उत्तर– नये और अप्रत्याशित विषय लिखने वाले के लिए खुले मैदान की तरह होते हैं उन पर लेखक अपनी बुद्धि, तर्क या समझ से लिखे। साथ ही यह भी ध्यान रखा जाए कि ऐसे लेख की जितनी आकर्षक शुरुआत हो, निर्वाह भी वैसा ही हो। सुसम्बद्धता को ऐसे लेखन में बनाए रखना होता है।

छंद

प्रः1 गीतिका और हरिगीतिका छंद में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– गीतिका छंद की प्रत्येक पंक्ति में में 26 मात्राएँ तथा 14–12 मात्राओं पर यति होती है। अन्त में लघु–गुरु आता है। हरिगीतिका छंद की प्रत्येक पंक्ति में 28 मात्राएँ होती है। यति 16–12 मात्राओं पर होती है।

प्रः2 द्रुतविलम्बित छंद की परिभाषा लिखिए।

उत्तर– द्रुतविलम्बित छंद में चार चरण होते हैं। प्रत्येक में 12–12 वर्ण होते है प्रत्येक चरण में क्रमशः नगण, भगण, भगण और रगण आते है।

प्रः3 यति किसे कहते हैं?

उत्तर– छन्द का वाचन करते समय प्रत्येक चरण के अन्त में जो अल्प विराम आता है उसे यति कहते हैं।

प्रः4 छंद में गति से क्या अभिप्राय है?

उत्तर– छंद को प्रभावपूर्ण ढंग से पढ़ने पर जो लय उत्पन्न होती है उसे गति कहते हैं।

अलंकार

प्रः1 व्यतिरेक अलंकार के लक्षण व उदाहरण लिखिए–

उत्तर–जहाँ कारण बताते हुए उपमेय की श्रेष्ठता उपमान से बताई गई हो वहां व्यतिरेक अलंकार होता है। अर्थात् जहाँ गुणाधिक्य के कारण उपमान की तुलना में उपमेय का उत्कर्ष वर्णित होता है।

उदाहरण–का सरवरि तेहिं दंड़ मयंकू / चांद कलंकी वह निकलंकू।।

मुख की समानता चन्द्रमा से कैसे दूं ? चन्द्रमा में तो कलंक है जबकि मुख निष्कलंक है।

अन्य उदाहरण– साधू ऊंचे शैल सम, किन्तु प्रकृति सुकुमार।

प्रः2 विभावना अलंकार का संगतिपूर्वक लक्षण उदाहरण लिखिए

उत्तर–जहां कारण के अभाव में भी कार्य हो रहा हो वहां विभावना अलंकार होता है।

शेखावाटी मिशन–100

उदाहरण– बिनु पग चलै सुनै बिनु काना ।।

वह (ईश्वर) बिना पैरों के चलता है और बिना कानों के सुनता है

उदाहरण– निन्दक नियरे राखिये आंगन कुटी छवाय।

बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करें सुभाय।।

प्र:3 दृष्टांत अलंकार को उदाहरण सहित समझाइए।

उत्तर–जब दो कथनों में बिम्ब– प्रतिबिम्ब का भाव हो अर्थात पहले एक बात कहकर फिर उससे मिलती–जुलती दूसरी बात कही जाती है वहाँ दृष्टांत अलंकार होता है। जहां उपमेय, उपमान और साधारण धर्म का बिम्ब – प्रतिबिम्ब भाव होता है वहां दृष्टांत अलंकार होता है।

उदाहरण– पापी मनुज भी आज मुख से, राम नाम निकालते,

देखो भयंकर भेड़िये भी आज आंसू डालते।

पापी लोगों की दुष्ट प्रवृत्ति को भेड़िये के दृष्टांत द्वारा स्पष्ट किया गया है।

करत करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान।

रसरी आवत जात ते, सिल पर परत निसान।।

प्र:4 समासोक्ति अलंकार के लक्षण बताते हुए उदाहरण दिजिए–

उत्तर–जहां संक्षिप्त उक्ति में कुछ ऐसे विशेषणों का प्रयोग किया जाता है कि प्रस्तुत के वर्णन में अप्रस्तुत का भी ज्ञान हो, वहाँ पर समासोक्ति अलंकार होता है।

उदाहरण– सिन्धु–सेज पर धरा–वधू अब, तनिक संकुचित बैठी सी।

प्रलय निशा की हलचल स्मृति में, मान किए सी, ऐंठी सी।।

प्र:5 प्रतीप अलंकार का लक्षण सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–प्रतीप का आशय है उलटा या विपरीत अर्थात उपमेय के सम्मुख उपमान का तिरस्कार किया जाता है वहां प्रतीप अलंकार होता है।

उदाहरण– सीय बदन सम हिमकर नाहीं

चन्द्रमा सीताजी के मुख की उपमा के योग्य नहीं है।

<u>काव्य की शोभा बढ़ाने वाले तत्व अलंकार कहलाते है</u>

काव्य गुण

रस को काव्य की आत्मा माना जाता है

रस के उत्कर्ष में सहायक तत्वों को काव्य गुण कहा जाता है।

आचार्य भरत मुनि व आचार्य दण्डी ने काव्य गुणों की संख्या दस मानी है सामान्यतः गुणों की संख्या तीन (3) मानी जाती है। (i) ओज गुण (ii) माधुर्य गुण (iii) प्रसाद गुण

शेखावाटी मिशन–100

(i) ओज गुण– ओज शब्द का अर्थ हैः– तेज, प्रकाश, दीप्ती जो रचना सुनने वाले के मन में उत्साह, वीरता, आवेश आदि जागृत करने की क्षमता रखती है, उसे ओज गुण कहते है।

विशेषताएँः–

(i) इससे चित्त में दिप्ती व आवेग उत्पन्न होता है।

(ii) इसमें द्वित्व वर्गों, संयुक्त वर्णो रेफ, परुष वर्णों का प्रयोग होता है।

(iii) लम्बे समासों व मूर्धन्य ध्वनियों का प्रयोग किया जाता है।

(iv) गौड़ी रीति

(v) वीर रस, रोद्र रस, वीभत्स रस

(ii) माधुर्य गुण– माधुर्य शब्द का अर्थ है– शहद जैसा मीठा अन्तः करण को आनंद, उल्लास से द्रवित करने वाली कोमल मधुर वर्णो से युक्त रचना में माधुर्य गुण होता है।

विशेषताएँ–

(i) अनुस्वार वर्णो वाला/अनुनासिक वर्णो की अधिकता

(ii) कोमल वर्णों से युक्त/कान्त पदावली युक्त

(iii) ट वर्ग से रहित

(iv). अल्प समास या समास का अभाव

(v) श्रृंगार, शांत और करुण रस

(vi) वैदर्भी रीति

(iii) प्रसाद गुण– प्रसाद का शाब्दिक अर्थ है – प्रसन्नता जिस रचना में सुबोधता, स्वच्छता हो अर्थात् अर्थ सुनते ही समझ में आ जाए ऐसी रचना प्रसाद गुण से युक्त मानी जाती है।

विशेषताएँः–

(i) अर्थ की स्पष्टता व सुबोधता

(ii) सरल, सहज व भाव व्यंजक शब्दों का प्रयोग

(iii) शब्दकोषिय अर्थ

(iv) सभी रसों में विद्यमान

(v) पांचाली रीति

काव्य दोष

रस का अपकर्ष करने वाले तत्त्व काव्य दोष कहलाते हैं। काव्य दोष तीन (3) प्रकार के होते हैंः–

(i) शब्द दोष (ii) अर्थ दोष (iii) रस दोष

प्रमुख काव्य दोषः–

(i) श्रुति कटुत्व दोषः– जो शब्द सुनने में अप्रिय लगे तथा कठोर प्रतीत हो उनके कारण काव्य में श्रुति कटुत्व दोष

शेखावाटी मिशन–100

आता है।

जब काव्य में कानों को कटोर कर्कश लगने वाले वर्णों, परुष कठोर वर्णों का प्रयोग हो वहां श्रुति कटुत्व दोष होता है।

<u>**उदाहरण–**</u> भर्त्सना से भीत हो वह बाल तब चुप हो गया।

यहां भर्त्सना शब्द में श्रुति कटुत्व दोष है।

(ii) **च्युत संस्कृति दोषः–**जब कोई शब्द व्याकरण के नियमों के विरुद्ध प्रयुक्त होता है तब भाषा के संस्कार (व्याकरण) के गिर जाने के कारण वहाँ च्युत संस्कृति दोष होता है।

जैसे– क्षण भर रहा उजाला में उजाला के स्थान पर उजाले कर देने से दोष का परिहार हो जाता है।

(iii) अश्लीलत्व दोषः– जहाँ काव्य में अश्लील शब्दों का प्रयोग हो वहा अश्लीलत्व दोष होता है।

उदाहरण– लगे थूक कर चाटने अभी – अभी श्रीमान !

थूक कर चाटना अभद्र प्रतीत होता है।

(iv) ग्राम्यत्व दोषः– साहित्यिक रचना में बोलचाल के ग्रामीण शब्दों का प्रयोग होने पर ग्राम्यत्व दोष माना जाता है।

उदाहरण– मूंड पै मुकुट धरे सोहत गोपाल है।

यहां सिर के लिए "मूंड" शब्द का प्रयोग हुआ है जो ग्राम्यत्व दोष से युक्त है।

(v) अप्रतीत्व दोषः– लोक व्यवहार में न प्रयुक्त होने वाले शास्त्रीय शब्दों का काव्य में प्रयोग होने पर अप्रतीतत्व दोष होता है।

उदाहरण–विषमय यह गोदावरी अमृतन को फल देत।

यहां विष शब्द का प्रयोग जल के लिए होता है जो सामान्यतः लोक व्यवहार में प्रयुक्त नहीं होता।

(vi) क्लिष्टत्व दोषः –जहां किसी शब्द का अर्थ तुरन्त समझने में कठिनाई हो वहां क्लिष्टत्व दोष होता है।

उदाहरण– हेम सुता पति वाहन प्रिय, तुम इसमें रती न फेर

यहां हेम सुता पति वाहन का अर्थ सहज ही ज्ञात नहीं होता। इसका अर्थ है– हिमालय की सुता अर्थात पार्वती के पति शिव के वाहन अर्थात् बैल।

(vii) न्यून पदत्व दोषः– जहां वाक्य रचना में किसी शब्द की कमी रह जाती है वहाँ न्यून पदत्व दोष होता है।

उदाहरण–पानी, पावक पवन प्रभु ज्यों असाधु त्यों साधु

यहां जल, अग्नि, वायु और राजा बुरे व भले के साथ समान व्यवहार करते है। किन्तु समान व्यवहार शब्द को यहां छोड़ दिया गया है।

(viii) अधिक पदत्व दोषः– जहां काव्य में अनावश्यक शब्दों का प्रयोग किया जाए, वहां अधिक पदत्व दोष होता है।

उदाहरण– पुष्प पराग में रंगकर भ्रमर गुजरता है।

पुष्प शब्द का प्रयोग व्यर्थ है क्योंकि पराग की उत्पत्ति पुष्प में. होती है अन्यत्र नहीं

(ix) अक्रमत्व दोषः– जब वाक्य में शब्द का क्रम वाक्य रचना की दृष्टि से दूषित या अनुचित हो, वहाँ अक्रमत्व दोष होता है।

शेखावाटी मिशन–100

उदाहरण– विश्व में लीला निरन्तर कर रहे है मानवी।

यहां मानवी शब्द लीला से पहले प्रयुक्त होना चाहिए।

(x) दुष्क्रमत्व दोषः– जहां शास्त्र अथवा लोक के विरुद्ध क्रम होता है वहां दुष्क्रमत्व दोष माना जाता है।

उदाहरण– चातक, मोर, चकोर सची है पावस के अनुरांगी।

यहां चातक को पावस (वर्षा ऋतु) का अनुरागी कहा जाना लोक परम्परा के विरुद्ध है क्योंकि वह चन्द्रमा का अनुरागी है।

(xi) पुनरुक्ति दोषः– जब अर्थ की पुनरुक्ति हो अर्थात जब वही बात दूसरे शब्दों द्वारा फिर कही जाए तब पुनरुक्ति दोष होता है।

उदाहरण–कोमल वचन सभी को भाते, अच्छे लगते मधुर वचन।

यहां अच्छे लगते, सभी को भाते का ही अर्थ बताता है तथा कोमल वचन व मधुर वचन भी वहीं अर्थ दर्शाते है अतः अच्छे लगते मधुर वचन से पुनरुक्त दोष हुआ है।

काव्य गुण, दोष, छंद, अलंकार

दिये गए रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

प्रः1 सवैया छंद के .... भेद माने जाते है।

उत्तर–(11)

प्रः2 गीतिका छंद में कुल .... चरण होते है तथा प्रत्येक चरण में.................मात्राएँ होती है।

उत्तर–(4, 26)

प्रः3 सवैया ....छंद है।

उत्तर–(वर्णिक)

प्रः4 द्रुतविलम्बित छंद में .... चरण होते है।

उत्तर–(4)

प्रः5 मात्रा गणना के आधार पर छंद के ....छंद कहलाता है।

उत्तर–(मात्रिक)

प्रः6 कवित्त छंद के प्रत्येक चरण में .... वर्ण होते हैं।

उत्तर–(31)

प्रः7 यति, गति, गण, मात्रा, तुक आदि छंद के .... कहलाते है।

उत्तर–(अंग)

प्रः8 तीन वर्णों के समूह को .... कहते हैं।

उत्तर–(गण)

प्रः9 छंद में लघु वर्ण का संकेत चिह्न एवं गुरू वर्ण का संकेत चिह्न .... होता है।

उत्तर–(IS)

शेखावाटी मिशन–100

प्र:10 वीर रस प्रधान रचना में .... गुण प्रमुख होता है।

उत्तर–(ओज)

प्र:11 माधुर्य गुण का प्रयोग .... और .... रसों की अभिव्यक्ति के लिए किया जाता है।

उत्तर–(श्रृंगार, करूण)

प्र:12 ओज गुण में .... वर्णों का प्रयोग होता है।

उत्तर–(परुष, संयुक्त, द्वित्व)

प्र:13 गौड़ प्रदेश के कवि .... गुण का प्रयोग किया करते थे।

उत्तर–(ओज)

प्र:14 कोमल वर्णों से युक्त रचना में .... गुण होता है।

उत्तर–(माधुर्य)

प्र:15 रस का अपकर्ष करने वाले तत्व .... कहलाते है।

उत्तर–(काव्य–दोष)

प्र:16 कारण के उपस्थित रहने पर भी जब कार्य का न होना वर्णित हो .... वहाँ अलंकार होता है।

उत्तर–(विशेषोक्ति)

प्र:17 ....विभावना अलंकार का उलटा होता है।

उत्तर–(विशेषोक्ति)

प्र:18 कारण न होने पर भी यदि कार्य संपन्न हो रहा हो तो वहाँ .... अलंकार होता है।

उत्तर– विभावना

प्र:19 कारण सहित उपमेय का उत्कर्ष जहां दिखाया जाए वहाँ .... अलंकार है

उत्तर–व्यतिरेक

प्र:20 जहाँ संक्षिप्त उक्ति के द्वारा प्रस्तुत और अप्रस्तुत का अर्थ बोध होता है वहाँ .... होता है।

उत्तर–समासोक्ति

प्र:21 सुनत जुगल कर माल उठाई।
प्रेम विवश पहिराइ न जाई।
पंक्ति में अलंकार है

उत्तर–विशेषोक्ति

प्र:22 काव्य दोष .... प्रकार के होते है

उत्तर–तीन

प्र:23 काव्य में गँवारू शब्दों के प्रयोग के कारण ....माना जाता है।

उत्तर–ग्राम्यत्व

शेखावाटी मिशन–100

प्र:24 कमलिनी कुल बल्लभ की प्रभा .... छंद का चरण है।

उत्तर–द्रुतविलंबित।

प्र:25 जहाँ अर्थ के माध्यम से काव्य में चमत्कार उत्पन होता हो वहाँ .... होता है।

उत्तर–अर्थालंकार

प्र:26 छंद के चरणों की अंतिम ध्वनि की समानता को .... कहते है।

उत्तर– तुकबंदी

प्र:27 व्यतिरेक अलंकार में उपमान की अपेक्षा ....का उत्कर्ष दिखाया गया है।

उत्तर–उपमेय

प्र:28 वर्णिक छंदों में .... की गणना की जाती है।

उत्तर–वर्णों

प्र:29 भारतीय काव्यशास्त्र में काव्य की शोभा बढ़ाने के लिए...................... को आवश्यक माना है।

उत्तर– अलंकार

प्र:30 पुष्प पराग से रंगकर भ्रमर गूंजारता है पंक्ति में ....दोष है।

उत्तर– अधिक पदत्त्व दोष

प्र:31 लोक व्यवहार में प्रयुक्त न होने वाले शास्त्रीय शब्दों का काव्य में प्रयोग करने पर .... दोष माना जाता है

उत्तर–अप्रतीत्व दोष

अपठित पद्यांश

1. धर्मराज! यह भूमि किसी की, नही क्रीत है दासी।
है जन्मना समान परस्पर, इसके सभी निवासी ।।
है सबको अधिकार मृतिका पोषक रस–पीने का ।
विविध अभावों से अशंक होकर जग में जीने का ।।
सबको मुक्त प्रकाश चाहिए, सबको मुक्त समीर ।
बाधा रहित विकास, मुक्त आशंकाओं से जीवन ।।
उद्भिज नभ चाहते सभी नर, मुक्त गगन में
अपना चरम विकास ढूँढ़ना, किसी प्रकार भुवन में।
न्यायोचित सुख सुलभ नही, जब तक मानव– मानव को,
चैन कहीं धरती पर तब तक शांति कहाँ इस भव को ।
जब तक मनुज–मनुज का यह सुख भाग नही सम होगा
शमित न होगा कोलाहल, संघर्ष नहीं कम होगा ।।

शेखावाटी मिशन–100

बह्मा से कुछ लिखा भाग्य में मनुज नहीं लाया है।
अपना सुख उसने अपने, भुजबल से ही पाया है।
बह्म का अभिलेख पढ़ा करते निरुधमी प्राणी,
धोते वीर कुअंक भाल का, बहा भुवों का पानी ।।
भाग्यवाद आवरण पाप का, और शस्त्र शोषण का
जिससे रखता दबा एक जन, भाग दूसरे जन का ।।
एक मनुज संचित करता है, अर्थ पाप के बल से
और भोगता उसे दूसरा, भाग्यफल के छल से ।।

प्र:1 पद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए ।

उत्तर– कर्मशीलता ।

प्र:2 पद्यांश में किसको संबोधित किया गया है।

उत्तर– धर्मराज को संबोधित किया गया है।

प्र:3 पोषक रस पीने का अधिकारी कौन है?

उत्तर– सभी मनुष्य धरती का पोषक रस पीने के अधिकारी है।

प्र:4 कोलाहल, संघर्ष कब कम होग?

उत्तर– मनुष्य सुखभाग समान होगे ।

प्र:5 पद्यांश में कौनसे रस की व्यंजना हुई है।

उत्तर– वीर रस की

प्र:6 पाप का आवरण किसको कहा गया है?

उत्तर– भाग्यवाद को पाप का आवरण कहा गया है।

शेखावाटी मिशन–100

अपठित गद्यांश

2. जिंदगी के असली मजे उनके लिए नहीं है, जो फूलों की छाँव के नीचे खेलते और सोते हैं बल्कि फूलों की छाँह के नीचे अगर जीवन का कोई स्वाद छिपा है, तो वह भी उन्हीं के लिए है जो दूर रेगिस्तान से आ रहे है। जिनका कंठ सूखा हुआ, ओंठ फटे हुए और सारा बदन पसीने से तर है। पानी का अमृत वाला तत्त्व है. उसे वह जानता है जो धूप में सूख चुका है, वह नही जो रेगिस्तान में कभी पड़ा ही नहीं है।

सुख देने वाली चीजे पहले भी थीं और अब भी है, फर्क यह है कि जो सुखो का मूल्य पहले चुकाते हैं। और उनके मजे बाद में लेते है, उन्हें स्वाद अधिक मिलता है। जिन्हें आराम आसानी से मिल जाता है, उनके लिए आराम ही मौत है। जो लोग पाँव भीगने के खौफ से पानी से बचते रहते हैं। समुद्र में डूब जाने का खतरा उन्हीं के लिए है। लहरों में तैरने का जिन्हें अभ्यास है, वे मोती लेकर बाहर आएंगे।

प्र:1 उपर्युक्त गधांश का उचित शीर्षक लिखिए।

उत्तर– जिन्दगी का असली आनंद।

प्र:2 फूलो की छाँव के नीचे सोने का क्या आशय है।

उत्तर– आरामतलब जीवन व्यतीत करने से तथा श्रम से बचने से है।

प्र:3 रेगिस्तान में यात्रा करने से क्या कष्ट होता है?

उत्तर– कंठ सूख जाता है, ओठ फट जाते है और पसीने से तर हो जाते हैं।

प्र:4 जिंदगी का असली मजा कौन उठा सकता है।

उत्तर– कठोर परिश्रम करने वाले तथा कठिनाइयों से जूझने वाले ।

प्र.5 पानी में स्थित अमृत वाले तत्व को कौन पहचानता है ?

उत्तर– जो दूर रेगिस्तान से चलकर आया हो जिनके कण्ठ सूख चुके हो।

प्र:6 सुख देने वाली चीजो से अधिक सुख किनको मिलता है ?

उत्तर– जो पहले सुखो की कीमत चुकाते है और बाद में मजे लेते हैं।

निम्नलिखित नये और अप्रत्याशित विषयों में से किसी एक विषय पर 300 शब्दों में लेख लिखिए।

1. जातिवाद का जहर
2. कृत्रिम बुद्धिमता (AI)
3. मोबाईल वरदान या अभिशाप
4. इन्टरनेट और हम
5. योग भगाए रोग

शेखावाटी मिशन–100